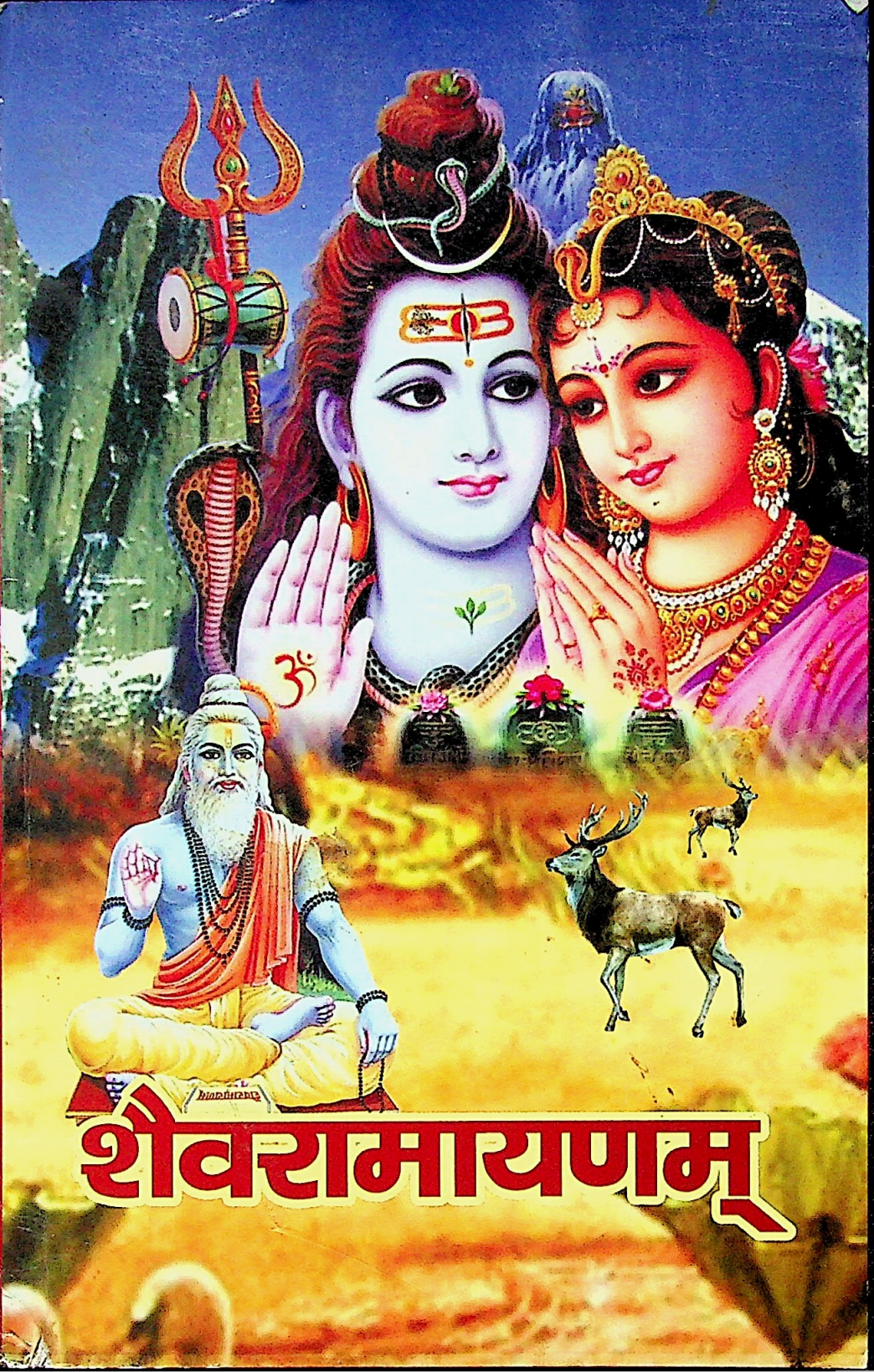

शैवरामायणम्

प्रकाशक :

शिव संस्कृत संस्थान

(प्राचीन भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के प्रकाशक तथा वितरक)

कमला नगर (पाण्डेयपुर), वाराणसी-२२१००७

सम्पर्क सूत्र : 9450540135

अन्य प्राप्ति स्थान :

विश्वभारती संस्कृत संस्थान

(आवास विकास कॉलोनी के पास)

दौलतपुररोड (पाण्डेयपुर), वाराणसी-२२१००२

सम्पर्क सूत्र : 9450557685

Email : vbss591@gmail.com

ISBN 978-93-82354-05-5

© लेखक

प्रथम संस्करण : २०१४

मूल्य : १५०/-

अक्षर संयोजन :

राज ग्राफ़िक्स, नाटी इमली, वाराणसी मोबाइल : **9935685428**

ॐ मां क्रीं

SHAIVARAMAYANAM

With

Malini Hindi Commentery

Translated by :
Dr. Ram Bahadur (Shukla)
Reader
Deptt. of Sanskrit
Jammu University, Jammu
Jammutawi-180006

SIVA SANSKRIT SANSTHAN, VARANASI

Publisher :
SIVA SANSKRIT SANSTHAN
(Oriental Publishers & Distributors)
Kamala Nagar, Pandeypur, Varanasi

Contact No. : 9450540135

Also Can be Had of
VISWABHARATI SANSKRIT SANSTHAN
(Near Aawas Vikas Colony)
Daulatpur Road (Pandeypur), Varanasi-221002
Contact No. : 9450557685
Email : vbss591@gamail.com

ISBN 978-93-82354-05-5

© WRITER

First Edn. 2014

Price : 150.00

Photo Composing :
Raj Graphics, Nati Imli, Varanasi
Mobile : 9935685428

समर्पण

ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के प्रख्यात विद्वान्
प्रश्नकुण्डली के मर्मज्ञ तथा दैवज्ञ
दान, दया, परोपकार की प्रतिमूर्ति
जिनके असीम स्नेह की छाँव एवं
शुभाशीः का कवच
मुझे अहर्निश उद्योगी बनाये रखता है
ऐसे स्वर्गपदारूढ़ (21 जनू, 2014)
सम्माननीय एवं पितृतुल्य स्नेहदाता

पितृश्वसुर पं. कृष्णकान्त मिश्र

(**लल्लू पण्डित जी**, दारागंज, इलाहाबाद)
के चरणों में समर्पित है
यह ग्रन्थ पुष्प ।

विषयानुक्रमणिका

- नान्दीवाक् I-II
- शुभाशंसा i-ii
- भूमिका i-xiv
- शब्द संकेत सूची क-ख
- प्रथमोऽध्यायः १-५
- द्वितीयोऽध्यायः ६-१०
- तृतीयोऽध्यायः ११-१५
- चतुर्थोऽध्यायः १६-१९
- पञ्चमोऽध्यायः २०-२३
- षष्ठोऽध्यायः २४-२७
- सप्तमोऽध्यायः २८-३२
- अष्टमोऽध्यायः ३३-३६
- नवमोऽध्यायः ३७-४०
- दशमोऽध्यायः ४१-४४
- एकादशोऽध्यायः ४५-४८
- द्वादशोऽध्यायः ४९-५४
- परिशिष्ट-विवरण ५५-५६

(क) शैवरामायण पर वाल्मीकि रामायण का प्रभाव विवेचन ५७-६०

(ख) शैवरामायण तथा अद्भुत रामायण में साम्य-वैषम्य विवरण ६१-६१

(ग) शैवरामायण का वैशिष्ट्य निरूपण ६१-६४

(घ) शैवरामायण की प्राचीनता का निर्धारण ६४-६६

(ङ) शैवरामायण में प्राप्त रसों एवं रीतियों की मीमांसा ६६-७४

(च) शैवरामायण में उपलब्ध अलङ्कारों का निरूपण ७४-७५

(छ) शैवरामायण में अन्वित छन्दों का अनुशीलन ७५-७९

(ज) शैवरामायण के पात्रों का ऐतिहासिक विवरण ७९-८०

(झ) शैवरामायण श्लोकानुक्रमणिका ८१-८५

नान्दीवाक्

"शैवरामायण" के नाम से ही संसूचित होता है कि भगवान् शिव द्वारा प्रोक्त रामकथा इस महाकाव्य में संगुम्फित होगा। वैसे तो राम सम्बन्धी आख्यान ऋग्वेद के दशम मण्डल में भी मिलते हैं, जो दाशरथी राम ही थे। स्वयं वाल्मीकि मुनि ने रामकथा को अपने पूर्ववर्ती मुनियों द्वारा कही गयी कथा स्वीकार की है जैसा कि वह रामायण के बालकाण्ड में लिखते भी हैं—

श्रृणुध्वमृषयः सर्वे यदिष्टं वो वदाम्यहम्।
गीतं सनत्कुमाराय नारदेन महात्मना।। २/१८
रामायणं महाकाव्यं सर्ववेदेषु सम्मतम्।
सर्वपापप्रशमनं दुष्टग्रहनिवारणम्।। २/१९
सनत्कुमाराय पृच्छते भक्तितः पुरा।
रामायणमादिकाव्यं सर्ववेदार्थसम्मतम्।। ५/६१

वाल्मीकि से पूर्ववर्ती रामकथा गाथा के रूप में या आख्यान तथा उपाख्यान के रूप में भले ही प्रसिद्ध रही हो, लेकिन उसके लिखित रूप के दर्शन हमें महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण में ही प्राप्त मिलते हैं। रामायण आदि काव्य है एवं इसकी उपजीव्यता भी सार्वजनीन है, परन्तु प्रश्न यह है कि रामकथा शिव-पार्वती संवाद रूप में जो प्राप्त है, उसका रहस्य क्या है, स्वयं सन्तशिरोमणि तुलसीदास भी रामचरित-मानस में लिखते हैं—

रामकथा गिरिजा मैं बरनी। कलिमल समनि मनोमल हरनी।।
संसृति रोग सजीवन मूरी। रामकथा गावहिं श्रुति सूरी।।

—(उत्तरकाण्ड दोहा १२८ के बाद की चौपाई)

इससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि भगवान् शिव के लिए जहाँ भगवान् श्रीराम पूज्य एवं आदरणीय हैं, तो वहीं भगवान् राम के लिए भगवान् शिव पूज्य एवं वरेण्य तथा उपास्य हैं। संभवतः इसीलिए जहाँ रावणवध के पूर्व मर्यादापुरुषोत्तम राम ने (आधुनिक) रामेश्वरम् में शिवलिङ्ग स्थापित कर रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए शिव से अमोघ आशीर्वाद की याचना की थी, जिसमें ब्राह्मणवेष में स्वयं रावण शिवभक्त ब्राह्मण के रूप में उनका स्तवन एवं अर्चना की थी, तो वहीं भगवान् शिव ने जब भी अवसर मिला राम का स्तवन एवं सङ्कीर्तन किया था।

शैवरामायण उसी रामकथा को संकीर्तित करने वाला एक महाकाव्य है, जिसे ग्रन्थकार ने रामविजयकाव्य भी माना है, जिसकी पुष्टि शैवरामायण के ग्रन्थान्त श्लोक से भी होती है। यथा—

श्रीरामविजयं नाम पवित्रं पापनाशनम्।
रामस्य चरितं पुण्यं सहस्रग्रीवमर्दनम्।। १२/३१

द्वादश अध्यायों में संवलित "शैवरामायण" के रचयिता एवं इसके मूलस्रोतों के बारे में केवल अनुमान लगाया जा सकता है; क्योंकि ग्रन्थकार ने इन विविध विषयों में मौन धारण किया हुआ है। ग्रन्थ में प्राप्त पात्रों की अवस्थिति के अनुसार इसे अद्भुत रामायण के सत्रहवें सर्ग से लेकर सत्ताइसवें सर्ग में प्राप्त रामसहस्रकण्ठकथा का एवं विलङ्कारामायण के पूर्वखण्ड में प्राप्त रामसहस्रकण्ठ कथा का अंश माना जा सकता है। विलङ्कारामायण की रचना सिद्धेश्वरदास ने अठारहवीं शताब्दी में की थी, परन्तु इसमें सीता को सहस्र-स्कन्ध का वध करते हुए दिखाया गया है, अतएव पात्रों के अतिरिक्त इसकी कथावस्तु शैवरामायण से सर्वथा भिन्न है। हाँ, अद्भुतरामायण के प्रसङ्ग एवं पात्र शैवरामायण से मेल खाते हैं; इसीलिए शैवरामायण को अद्भुत रामायण का उपजीव्य काव्य माना जाना चाहिए। रामकथा पर लोकविश्रुत कार्य करने वाले डॉ० फादरकामिल बुल्के ने अद्भुतरामायण का रचयिता सत्रहवीं शताब्दी के रामेश्वरदत्त को माना है, अतएव शैवरामायण सत्रहवीं एवं अठारहवीं शताब्दी के बाद का लिखा गया महाकाव्य सिद्ध होता है, जिसमें राम के अश्वमेध यज्ञ से लेकर लवकुश को राज्य देने तथा राम-सीता का वैकुण्ठ (स्वर्ग) में विष्णु एवं रमा (लक्ष्मी) के रूप में पुनः मिल जाने की कथा वर्णित है।

जम्मू विश्वविद्यालय क संस्कृत विभाग के उपाचार्य डॉ० रामबहादुर शुक्ल ने शैवरामायण का अनुवाद करके परिशिष्ट में उसे विशिष्ट रूप से जो विवेचन एवं विश्लेषण करने का उद्योग किया है, वह सराहनीय है। इस अनुपलब्ध एवं अप्रकाशित ग्रन्थ के प्रकाशन का श्रेय तो उन्हें जाता ही है। उनके द्वारा व्याख्यायित शैवरामायण से शोध के नये आयाम खुलेंगे एवं यह ग्रन्थ सहृदयों के बीच स्थान पा सकेगा, ऐसी मेरी आशा है। मैं ग्रन्थकार को शुभाशी देते हुए ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार दोनों का अभिनन्दन करता हूँ। सदुक्ति भी है—

यस्य व्याकुरुते वाचं यस्य मीमांसतेऽध्वरम्।
उभौ तौ पुण्यकर्माणौ पंक्तिपावनपावनः।।

(प्रो. महावीर अग्रवाल)
कुलपति
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
बी. एच. ई. एल. मोड़, हरिद्वार-दिल्ली
राष्ट्रीय राजमार्ग, पो. आ. बहादराबाद,
हरिद्वार-२४९४०२ (उत्तराखण्ड)

शुभाशंसा

महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण श्रीरामकथा से सम्पृक्त सभी विधाओं के काव्यों यथा—अध्यात्म, अद्भुत, भुसुण्डि आदि रामायण (संस्कृत एवं प्रायः सभी भाषाओं में लिखित), महाभारत का रामोपाख्यान, काव्य, महाकाव्य, चम्पूग्रन्थ, नाटक एवं स्तोत्र साहित्य परक काव्यों का प्रणयन रामायण के परवर्ती काल में किया गया, जिससे रामायण में अन्वित रामकथा की जहाँ प्रासङ्गिकता की पुष्टि होती है, वहीं रामायण एक उपजीव्य काव्य के रूप में हमारे सामने अवस्थित होता है। महर्षि वाल्मीकि ने सही ही रामायण (१/२/३६) के विषय में कहा है—

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणी कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

वास्तव में यदि देखा जाए तो भगवान श्रीराम की कथा से सम्पृक्त ग्रन्थ भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता के बोधक एवं शाश्वत मानवीय मूल्यों के पोषक ग्रन्थ है। श्रीराम के चरित्र का प्रभाव न केवल साहित्य पर, अपितु लोकगीतों, रामलीला इत्यादि लोकमञ्चनों तथा विविध चित्राङ्कन विधाओं में आज भी देखा जा सकता है। इस रूप में भगवान श्रीराम भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि तो माने ही जाते हैं, मर्यादापुरुषोत्तम शायद उन्हें इसीलिए कहा जाता है। यह भी एक परम आश्चर्य की बात है कि भगवान राम के उपास्य जहाँ भगवान शिव हैं, वहीं भगवान शिव के उपास्य राम। शिव और पार्वती संवाद के रूप में प्राप्त शैवरामायण रामकथापरक साहित्य की एक नवीन शृंखला मानी जा सकती है, जिसमें पार्वती भगवान शिव से राम द्वारा किये गये सहस्रकण्ठ के वध को या रामविजय को सुनना चाहती हैं, जो बारह अध्यायों में आज शैवरामायण के रूप में उपलब्ध है।

शैवरामायण की हिन्दी व्याख्या करने वाले, जम्मू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के वरिष्ठ उपाचार्य अनुजवत् प्रिय डॉ० रामबहादुर शुक्ल बधाई एवं शुभाशी: के पात्र हैं, जिन्होंने रामकथापरक साहित्य शृङ्खला में शैवरामायण सदृश लुप्त ग्रन्थ को प्रकाश में लाकर उसे रामकथा की शृंखला की एक कड़ी के रूप में जोड़ने का कार्य किया है। त्रिकूटपर्वत निवासिनी माँ वैष्णवी उन्हें दुर्घायु एवं निरोगी बनाये, जिससे वह भविष्य में भी प्राचीन ग्रन्थों एवं लुप्त ग्रन्थों के प्रकाशन का कार्य करते रहें।

(प्रो. कौशलेन्द्र पाण्डेय)
अध्यक्ष, साहित्यविभाग
संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसंकाय
काशीहिन्दूविश्वविद्यालय
वाराणसी-२२१००५ (उ. प्र.) भारत।

भूमिका

संस्कृत साहित्य में रामायण की परम्परा

महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण आदि काव्य के रूप में प्रथित है। रामायण में रामकथा का गान हुआ है। वास्तव में रामकथा कहानी, संवाद या गाथा के रूप में महर्षि वाल्मीकि के पहले भी जनजीवन में प्रचलित थी, परन्तु सर्वप्रथम इसका लिखित रूप में संस्कृत भाषा में महर्षि वाल्मीकि की देन माना जाता है। वैसे तो संस्कृत साहित्य का कलेवर प्रत्यन्त प्राचीन एवं समृद्ध है; क्योंकि संस्कृत वाङ्मय के अन्तर्गत चारों वेद, उनके ब्राह्मण उनके आरण्यक तथा उनके उपनिषदों के साथ-साथ पुराण, रामायण, महाभारत काव्य, महाकाव्य, नाटक एवं चम्पू साहित्य का कलेवर सम्पृक्त मिलता है जिसमें वाल्मीकि कृत रामायण एक ऐतिहासिक काव्य एवं महाकाव्य के रूप में प्राचीन-काल से समादृत होता हुआ आज भी लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। स्मरणीय है कि भगवान विष्णु को पृथ्वी में अनाचारियों का शमन करने के लिये अनेक प्रकार के अवतार लेने पड़े थे, जिसमें त्रेतायुग में राम के रूप में विष्णु का अवतार, खरदूषण, मेघनाथ, कुम्भकरण एवं रावण जैसे राक्षसों के भार से पृथ्वी को मुक्त करने के लिये हुआ था। इस रूप में रामायण के प्रमुख पात्र राम के वंश अर्थात् इक्ष्वाकु वंश[१] राम के पिता दशरथ[२] स्वयं राम[३] एवं सीता[४] के साथ-साथ जनक[५] का विवरण, वेद-ब्राह्मण आरण्यक एवं विभिन्न संहिताओं में उपलब्ध होने से रामायण की प्राचीनता स्वतः स्पष्ट हो जाती है। इसमें सन्देह नहीं है।

---

१. यस्येक्ष्वाकुरूपव्रतेरेवान् भराययेधते। —ऋग्वेद १०/६०/५
त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको यं। —अथर्ववेद १९/३९/९

२. चत्वारिंशद्दशरथस्य शोणाः सहस्रस्याग्रे श्रेणिं नयन्ति। —ऋग्वेद १/१२६/४

३. संवत्सरं न मांसभश्नीयात्। न रामानुपेयात। न मृन्मयेन पिबेत।
नास्य राम उच्छिष्टं पिबेत्। तेज एव तत्संश्यति॥ —तैत्तिरीय आरण्यक ५/८/१३

४. विस्तृत विवण हेतु द्रष्टव्य—ऋग्वेद १/१४०/४, अथर्ववेद ११/३/१२
यजुर्वेदीय संहिताओं में अश्वमेध के वर्णन के अन्तर्गत जहाँ क्षेत्र तैयार करने के लिए हल द्वारा सीताएं खींची जाती हैं। द्रष्टव्य— कोष्ठक सं० २०,३; कपिष्ठल सं० ३२, ५-६; मैत्रायणी सं० ३, ४, ४-५; तैत्तिरीय सं० ५, २, ५, ५; शतपथ ब्राह्मण १३, ८, २, ६-७

५. तैत्तिरीय ब्राह्मणी ३/१०/९

भगवान राम के जीवनवृत्त का सर्वाङ्ग विवेचन महर्षि वाल्मीकि कृत वाल्मीकि रामायण में मिलता है, जिनका समय ६०० ई. से पूर्व से लेकर २०० ई. पूर्व तक मानने में विद्वानों के बीच मतैक्य[१] देखा जाता है। महर्षि वाल्मीकि क्रौञ्च वध की घटना को देखकर अत्यन्त कारुणिक हो गये थे और सद्यः उनके मुख से निकल पड़ा था—

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।"[२]

उनकी क्रौञ्च के प्रति इस प्रकार की कारुणिक एवं दयालु अवस्था को देखकर ब्रह्मा जी ने नारद मुखेन उन्हें रामचरित लिखने को प्रेरित किया और महर्षि वाल्मीकि ने चौबीस हजार श्लोकों से युक्त ७ काण्डों यथा—बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड (लंका-काण्ड) एवं उत्तरकाण्ड से सम्पृक्त रामायण महाकाव्य की रचना की, जो मुख्यतः अनुष्टुप् छन्दों में ही रचित है। २४,००० श्लोकों से युक्त होने के कारण इसे चतुर्विंशति साहस्री संहिता भी कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण के अनन्तर रामकथा को लेकर अन्यान्य रामायणों की रचना परवर्ती काल में की गई जिनमें वाल्मीकि रामायण, योग-वाशिष्ठ रामायण, अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण, भुशुण्डि रामायण, कम्ब रामायण, भावार्थ रामायण, कृत्तिवास रामायण, मन्त्र रामायण, श्री रंगनाथ रामायण, जैन रामायण तथा शैव रामायण प्रमुख हैं जिसमें शैव रामायण अठारहवीं, उन्नीसवीं शताब्दी की रचना है, जैसा कि शैव रामायण के अन्त में उल्लिखित भी है।[३] प्राप्त रामायण ग्रन्थों का संकीर्तन अधोलिखित है—

(१) योग वाशिष्ठ रामायण—महर्षि वसिष्ठ द्वारा रचित यह रामायण आर्ष रामायण, महारामायण, वसिष्ठ रामायण, ज्ञानवासिष्ठ और केवल वासिष्ठ

---

१. स. सा. इति. पृ०-२१, राम त्रेतायुग में हुए। त्रेतायुग ईसा से ८ लाख ६७ हजार सौ वर्ष पूर्व समाप्त हुआ था। वाल्मीकि राम के समकालीन थे। अतः रामायण की रचना का समय पूर्वोक्त है। गोरेसियो १२०० ई. पू., श्लेगल-२ ई. पू., याकोबी-८०० ई. पूं. से ५०० ई. पू., कामिल बुल्के ६०० ई. पू., मैकडानल ५०० ई. पू. संशोधन २०० ई. पू., काशीप्रसाद जायसवाल ५०० ई. पू., संशोधन २०० ई. पू., विन्दरनित्स ३०० ई. पू.।
विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य सं. सा. इति —कपिलदेव द्विवेदी, पृ. २१-२२

२. वाल्मीकि रामायण, १/२/१५

३. इति श्री शैव रामायणे पार्वतीश्वरसंवादे सहस्रग्रीवरामचरिते
पुष्पिका-१२, संवत् १९५६, फाल्गुन शुद्ध चतुर्दश्यां लिखितम्॥

के नाम से भी जानी जाती है।[१] इसमें वैराग्यप्रकरण, मुमुक्षु व्यवहार प्रकरण, उत्पत्ति प्रकरण, स्थिति प्रकरण, उपशम प्रकरण तथा निर्वाण प्रकरण जैसे छः प्रकरण हैं। इसमें कुल श्लोकों की संख्या लगभग ४ हजार है परन्तु इस रामायण का समय आज भी काल के गर्त में है।

(२) अध्यात्म रामायण—रामानन्दाचार्य द्वारा रचित यह रामायण साम्प्र-दायिक रामायणों में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। अध्यात्म रामायण में सात अध्याय हैं। यह १३वीं, १४वीं शताब्दी की रचना विद्वानों द्वारा मानी जाती है,[२] जबकि यथार्थ में इसका समय ११वीं शताब्दी होना चाहिये।

(३) अद्भुत रामायण—अध्यात्म रामायण के अनन्तर रचित यह रामायण रामकथा में अनेक अद्भुत तत्वों का वर्णन करती है। इसलिये यह अद्भुत रामायण के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी कथावस्तु तीन भागों (अ) अवतार के कारण (आ) वाल्मीकीय रामचरित (इ) सहस्रमुखरावण वध में विभक्त है।[३]

(४) आनन्द रामायण—इस रामायण की रचना लगभग १५वीं शताब्दी में हुई। इसमें श्लोकों की संख्या १२ हजार २ सौ बावन है। इस रामायण में सारकाण्ड (१३ सर्ग), यात्राकाण्ड (९ सर्ग), योगकाण्ड (९ सर्ग), विलास-काण्ड (९ सर्ग), जन्मकाण्ड (९ सर्ग) विवाहकाण्ड (९ सर्ग), राज्यकाण्ड (२४ सर्ग), मनोहरकाण्ड (१८ सर्ग), पूर्णकाण्ड (९ सर्ग) इत्यादि ९ काण्ड हैं।[४]

(५) भुशुण्डि रामायण—भुशुण्डि रामायण को आदि रामायण तथा महारामायण भी कहते हैं। इस रामायण के कथानक पर पूरे भागवत की कृष्ण कथा का पर्याप्त प्रभाव दिखता है।[५]

(६) कम्ब रामायण—महर्षि कम्ब कृत कम्ब रामायण १२वीं शताब्दी की रचना मानी जाती है। कम्ब रामायण की रचना के मंगलाचरण से यह पता चलता है कि यह शैव रामायण है।[६] इसमें वाल्मीकि कृत रामायण के प्रथम छः काण्डों की समस्त कथावस्तु स्वतन्त्र रूप में वर्णित मिलती हैं।

---

१. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पं. बलदेव उपायध्याय, पृ. ४६ से उद्धृत।
विस्तृत विवरण हेतु द्रष्टव्य रामकथा, फा. कामिल बुल्के पृ. २०४।
२. संस्कृत साहित्य का इतिहास पं. बलदेव उपाध्याय, पृ. ४८।
३. रामकथा फा. कामिल बुल्के, पृ. १३४ से उद्धृत।
४. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. बलदेव उपाध्याय, पृ. सं. ४८ से उद्धृत।
५. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. बलदेव उपाध्याय, पृ. ४९ से उद्धृत।
६. रामकथा, डॉ. कामिल बुल्के, पृ. १७६ से उद्धृत।

(७) भावार्थ रामायण—भावार्थ रामायण सन्त एकनाथ द्वारा रचित है इसकी रचना १६वीं शताब्दी में हुई थी। एकनाथ की इस रामायण की कथावस्तु वाल्मीकि रामायण अध्यात्म रामायण तथा आनन्द रामायण पर आधारित है।[१]

(८) कृत्तिवास रामायण—कृत्तिवास ओझा ने बंगाली साहित्य में प्रथम एवं सर्वाधिक लोकप्रिय रामायण की रचना १५वीं शताब्दी के अन्त में पयार छन्द में की थी।[२] कृत्तिवासीय रामायण पर शैव तथा शाक्त सम्प्रदायों की गहरी छाप है।

(९) मन्त्र रामायण—१७वीं शताब्दी में महाभारत के टीकाकार नीलकण्ठ ने ऋग्वेद के मन्त्रों का संग्रह कर अपनी नई टीका में उनका रामपरक तात्पर्य प्रदर्शित किया है, जो मन्त्ररामायण कहलाती है।[३]

(१०) श्री रंगनाथ रामायण—श्री रंगनाथ रामायण अर्थात् द्विपद रामायण की रचना तेलगू साहित्य के ग्रन्थकार श्री रंगनाथ जी ने की। इसकी रचना १४वीं शताब्दी में हुई थी। द्विपदरामायण के छः काण्डों में वाल्मीकि रामायण के प्रथम छः काण्डों की कथावस्तु का वर्णन किया गया है।[४]

(११) जैन रामायण—आचार्य विमल सूरि रचित प्राकृत भाषा में निबद्ध पउमचरिय महाकाव्य वाल्मीकि के रामायण के अनुसार लिखा गया है। आचार्य रविसेन ने इसका संस्कृत अनुवाद पद्मचरित (पद्मपुराण) महाकाव्य अनुदित किया है। जो प्रत्येक जैनी के घर में रामकथा का प्रतिनिधि काव्य है। यह ११८ सर्गों या अध्याओं में उपनिबद्ध है। इसका रचना काल ५७७ ईसवी अर्थात् छठी शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है[५], परन्तु उसमें रामायण की कथावस्तु को तार-तार कर दिया गया है।

(१२) शैव रामायण—शैव रामायण १२ अध्ययों में रचित भगवान राम के जीवन चरित्र के उत्तर भाग का प्रतिपादन करने वाला १८वीं, १९वीं

---

१. रामकथा, डॉ. कामिल बुल्के, पृ. २०२ से उद्धृत।
२. रामकथा, डॉ. कामिल बुल्के, पृ. १८९ से उद्धृत।
३. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. बलदेव उपाध्याय, पृ. ५१ से उद्धृत।
४. रामकथा, डॉ. फा. कामिल बुल्के, पृ. १७८ से उद्धृत।
५. (क) विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य संस्कृत साहत्यि का इतिहास, डॉ० बलदेव उपाध्याय, पृ. २९-३१ से उद्धृत।
(ख) संस्कृत साहित्य का इतिहास श्री वाचस्पति गैरोला, पृ. २२५-२२६ से उद्धृत।
(ग) संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य जयादेव त्रिपाठी, पृ. ४७७-७८ से उद्धृत।

शताब्दी का एक मानक ग्रन्थ है, जिसमें राम के अश्वमेघ यज्ञ से लेकर लव-कुश को राज्य देने तथा राम सीता का वैकुण्ठ में विष्णु एवं रमा के रूप में पुनः मिलने की कथा वर्णित है, जिसमें अद्भुत रामायण, विलंका रामायण तथा मन्त्ररामायण का प्रभाव देखा जा सकता है।

वाल्मीकि रामायण की आदिकाव्यता एवं उपजीव्यता

"रामायणमादिकाव्यं" आर्ष वाक्य से वाल्मीकि रामायण के आदि काव्य होने की पुष्टि हो जाती है। वाल्मीकि ने रामायण में विविध नैतिक मूल्यों की चर्चा की है। यथा—पिता पुत्र वात्सल्य निरूपण, भ्रातृ प्रेम, पति-परायणता, मातृभक्ति, स्वामी सेवक सम्बन्ध, मैत्री निरूपण, ऋषि-मुनियों का सम्मान एवं पत्नीव्रत निरूपण आदि सम्पूर्ण तथ्यों ने भारतीय जन-जीवन को इतना प्रभावित किया है कि अधिकांश काव्यविदों ने गौरव प्राप्ति के लिये रामायण के किसी अंश के आधार पर विविध प्रकार के काव्यों की रचना की है, जिनमें काव्य महाकाव्य, नाटक एवं चम्पू ग्रन्थ सभी अन्वित हैं। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में भाषा विषयवस्तु एवं शैली का मणिकांचन संयोग किया था। ठीक उसी पद्धति का अनुकरण करते हुए परवर्ती रचनाकारों ने विविध विधाओं से मंडित रामायण की भी रचना कर डाली जिसमें अध्यात्म रामायण, अगस्त्य रामायण, कम्ब रामायण, शैव रामायण आदि प्रमुख रामायण हैं। रामायण की उपजीव्यता इसी से सिद्ध हो जाती है कि परवर्ती ग्रन्थकारों ने रामायण के कथानक को लेकर लगभग पंचशतक काव्यों की रचना की है एवं आज भी रामायण के आधार पर अनेकों रचनाकार महाकाव्य लिखने में लगे हुए हैं जिनमें २०वीं, २१वीं शताब्दी के महनीय विद्वान् प्रो. राजेन्द्र मिश्र ने जहाँ जानकी जीवनम् महाकाव्य लिखा है वहीं प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने राम कीर्ति महाकाव्य लिखकर रामायण की उपजीव्यता का ही पल्लवन किया है।[१] प्रारम्भ से लेकर आज तक प्राप्त रामायण के आधार पर लिखे गये ग्रन्थों को निम्नलिखित क्रम में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(१) आदिरामायण— वाल्मीकि रामायण से पूर्व अप्राप्त

(२) वाल्मीकि कृत रामायण— ६०० ई. पू.

---

१. आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र।

(३) कम्ब रामायण—	महर्षि कंब-१२वीं शताब्दी
(४) अध्यात्म रामायण—	रामानंद-११वीं शताब्दी
(५) श्री रंगनाथ रामायण—	गोनबुद्ध रेड्डी-१४वीं शताब्दी
(६) कण्णश्श रामायण—	कण्णश्श पणिक्कर-१५वीं उत्तरार्द्ध
(७) कृत्तिवास रामायण—	कृत्तिवास ओझा-१५वीं शताब्दी
(८) आदि रामायण—	सोढ़ी मेहरबान-१५वीं शताब्दी
(९) अध्यात्म रामायण—	एषुत्तच्छन-१५७५-१६५०
(१०) आनन्द रामायण—	नारद-१६वीं शताब्दी
(११) मोल्ल रामायण—	मल्ल कुम्हारिन-१६वीं शताब्दी
(१२) तोरवे रामायण—	नरहरि-१६वीं शताब्दी
(१३) जैमिनी भारत—	लक्ष्मीश-१६वीं शताब्दी
(१४) उत्कल वाल्मीकि—	बलरामदास-१६वीं शताब्दी
(१५) ठिका रामायण—	नीलाम्बरदास-१६वीं शताब्दी
(१६) रामरसामृतसिन्धु—	कान्हुदास-१६वीं शताब्दी
(१७) गोविन्द रामायण—	गुरु गोविन्द सिंह-१६वीं शताब्दी
(१८) अद्भुत रामायण—	रामेश्वर दत्त-१७वीं शताब्दी
(१९) द्विपद रामायण—	कट्ट वरदराजु-१७वीं शताब्दी
(२०) रामचरित—	राम-१७वीं शताब्दी
(२१) रामकथाप्पाट्टु—	अय्यिपिल्लैआशन-१७वीं शताब्दी
(२२) आश्चर्य रामायण—	नित्यानन्द आचार्य-१७वीं शताब्दी
(२३) अध्यात्म रामायण (पांचाली)—	द्विज भवानीनाथ-१७वीं शताब्दी
(२४) रघुनाथ-विलास—	धनंजय-१७वीं शताब्दी
(२५) बारमासी-कोइलि—	शंकरदास-१७वीं शताब्दी
(२६) संक्षेप रामायण—	मुक्तेश्वर-१७वीं शताब्दी
(२७) तत्व संग्रह रामायण—	राम ब्रह्मानन्द-१७वीं शताब्दी
(२८) मन्त्र रामायण—	नीलकंठ-१७वीं शताब्दी
(२९) रामलीला—	रामानन्द-१८वीं शताब्दी
(३०) अद्भुत रामायण—	जगतरामराय-१८वीं शताब्दी

(३१) अंगद रामायण— फकिर रामकविभूषण-१८वीं शताब्दी
(३२) विभीषणेर रायवार— रामचन्द्र-१८वीं शताब्दी
(३३) विभीषणेर खोट्टा रायबर— रामनारायण-१८वीं शताब्दी
(३४) बिलंका रामायण— सिद्धेश्वर दास-१८वीं शताब्दी
(३५) छन्द रामायण— रघुनाथदास-१८वीं शताब्दी
(३६) रामरसायन— रघुनन्दन गोस्वामी-१८३१ ई.
(३७) रामायण— जगत् मोहन राम-१८३८ ई.
(३८) रामायण खुश्तर— मुंशी जगन्नाथ खुश्तर-१८६४ ई.
(३९) कालनेमिर रायबार— काशीराम-१८वीं शताब्दी
(४०) अंगद रायबार— द्विज तुलसी-१८वीं शताब्दी
(४१) अंगद रायबार— हाराधनदासी-१८वीं शताब्दी
(४२) जैन रामकथा— अज्ञात-११वीं शताब्दी
(४३) रामायण पट्टनायककृत— १९वीं शताब्दी
(४४) रामायण मंजूम— मुंशी शंकरदयाल-१९वीं शताब्दी
(४५) रामायर बहार— बांके बिहारी लाल-१९वीं शताब्दी
(४६) रामभक्तिरसामृत— कमललोचन-१९वीं शताब्दी
(४७) शैव रामायण— १९वीं, २०वीं शताब्दी
(४८) मेघनादवध— माइकल मधुसूदन-२०वीं शताब्दी
(४९) अगस्त्य रामायण— अगस्त्य समय अनिर्णीत/अज्ञात
(५०) लोमश रामायण— लोमश समय अनिर्णीत/अज्ञात
(५१) मंजुल रामायण— सुतीक्ष्णकृत समय अनिर्णीत/अज्ञात
(५२) सौपद्म रामयण— अत्रि समय अनिर्णीत/अज्ञात
(५३) सौहार्द रामायण— शरभंग समय अनिर्णीत/अज्ञात
(५४) रामचरितमानस— गोस्वामी तुलसीदास १६वीं शताब्दी
(५५) भावार्थ रामायण— संत एकनाथ समय अनिर्णीत/अज्ञात
(५६) रामचन्द्र चरित्र पुराण— अभिनव पंप नागचन्द्र ''
(५७) रामायण— चकवस्त समय अनिर्णीत/अज्ञात
(५८) योग वासिष्ठ— वासिष्ठ समय अनिर्णीत/अज्ञात
(५९) रामायण महामाला अज्ञात समय अनिर्णीत/अज्ञात

(६०) रामायण	मणिरत्न	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(६१) सौर्व्य रामायण	लेखक अज्ञात	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(६२) चांद्र रामायण	लेखक अज्ञात	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(६३) मैन्द रामायण	लेखक अज्ञात	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(६४) सुवह्न रामायण	लेखक अज्ञात	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(६५) सुवर्चस रामायण	लेखक अज्ञात	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(६६) देव रामायण	लेखक अज्ञात	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(६७) रावण रामायण	लेखक अज्ञात	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(६८) दुरन्त रामायण	लेखक अज्ञात	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(६९) रामायण काकविन	लेखक अज्ञात	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(७०) स्वायंभुव रामायण	लेखक अज्ञात	समय अनिर्णीत/अज्ञात

रामायण पर आश्रित प्रमुख काव्य तथा महाकाव्य

(१) कालिदास	रघुवंश	४०० ई. पू. के लगभग
(२) प्रवरसेन	सेतुबन्ध	५५० से ६०० ई.
(३) भट्टि	रावणवध	५५० से ६५० ई.
(४) कुमारदास	जानकीहरण	८०० ई. के लगभग
(५) अभिनन्द	रामचरित	९वीं शताब्दी
(६) क्षेमेन्द्र	(दशावतार चरित) (रामायण मंजरी)	११वीं शताब्दी
(७) साकल्यमल्ल	उदारराघव	१४वीं शताब्दी
(८) अद्वैत कवि	रामलिंगामृत	१६०८ ई.
(९) चक्रकवि	जानकी परिणय	१७वीं शताब्दी
(१०) मोहन स्वामी	रामचरित	१७५० ई.
(११) रघुनाथ उपाध्याय	राम विजय	१९३२ ई.
(१२) अद्वैत नाम संन्यासी	राघवोल्लास	—
(१३) वामनभट्टवाणकृत	रघुनाथाभ्युदय	—
(१४) बिमलसूरि	पउमचरिय	—
(१५) रविसेन	पदमचरित	—
(१६) धनञ्जय	राघवपाण्डीय	—
(१७) माधव भट्ट	राघवपाण्डीय	—

रामायण पर आश्रित स्फुट काव्य

(१) सन्ध्याकरनन्दी	रामचरित	१२वीं शताब्दी
(२) चिदम्बर	राघवपांडवयादयीय	१२वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध
(३) गंगाधर	संकटनाशन	१८वीं शताब्दी
(४) हरिदत्त सूरि	राघवनैषधीय	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(५) विश्वनाथ	रामविलास	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(६) सोमेश्वर	रामशतक	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(७) मुग्दल भट्ट	रामार्याशतक	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(८) कृष्णेन्द्र	आर्यारामायण	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(९) सूर्यदेव	रामकृष्ण विलोम काव्य	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(१०) वेंकटध्वरी	यादवराघवीय	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(११) अज्ञात	राघवयादवीय	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(१२) कृष्णमोहन	रामलीलामृत	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(१३) वेंकटेश	चित्रबंधरामायण	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(१४) वेदान्तदेशिक	हंस संदेश	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(१५) रुद्रवाचस्पति	भ्रमरदूत	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(१६) वासुदेव	भ्रमरसंदेश	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(१७) अज्ञात	कविदूत	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(१८) वेंकटाचार्य	कोकिलसंदेश	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(१९) कृष्णचन्द्र	चन्द्रदूत	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(२०) हरिशंकर	गीताराघव	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(२१) प्रभाकर	गीताराघव	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(२२) हर्य्याचार्य	जानकीगीता	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(२३) हरिनाथ	रामविलास	समय अनिर्णीत/अज्ञात
(२४) विश्वनाथ सिंह	संगीतरघुनन्दन	समय अनिर्णीत/अज्ञात

रामायण पर आश्रित प्रमुख नाटक ग्रन्थ

(१) भवभूति	उत्तररामचरितम् महावीरचरितम्	प्रथम शताब्दी ई.
(२) अनंगहर्ष मायुराज	उत्तराघव	८वीं शताब्दी

(३) मुरारिकृत	अनर्घराघव	९०० ई.
(४) शक्तिभद्रकृत	आश्चर्यचूड़ामणि	९वीं शताब्दी
(५) राजशेखर	बालरामायण	१०वीं शताब्दी
(६) जयदेव	प्रसन्नराघव	१२-१३वीं शताब्दी
(७) हस्तिमल्ल कृत	मैथिल्यण तथा अंजनापवनंजय	१२९० ई.
(८) सोमेश्वर कृत	उल्लाघराघव	१३वीं शताब्दी
(९) सुभट्ट कृत	दूतागंद	१३वीं शताब्दी
(१०) भास्कर	उन्मत्तराघव	१४वीं शताब्दी
(११) हनुमानकृत	महानाटक	१४वीं शताब्दी
(१२) विरूपाक्ष	उन्मत्तराघव	१५वीं शताब्दी
(१३) व्यासमिश्रितदेव कृत	रामाभ्युदय	१५वीं शताब्दी
(१४) रामभद्रदीक्षत	जानकी परिणय	१७वीं शताब्दी
(१५) महादेव कृत	अद्भुत दर्पण	१७वीं शताब्दी
(१६) भासकृत	अभिषेक नाटक प्रतिमा नाटक	पंचक शताब्दी ई.पू.
(१७) दिङ्नाग	कुन्दमाला	—
(१८) कालिदास	रघुवंश	द्वितीय शताब्दी ई. पू.
(१९) वामन भट्ट वाण	रघुनाथचरित	—
(२०) राजचूड़ामणि	आनन्दराघव	—
(२१) क्षेमेन्द्र	रामायण मंजरी	ग्यारहवीं शताब्दी
(२२) भट्टि	रावणवध	—
(२३) चक्रकवि	जानकीपरिणय	—

रामायण पर आश्रित प्रमुख चम्पू ग्रंथ

(१) रामायण चम्पू	भोज	१०वीं, ११वीं शताब्दी
(२) उमोघराघव चम्पू	—	१३वीं शताब्दी
(३) रामायण चम्पू	पुनम् नंपूतिरि	१५वीं शताब्दी
(४) उत्तरचम्पू	वेंकटाभ्वरि विरचितम्	१६वीं शताब्दी

(५) उत्तररामायण	ककटि पापराजु	१८वीं शताब्दी
(६) गोपीनाथ रामायण		१८वीं शताब्दी
(७) एकोजी रामायण		१८वीं शताब्दी
(८) अच्च तेलुगू रामायण	कृमिमंच तिम्म	१८वीं शताब्दी
(९) रामायण चम्पू	अज्ञात	समय अज्ञात
(१०) चम्पू रामायण	लक्ष्मण भट्ट	समय अज्ञात
(११) उत्तररामायण चम्पू	अज्ञात	समय अज्ञात

रामायण पर आश्रित अन्य विधाओं के काव्य-ग्रन्थ

(१) पउमचरिअ	जैनकविविमलसूरि	(जैन ग्रन्थ) ६२ ई.
(२) माधवकंदली रामायण	असमिया ग्रंथ	१४वीं शताब्दी
(३) राम साहित्य बंगाली ग्रन्थ		१४वीं शताब्दी
(४) राम साहित्य	उड़िया ग्रन्थ	१४वीं शताब्दी
(५) लवकुशर युद्ध	हरिहर	१४वीं शताब्दी
(६) गीतिरामायण	दुर्गावर	१६वीं शताब्दी
(७) अनामक जातकम्	लेखक/अज्ञात	समय अनिश्चित
(८) दशरथकथानम	लेखक/अज्ञात	समय अनिश्चित
(९) अन्य बौद्ध साहित्य	लेखक/अज्ञात	समय अनिश्चित

रामायण के प्रमुख टीकाकार

वाल्मीकि रामायण सामाजिक व्यक्तियों के लिये नैतिक मानकों का मानदण्ड माना जाता है। इस महाकाव्य की प्रसिद्धि इसी से दृष्टिगोचर होती है कि इस महाकाव्य को लेकर जहां अनेक कवियों, लेखकों, नाटककारों ने अपनी-अपनी विधाओं में ग्रन्थ लिखें, वहीं अनेक टीकाकारों ने भी रामायण पर अपनी लेखनी उठाने से नहीं चूके।[१] रामायण के प्रमुख टीकाकरों में रामानुजीय टीका की रचना रामानुज ने की। वेंकट कृष्णाध्वरी की सर्वार्थसार टीका, वैद्यनाथ-दीक्षित की रामायण दीपिका, ईश्वर दीक्षित की वृहद 'विवरण' 'लघु-विवरण' टीका, महेश्वर तीर्थ की रामायण तत्त्व टीका, गोविन्द राज की रामायण भूषण टीका, अग्निहोत्री अहोबल कृत वाल्मीकि हृदय टीका, माधवयोगी कृत रामायण-शिरोमणि टीका, लौकनाथ चक्रवर्ती रचित मनोहरा टीका, अम्बक मखी

१. विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य संस्कृत साहित्य का इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, पृ. ११६।

कृत धर्माकूतम टीका, अप्पय दीक्षित कृत रामायण, तात्पर्य संग्रह, त्र्यम्बक मखिन कृत 'धर्माकूत' टीका, वरदराज मैथिलीभट्ट कृत 'विवेकतिलक' टीका इत्यादि प्राप्त मिलती है।[१]

शैवरामायण की कथावस्तु का सार निरूपण

महर्षि वाल्मीकि रामायण के लंकाकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड की कथावस्तु के आधारपर शिव-पार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैव रामायण भगवान राम की विजय कथा का वर्णन करने वाला एक महनीय काव्य है, जिसमें लेखक ने रामायण के पात्रों के नाम बदलकर रखे हैं। द्वादश अध्यायों में प्राप्त रामायण की कथावस्तु को संक्षेप में यदि प्रस्तुत किया जाये तो शैव रामायण के **प्रथम अध्याय** में कैलाशपर्वत के वर्णन के साथ-साथ रावणवध के अनन्तर, राम के अश्वमेघ यज्ञ करने का विवरण तथा राजाओं से करप्राप्ति करने तक का विवेचन मिलता है। **द्वितीय अध्याय** में पुष्कर द्वीप वर्णन, दिति एवं कश्यप पुत्र पुष्कराधि पति सहस्रकण्ठ (दशानन) द्वारा अश्वमेघ यज्ञ के अश्व को पकड़ने पर बृहस्पति द्वारा भरत को युद्ध मन्त्रणा देने तक का विवरण है। **तृतीय अध्याय** में राम का विभीषण आदि नरेशों से परामर्श एवं जाबालि द्वारा सहस्रकण्ठ के पूर्वजन्म का वर्णन है। **चतुर्थ अध्याय** में जाबालि के परामर्श से राम का सुग्रीव, विभीषण सेना एवं अपने भाईयों सहित पुष्कर द्वीप पहुंचने, हनुमान के दूत रूप में सहस्रकण्ठ की सभा में जाने एवं उसे अश्वमेघ यज्ञ के अश्व को लौटाने या मृत्युवरण करने का संदेश वर्णन अभिहित है। **पञ्चम अध्याय** में सहस्रकण्ठ के अश्व न लौटाने पर हनुमान द्वारा सहस्रकण्ठ को मारने, उसके किरीटों को बिखेरने एवं अन्य राक्षसों से युद्धवृत्तान्त वर्णित है। **षष्ठ अध्याय** में राम एवं सहस्रकंठ का युद्ध वर्णन, ऋषियों द्वारा सहस्रकण्ठ को अश्व लौटाने का परामर्श एवं उसके न मानने का वर्णन है। **सप्तम अध्याय** में सहस्रकण्ठ द्वारा राम की सेनाओं को हताहत करने, राम, सुग्रीव, भरत एवं विभीषण आदि का उससे युद्ध एवं राम की सेनाओं का मूर्छित होना वर्णित है। **अष्टम अध्याय** में राम एवं सहस्रकण्ठ का युद्ध क्षेत्र में अपनी महिमा का वर्णन करने के साथ-साथ दोनों के मध्य सम्पन्न हुए शस्त्रास्त्र युद्ध तथा द्वन्द्व युद्ध वर्णन सम्पृक्त है। **नवम अध्याय** में राम एवं सहस्रकण्ठ का युद्ध वर्णन राम द्वारा नारायण अस्त्र से सहस्रकण्ठ का

---

१. संस्कत साहित्य का इतिहास, आचार्य जयशंकर त्रिपाठी, पृ. सं. ४७७-४७८ से उद्धृत।

वध, सहस्त्रकण्ठ का हजार फण वाले शेषनाग रूप में विष्णु शय्या को प्राप्त होने, देवताओं के प्रसन्न होने, इन्द्र द्वारा पुष्पवृष्टि एवं सेना पर अमृतवृष्टि से राम की सेना पुनः जीवित होने तक का विवरण वर्णित है। **दशम अध्याय** में सहस्त्रकण्ठ की मृत्यु से राक्षसों की दैन्यता का वर्णन, सहस्त्रकण्ठ के पुत्र पुष्कराक्ष का विभीषण के शरण में जाने, विभीषण द्वारा पुष्कराक्ष को राम का शरणागत बनाना एवं पुष्करकाक्ष द्वारा अश्वमेघ यज्ञ के अश्व को लौटाने का वर्णन वर्णित है। **एकादश अध्याय** में ब्रह्मा द्वारा राम की परब्रह्म रूप में स्तुति, पुष्कराक्ष द्वारा राम की अर्चना, राम का स्वजनों सहति पुष्पकयान से अयोध्या प्रत्यागमन तक का वर्णन अन्वित है। **द्वादश अध्याय** में राम द्वारा अपने भाईयों एवं सीता के साथ सरयू नदी के तट पर यज्ञशाला एवं यज्ञवेदी का निर्माण, अतिथियों की विभिन्न पकवानों से सेवा, पुरोहितों को दक्षिणादान, राम द्वारा सैकड़ों अश्वमेघ यज्ञ करना, सौवें अश्वमेघ यज्ञ के समय राम का सीता को वाल्मीकि आश्रम में भेजना (परित्याग वर्णन), सीता की सुवर्ण प्रतिमा बनाकर यज्ञ की सम्पन्नता, अनन्तर हजार वर्ष तक पृथ्वी का पालन करने वाले राम द्वारा कुश एवं लव का राज्याभिषेक तथा राम का स्वर्ग प्रस्थान विवरण, राम के सामने सीता का पृथ्वी में प्रवेश होना, तदनन्तर वैकुण्ठ में राम-सीता का मिलन, रमा एवं विष्णु रूप में होने तक का वर्णन अभिहित मिलता है।

***

कार्तज्ञ निरूपण

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन अदृश्य शक्तियों, ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों का मैंने साहाय्य लिया है, उनके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। सर्वप्रथम "शैवरामायण" की सम्पादिका डॉ० शैलजा पाण्डेय, इलाहाबाद को हृदय से धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने यह ग्रन्थ मुझे भेंट रूप में प्रदान किया। तदनन्तर ग्रन्थ में नान्दीवाक् लिखने वाले माननीय कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, **प्रो० महावीर अग्रवाल जी** के प्रति अपना आधमर्ण्य व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार दोनों को अभिभूत किया है। तदनन्तर काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय के संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय में अवस्थित संस्कत विभाग के

अध्यक्ष **प्रो० कौशलेन्द्र पाण्डेय जी** को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने शुभाशंसा लिखकर मेरा मनोबल बढ़ाया है। इस ग्रन्थ में भूमिका एवं परिशिष्ट विवरण प्रसंग में मैंने अपनी शिष्या **डॉ० नविता जम्बाल** के एम. फिल् शोध-प्रबन्ध "शैव रामायण की शास्त्रीय मीमांसा" से सहायता ली है। एतदतर्थ इस अवसर पर उसे भी धन्यवाद एवं सुभाशी: देता हूँ। ग्रन्थ लेखन समय में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाली अपनी सहधर्मिणी **श्रीमती मालिनी शुक्ला,** पुत्रद्वय—**श्रेयस** एवं **प्रेयस** तथा पुत्री **संस्कृति शुक्ला** को भी धन्यवाद एवं शुभाशी: देता हैं, जिनके सहयोग के बिना ग्रन्थ प्रकाशन करना संभव नहीं होता। ग्रन्थ को प्रकाशित करने वाले **शिव संस्कृत संस्थान** को भी धन्यवाद देता हूँ, जिनके असीम परिश्रम से ग्रन्थ लोकजीवन के सम्मुख आ पाने में समर्थ हुआ। अन्त में कुलदेवता भगवान शिव की शरण में जाता हुआ, उनके द्वारा वन्दित भगवान राम को हृदय में धारित करता हुआ, ग्रन्थ को विद्वानों के करकमलों में पहुँचने की जिजीविषा रखता हुआ अपनी वाणी को विराम देता हूँ। संत गोस्वामी तुलसीदास जी भी रामचरित मानस में लिखते हैं—

कवि कोविद अस हृदय विचारी।
गावहिं हरि जस कलिमल हारी।।

विदुषां वशंवद:

—डॉ० रामबहादुर (शुक्ल)

उपाचार्य-संस्कृत विभाग
जम्बू विश्वविद्यालय, जम्मू
जम्मूतवी-१८०००६

शब्द-संकेत-सूची

अग्नि. पु.	=	अग्निपुराण
अद्. रामा.	=	अद्भुत रामायण
अथर्व.	=	अथर्ववेद
आन. रा.	=	आनन्द रामायण
आदि. प.	=	आदिपर्व
का. लं.	=	काव्यालंकार
का. प्र.	=	काव्यप्रकाश
छं. मं.	=	छन्दोमञ्जरी
छान्दो.	=	छान्दोग्य उपनिषद
तत्त्व. स.	=	तत्वसंग्रह रामायण
तै. स.	=	तैत्तरीय संहिता
द. रू.	=	दशरूपक
ना. शा.	=	नाट्यशास्त्र
निरु.	=	निरुक्त
नैषध.	=	नैषधीयचरितम्
पद. पु.	=	पद्मपुराण
पु. वि.	=	पुराणविमर्श
बृह. सं.	=	बृहत्संहिता
ब्र. पु.	=	ब्रह्मपुराण
भा. पु.	=	भागवतपुराण
म. पु.	=	मत्स्यपुराण
मनु.	=	मनुस्मृति
मार्क. पु.	=	मार्कण्डेयपुराण
महा.	=	महाभारत
वाज. सं.	=	वाजसनेयी संहिता
वृ. र.	=	वृत्तरत्नाकर
वा. प.	=	वाचस्पत्यम्

वा. रा.	=	वाल्मीकि रामायण
वृहदा. उप.	=	वृहदारण्यक उपनिषद्
वि. रा.	=	विलंकारामायण
विष्णु. पु.	=	विष्णुधर्मोत्तरपुराण
श. क.	=	शब्दकल्पद्रुम
शै. रा.	=	शैव रामायण
सं. सा. इति	=	संस्कृत साहित्य का इतिहास
हला. को.	=	हलायुधकोष
हरि० पु०	=	हरिवंशपुराण
E.R.A.	=	Insiclopadia of Religon and Ethic.
H.C.L.	=	History of Sanskrit
H.C.I.L.	=	History of Classical Indian Literature
H.C.S.L.	=	History of Classical Sanskrit Literature

***

श्रीगणेशाय नमः । श्रीरेणुकायै नमः ।

शैवरामायणम्

मङ्गलाचरणम्

श्रीगणेशं नमस्कृत्य रेणुकामभिनन्द्य च ।
कवीन्दुं नौमि वाल्मीकिं रामं विष्णुं शिवं तथा ।।
श्रीरामस्य विजयो हि शैवरामायणोदितः ।
प्राप्तः संवादरूपेण वक्ता यत्र शिवो स्वयम् ।।
पितृभक्तो द्विजः कश्चिद् काव्यममुं विलेख्यवान् ।
मातुः मनोविनोदाय दृश्यते लेखिनी कवेः ।।
राजते मालिनी काव्ये प्रणवश्छन्दसामिव ।
तादृशी मालिनी व्याख्या कण्ठे लसतु धीमताम् ।।

सर्वप्रथम कवि श्रीगणेश जी को नमस्कार करने के बाद श्रीरेणुका जी को नमन रूप मङ्गलाचरण करता है । इसके बाद शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण लिखने में प्रवृत्त होता है ।

प्रथमोऽध्यायः

सूत उवाच

कैलासशिखरे रम्ये कल्पवृक्षोपशोभिते ।
गन्धर्वगणसम्पूर्णे राजतैः शिखरैर्युते ।।१।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सूत जी बोले—कल्पवृक्षों से सुशोभित कैलास पर्वत की सुन्दर चोटी में सम्पूर्ण गन्धर्व गणों से सुशोभित भगवान शङ्कर सर्वोच्च आसन में सुशोभित हो रहे थे ।।१।।

विद्याधरैरप्सरोभिः प्रमथैश्च विराजिते ।
रत्नसन्नद्धपीठे तु समासीनं तु शङ्करम् ।
दृष्ट्वा सा पार्वती प्राह वचनं धर्मसम्मितम् ।।२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—वहाँ पर पहले से ही विद्याधर एवं अप्सराएँ एकत्र थीं । उन्हीं लोगों के बीच रत्नों से बने हुए उच्चासन पर भगवान शिव विराजमान थे । उन पार्वती ने भगवान शङ्कर को देखकर धर्मसमन्वित वचन कहे ।।२।।

श्रीपार्वत्युवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ रामस्य चरितं शुभम्।
श्रीरामविजयं नाम ब्रूहि मे करुणाकर।
तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा पार्वतीं प्राह शङ्करः ।।३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—श्रीपार्वती बोलीं—हे भगवन्! आप सभी धर्मों को जानने वाले हैं और भगवान राम का चरित्र भी अत्यन्त शुभ है। इसलिए हे करुणानिधान! मुझे श्रीराम की विजय सुनाइये। पार्वती के ऐसे वचन सुनकर, भगवान शंकर पार्वती से बोले ।।३।।

श्रीशङ्कर उवाच—

शृणु देवी प्रवक्ष्यामि प्रीतये गिरिकन्यके।
श्रीरामविजयं नाम सहस्रग्रीवनाशनम् ।।४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शिव ने कहा—हे गिरिराजकुमारी! तुम्हारी प्रसन्नता के लिए मैं भगवान राम की कथा सुनाऊँगा, जिन्होंने सहस्रग्रीव का विनाश किया था ।।४।।

सर्वपापप्रशमनं सर्वसौभाग्यदायकम्।
पुत्रपौत्रप्रदं नृणां चातुर्वर्गफलप्रदम् ।।५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—श्रीराम की विजय कथा सम्पूर्ण पापों का शमन करने वाली एवं सम्पूर्ण सौभाग्य को देने वाली है। मनुष्यों को पुत्र पौत्रादि को प्राप्त कराने के साथ-साथ चारों प्रकार के वर्गों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) को फल देने वाला है ।।५।।

रामो दाशरथिः श्रीमानयोध्यायामभून्नृपः।
इक्ष्वाकुकुलसम्भूतः सर्वराक्षसमर्दनः ।।६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इक्ष्वाकु वंश में जन्म, सम्पूर्ण राक्षसों का मर्दन करने वाले भगवान श्रीराम अयोध्या के चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के पुत्र थे ।।६।।

कुम्भकर्णमहाकायदशास्येन्द्रजितां वधम्।
कृत्वा ह्ययोध्यां सम्प्राप्तः सीतया भ्रातृभिर्युतः ।।७।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—ऐसे भगवान श्रीराम ने विशालकाय कुम्भकर्ण तथा रावण को जीतकर एवं उनका वध करके सीता एवं अपने भाई लक्ष्मण के सहित अयोध्या आये थे ।।७।।

पट्टाभिषिक्तो राजन्यैर्वसिष्ठाद्यैः समन्त्रिभिः ।
भ्रातृभिः सहितोरामः सम्यग्राज्यमपालयत् ।।८।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तदनन्तर महर्षि वशिष्ठ, मन्त्रियों एवं राजाओ! के द्वारा भगवान श्रीराम का अयोध्या में राज्याभिषेक किया गया और अपने भाइयों (लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न) के सहित राम ने सम्पूर्ण (अयोध्या) राज्य (की जनता) का पालन पोषण किया ।।८।।

एवं बहुतिथेऽतीते रामो राजीवलोचनः ।
हयमेधं ततः कर्तुमारभद् रावणान्तकः ।।९।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—कमल के समान नेत्रों वाले एवं रावण का वध करने वाले भगवान श्रीराम ने अयोध्या में बहुत दिन राज्य करने के बाद अश्वमेध यज्ञ करना प्रारम्भ किया ।।९।।

मधुमासेऽसिते पक्षे ह्यलंकृत्य हयोत्तमम् ।
चतुरङ्गबलैर्युक्तमृत्विग्भिश्च समन्वितम् ।।१०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—मधुमास (वसन्त ऋतु)[१] अर्थात् चैत्र महीने के कृष्णपक्ष में श्रेष्ठ घोड़े को अलङ्कृत करके जो चतुरङ्गिणी सेना और अनेक ऋत्विकों से समन्वित था, उसे अश्वमेध यज्ञ के लिए छोड़ा गया ।।१०।।

नियुज्य भरतं क्षिप्रं सशत्रुघ्नमवोचत् ।
भरत भ्रातृसहितो ह्यनुसृत्य हये व्रज ।।११।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भरत को अश्वमेध यज्ञ की रक्षा हेतु नियुक्त करके भगवान श्रीराम ने शत्रुघ्न से कहा कि भरत के साथ-साथ सभी भाई उस घोड़े का अनुसरण करो ।।११।।

इति रामवचः श्रुत्वा रामाज्ञां परिपालयन् ।
निर्ययौ भरतः शीघ्रं हयानुसरणो द्विजाः ।।१२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान श्रीराम के वचनों को सुनकर, उनकी आज्ञा का परिपालन करने के लिए भरत शीघ्र ही घोड़े का पीछा करने वाले ब्राह्मणों के साथ अयोध्या से बाहर निकले ।।१२।।

---

१. मधुमास को चैत्र महीना माना जाता है, जो वसन्त ऋतु के अन्तर्गत आता है। यथा—विनयन्ते स्म तद्योधा मधुर्भिर्विजयश्रमम्-कालिदास रघुवंश-४/६५, ऋतुसंहार १/३, क्व नु हृदङ्गमः सखा कुसुमायोजितकार्मुकोमधुः-कुमारसम्भव, ४/२४-२५, ३/१०,३०; भास्करस्य मधुमाधवाविव-रघु-११/७, मासे मधौ मधुरकोकिलभृङ्गनादैः रामा हरन्ति हृदयं प्रसभंनराणाम्-ऋतुसंहार-६/२४ से स्पष्ट है।

चारयामास देशान् स तान् तान् जनपदान् बहून् ।
सौराष्ट्रसिन्धुसौवीरमागधाः हूणकोङ्कणाः ।।१३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इसके बाद वह घोड़ा विविध देशों, बहुत से जनपदों में घूमता हुआ सौराष्ट्र, सिन्धु, सौवीर, मगध, हूण, कोंकण (को पार किया, पर किसी ने उस घोड़े को नहीं रोका; क्योंकि अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को जो राज्य नहीं पकड़ते, वह उस राजा की अधीनता को स्वयं स्वीकार कर लेते हैं, जो अश्वमेध यज्ञ कर रहा होता है एवं जो राजा उस घोड़े को पकड़ लेता है, इसका तात्पर्य यह होता है कि वह अधीनता स्वीकार नहीं कर रहा है, तब उस घोड़े के पीछे चलने वाली सेना से उसका युद्ध निश्चित हो जाता है ।।१३।।

कलिङ्गयवनाः शूरा बाह्लीकाः कोसलादयः ।
अङ्गबङ्गनृ(ने)पालाश्च द्राविडाः गुर्जराश्च ये ।।१४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(तदनन्तर वह घोड़ा) कलिङ्ग, यवन, शूर, वाह्लीक, कोशल आदि राज्यों के साथ-साथ, अङ्ग-बङ्ग, नेपाल, द्रविड़ एवं गुर्जर (देशों को पार किया, परन्तु किसी ने उसे छुआ तक नहीं) ।।१४।।

चोलाः केकयदेशीयाः पाश्चात्याः औत्तरीयकाः ।
पुलिन्दाः पाण्डवाः मात्स्याः ये द्वीपान्तरवासिनः ।।१५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(आगे चलकर वह अश्वमेधीय घोड़ा) चोल, कैकय देश, पश्चिमी एवं उत्तरीय देशों (को पार करके), पुलिन्द, पाण्डव, मत्स्य और इनके मध्य अवस्थित द्वीपों में घूमा ।।१५।।

श्रीशङ्कर उवाच

ललाटपट्टलिखितं सौवर्णं राघवीयकम् ।
पत्रं दृष्ट्वा च राजानो वाचयामासुरादरात् ।।१६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शिव पार्वती से बोले कि ऐसे उस अश्वमेध यज्ञ के ललाट में बँधे हुए सुवर्ण से लिखे हुए अक्षरों वाले राजा राम के पत्र को देखकर आदर के साथ सभी राजा गण आपस में बातचीत करते देखे गये ।।१६।।

अयोध्याधिपतिः शूरो रामो दशरथात्मजः ।
हयमेधं करोत्यद्य सरयूतीरसंस्थितः ।।१७।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(उस पत्र में लिखा था कि) सरयू नदी के किनारे अवस्थित अयोध्या नरेश शूरवीर राम, जो राजा दशरथ के पुत्र हैं; वह इस समय अश्वमेध यज्ञ कर रहे हैं ॥१७॥

कौसल्यायाः कुमारोऽभूदंशाद् विष्णोः महात्मनः ।
यज्ञीयाश्वो ह्ययं तेन मोचितोऽभूद्यथाविधिः ॥१८॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(ऐसे वह राम) जो भगवान विष्णु के अंश हैं, महात्मा हैं, एवं महारानी कौसिल्या के पुत्र हैं, उन्होंने अश्वमेध की विविध क्रियाओं को करके इस अश्वमेधीय अश्व को छोड़ा है॥१८॥

एषां (येषां) सामर्थ्यमस्तीह युद्धं कर्तुं बलाच्च तैः ।
गृह्णीयोऽश्वोऽन्यथा तैश्च करो देयो मुदान्वितैः ॥१९॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—जिस नरेश या राज्य के पास मुझसे (राम से) युद्ध करने का सामर्थ्य हो, वह जबरदस्ती करके इस अश्वमेधीय यज्ञ को ग्रहण करे या रोके, अन्यथा उसे प्रसन्न होकर मुझे कर देना होगा, अर्थात् मेरी अधीनता स्वीकार करना होगा ॥१९॥

तेषां रामाद् भयं नास्ति इतरेषां पदे पदे ।
एवं विलिखितं पत्रे सौवर्णे रामणीयके ।
वाचयन्तो नृपाः सर्वे ते बभूवुः (पराङ्) मुखाः ॥२०॥

इति श्रीशैवरामायणे पार्वतीशङ्करसंवादे प्रथमोऽध्यायः ।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—जो-जो राजा कर देते जायेंगे (अर्थात् अधीनता स्वीकार करेंगे), उन्हें राम से किसी भी प्रकार का भय कभी-भी नहीं होगा, इस प्रकार की सुवर्ण से लिखी हुई राम की उद्घोषणा को पढ़ करके सभी राजा गण युद्ध से पराङ्मुख हो गये, अर्थात् उन्होंने राम की अधीनता स्वीकार कर ली ॥२०॥

इस प्रकार पार्वती शिव संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का पहला अध्याय समाप्त हुआ ।

द्वितीयोऽध्यायः

श्रीशङ्कर उवाच

शृणु प्रिये ततो वृत्तं यज्ञीयाश्वस्य ते ब्रुवे ।
संचरित्वा हयं भूमौ ससैन्यः परिपालयन् ।।
भरतो भ्रातृसहितः सिन्धुतीरमुपाश्रितः ।।१।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शिव बोले कि प्रिये (पार्वती) ! उसके बाद उस अश्वमेधीय यज्ञ के बारे में सुनो, जो सम्पूर्ण सेना के द्वारा परिपालित (रक्षित) होता हुआ पृथ्वी में इधर-उधर घूमता रहा एवं उसका पीछा करते हुए भाइयों सहित राजकुमार भरत सिन्धु नदी के किनारे पहुँचे ।।१।।

राजीवोत्पलकल्हारमत्स्यकच्छपराजितम् ।
विमलोदक्कल्लोलद्विजसञ्चयं घोषितम् ।।२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(उसके पूर्व भगवान राम की सेना ने) राजीव, उत्पल, कल्हार, मत्स्य एवं कच्छ को पराजत कर दिया था। तदनन्तर स्वच्छ जल वाली, कलकल निनाद करने वाली सिन्धु नदी के किनारे ऋत्विक द्विजों ने रुकने की घोषणा की ।।२।।

सिन्धुतीरं समुद्वीक्ष्य वासं चक्रे रघूद्वहः ।
सहस्रकण्ठो दैत्येन्द्रः कश्यपस्य सुतो बली ।।३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान राम की सेना को सिन्धु नदी के किनारे पड़ाव डालकर रहने की विवक्षा को देखकर महर्षि कश्यप का पुत्र, महाबली, दैत्यराज सहस्रकण्ठ (चिन्तातुर होने लगा)।।३।।

मन्त्रिवर्येण धीरेण रक्ताक्षेण स संयुतः ।
यदृच्छया सञ्चरित्वा तान्तान् द्वीपान् बलान्वितान् ।।४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तदनन्तर वह बुद्धिमन मन्त्रिगणों एवं रक्ताक्ष के साथ मन्त्रणा करके विविध प्रकार के द्वीपों में रहने वाले राक्षस गणों के पास सूचना भेजी, अर्थात् दूत गणों को राम की सेना के सिन्धु के किनारे रहने एवं उनके अश्वमेध यज्ञ करने की अर्थात् अधीनता स्वकार करने या युद्ध करने की सूचना भेजी ।।४।।

सिन्धुतीरमुपाश्रित्य दृष्ट्वा तं भरतं तदा ।
आहूय राक्षसं धीरमिदं वचनमब्रवीत् ।।५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तब उस सहस्रकण्ठ ने सिन्धु के किनारे पड़ाव डाले हुए राजकुमार भरत को देखकर सभी बलवान् राक्षसों को बुलाकर इस प्रकार के वचन बोला—।।५।।

लोहिताक्ष भवान् गत्वा गृहीत्वायाहि घोटकम् ।
विसृष्टस्तेन रक्ताक्षस्ततोद्वीक्ष्य हयोत्तमम् ।।६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे लोहिताक्ष ! तुम जाओ और उस अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को पकड़ कर यहाँ ले आओ। उसके द्वारा भेजे जाने वाले रक्ताक्ष ने उस उत्तम घोड़े को देखा ।।६।।

निधाय तिलकं भाले मत्तचूर्णं विकीर्य सः ।
भरतं सबलं तत्र मायया मोहयन्निशि ।।७।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसने अपने मस्तक पर तिलक लगाया हुआ था और वहाँ पहुँचने पर वहाँ उसने मत्तचूर्ण (मन्त्र से युक्त भस्म) को सभी जगह फेंका, जिससे भरत के साथ-साथ उनकी सम्पूर्ण सेना उसकी माया के कारण मूर्च्छित हो गयी, ठीक उसी तरह जैसे रात्रि में सभी लोग सो जाते हैं ।।७।।

यज्ञीयाश्वं गृहीत्वासौ ययौ चित्रवतीं पुरीम् ।
ततः प्रभाते विमले बलं दृष्ट्वा ह्यनश्वकम् ।।८।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तदनन्तर वह राक्षस उस अश्वमेधीय अश्व को पकड़कर चित्रवती पुरी गया। उसके बाद स्वच्छ प्रभातकाल की वेला में विना अश्व वाली सेना को सभी ने देखा ।।८।।

भरतो भ्रातृसहितो बलेन महतावृतः ।
विन्ध्य हिमालयं मेरुं मन्दरं निषधं गिरिम् ।।९।।
हेमकूटं पारियात्रं शैलारण्यं नदीं पुरीः ।
सर्वा दिशश्च विदिशो जम्बूद्वीपे (पं) व्यचिन्वत ।।१०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसके बाद भाइयों सहित भरत एवं उनकी विशाल सेना ने विन्ध्य (विन्ध्याचल), हिमालय, सुमेरु, मन्दर, निषध आदि पर्वतों में खोजते हुए, हेमकूट पारियात्र, शैलाख्य, विविध नदियों एवं नगरियों में खोजते हुए, सम्पूर्ण दिशाओं में गये तथा विदिशा एवं जम्बूद्वीप में भी उस अश्वमेधीय अश्व को खोजा ।।९-१०।।

अदृश्यमानस्तुरगं भरतश्चिन्तयन् विभुः ।
लिखितं लेखयित्वा तु शरे बद्धवा स राघवः ।।११।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उस अदृश्य हुए अश्वमेधीय अश्व के बारे में चिन्तन करते हुए शक्तिशाली भरत ने कुछ सोचा और उस रघुवंशी ने एक पत्र लिखकर बाण में बाँधा ।।११।।

सन्धाय कार्मुके तं तु विससर्जेन्द्रसन्निधिम् ।
स ददर्श शरं दीप्तं सलेखं मघवा तदा ।।१२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(तदनन्तर भरत ने) धनुष में बाण चढ़ाकर उस पत्र को इन्द्र के पास भेजा । उसके बाद उस प्रज्ज्वलित बाण एवं उसमें लिखे हुए पत्र को इन्द्र ने पढ़ा (देखा) ।।१२।।

भरतं सिन्धुतीरस्थं सभ्रातृकमुपेत्य सः ।
उवाच वचनं धीरो गुरुणा सह दैवतैः ।।१३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसके बाद अपने भाइयों के साथ सिन्धु नदी के किनारे भरत के पास विविध देवताओं एवं सुरुगुरु बृहस्पति के साथ पहुँचकर धैर्यशाली इन्द्र ने कहा ।।१३।।

इन्द्र उवाच

न जानेऽहं रघुश्रेष्ठ यज्ञीयं ते तुरङ्गमम् ।
त्रिदिवे नास्ति ते वाजी क्रोधत्वं मयि मा कृथाः ।।
इति ब्रुवति देवेन्द्रे बृहस्पतिरुवा च तम् ।।१४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इन्द्र बोले—हे रघुकुल में श्रेष्ठ भरत ! मैं तुम्हारे अश्वमेधीय यज्ञ के विषय में नहीं जानता हूँ। आपका घोड़ा तीनों लोकों में नहीं है, अतः व्यर्थ में मेरे ऊपर क्रोध न करें । इन्द्र के ऐसा बोलने पर सुरुगुरु बृहस्पति भरत से बोले ।।१४।।

बृहस्पतिरुवाच

तुरङ्गमस्य वृत्तान्तं वदामि शृणु राघव ।
सहस्रकण्ठो दैत्येन्द्रः कश्यपस्य सुतो बली ।।१५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—बृहस्पति ने कहा—हे रघुकुल भूषण ! मैं उस अश्वमेध यज्ञ के अश्व के विषय में बता रहा हूँ । महर्षि कश्यप का बलवान पुत्र दैत्यराज सहस्रकण्ठ (उसे चुरा ले गया है) ।।१५।।

द्वे भार्ये कश्यपस्य (स्यास्तां) दितिश्चादितिरेव च ।
दित्यामेव समुत्पन्नस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ।।१६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—महर्षि कश्यप की दिति एवं अदिति दो पत्नियाँ थीं। दिति से उत्पन्न वह दैत्य सहस्रकण्ठ तीनों लोकों में विख्यात है ।।१६।।

ब्रह्माणं तपसोग्रेण तोषयद् भुवि राक्षसः ।
तस्य प्रसादाच्चित्रवतीं पुष्करद्वीपवर्तिनीम् ।।१७।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उस राक्षस ने ब्रह्मा को तपस्या से प्रसन्न कर पृथ्वी में पुष्करद्वीप के समीप स्थित चित्रवती पुरी के महल में इस समय निवास कर रहा है ।।१७।।

समवाप पुरीं रम्यां सप्तप्राकारशोभिताम् ।
शृङ्गाट्टालकसंयुक्तां चैत्यप्रासादसङ्कुलाम् ।।१८।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसकी चित्रवती पुरी सात प्रकार की परिखाओं से (युक्त) सुशोभित है, जो विविध प्रकार की ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं से युक्त तथा उसका महल विविध चैत्यों से समन्वित तथा जनसमुदाय से भरा रहता है ।।१८।।

द्वात्रिंशद्वारसंयुक्तां नानारत्नोपशोभिताम् ।
हस्त्यश्वगरसम्पूर्णां रक्षोगणनिशे (?से) विताम् ।।१९।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—वह पुरी बत्तीस द्वारों से संयुक्त तथा अनेक प्रकार के रत्नों सें ज़ड़ी हुई होने के कारण अत्यन्त सुन्दर है। वह हाथियों एवं घोड़ों से भरी पड़ी है तथा रात्रि में सैनिक बाण उसकी रखवाली करते हैं ।।१९।।

दुर्गमां देवतानीकैर्दुगत्रय विशोभिताम् ।
तस्यामास्ते स दैत्येन्द्रस्तेन संचोदितोऽधुना ।।२०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—वह नगरी देवताओं के त्रिदुर्गों से भी सुन्दर एवं दुर्गम है। ऐसी उस दुर्गमपुरी चित्रवती में वह दैत्यराज सहस्रकण्ठ इस समय निर्भय रूप में निवास कर रहा है ।।२०।।

राक्षसः कश्चिदागत्य गृहीत्वा तुरगं ययौ ।
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा विस्मयाद् भरतोऽब्रवीत् ।।२१।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—वहीं से एक राक्षस आ करके अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को पकड़कर वहीं ले गया। बृहस्पति के ऐसे वचन सुनकर आश्चर्यचकित हो जाने वाले भरत ने देवगुरु से कहा ॥२१॥

अहं कथं गमिष्यामि जित्वा नेष्यामि तं कथम्।
तच्छ्रुत्वा भरतेनोक्तं पुनः प्राह बृहस्पतिः ॥२२॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—मैं कैसे वहाँ (चित्रपुरी) जाऊँगा? और कैसे उस राक्षस को जीतकर अश्वमेध के घोड़े को कैसे लाऊँगा ? भरत की ऐसी बातें सुनकर, देवगुरु बृहस्पति ने पुनः भरत से कहा ॥२२॥

हे राजन् शृणु मे वाक्यमसाध्यं नास्ति ते क्वचित्।
गन्तुं तत्पुष्करं द्वीपं सयत्नो भव साम्प्रतम् ॥२३॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे राजन्! मेरी बातों को सुनो, तुम्हारे लिए कहीं भी, कुछ भी असाध्य नहीं है। इसलिए उस पुष्कर द्वीप में जाने के लिए इस समय प्रयत्न करो ॥२३॥

रामेण संयुतस्तत्र गत्वा चित्रवतीं पुरीम्।
आगमिष्यसि तं जित्वा गृहीत्वा तुरगं पुनः ॥२४॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—राम के साथ मिलकर वहाँ चित्रवती पुरी जा करके, तुम उस राक्षस को जीतकर एवं घोड़े को लेकर अवश्य आओगे ॥२४॥

इत्याभाष्य ययौ स्वर्गं पूजितस्तेन पार्वति।
इन्द्रो (ऽनु) ज्ञां गृहीत्वा च स्वपुरीमगमत्तदा ॥२५॥

इति शैवरामायणे पार्वतीशङ्करसंवादे सहस्रकण्ठदैत्यचरिते द्वितीयोऽध्यायः।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे पार्वती ! तब सुरुगुरु बृहस्पति ने ऐसा कह करके, भरत के द्वारा सम्मान प्राप्त कर, स्वर्ग चले गये। इन्द्र की अनुज्ञा लेकर वह अपनी पुरी में पहुँचे ॥२५॥

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का सहस्रकण्ठदैत्यचरित नामक दूसरा अध्याय समाप्त हुआ।

तृतीयोऽध्यायः

श्रीशङ्कर उवाच

भरतोऽपि ययौ सैन्यैः संवृतः सन्निवृत्य सः ।
प्रणम्यं रामं वृत्तान्तं तुरगस्य न्यवेदयत् ।।१।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवन शिव बोले—भरत भी अपनी सेना के साथ वहाँ से वापस लौटकर (अयोध्यापुरी जाकर) भगवान राम को प्रणाम करके अश्वमेधीय अश्व के अपहरण का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया ।।१।।

रामो निशम्य वचनं विस्मयाकुलचेतसा ।
किंकर्तव्यमतोऽस्माभिरित्युवाच वचस्तदा ।।२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—राम भरत के वचनों को सुनकर उस समय अत्यन्त आश्चर्य चकित एवं व्याकुल चित्त वाले हो गये, किंकर्त्तव्यविमूढ़ राम ने सभी के समक्ष कहा कि बताओ अब हमें क्या करना चाहिए ।।२।।

सभामण्डपमासाद्य वसिष्ठादिमुनीश्वरैः ।
मन्त्रिभिर्भ्रातृभिःसार्द्धं रराज रघुपुङ्गवः ।।३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उस समय अयोध्या की राजसभा में वशिष्ठ आदि अन्य मुनियों के साथ-साथ मन्त्रियों और भाइयों के सहित रघुकुल श्रेष्ठ राम राजसिंहासन में सुशोभित हो रहे थे ।।३।।

सविस्मयो दाशरथिस्तदानघः सहस्रकण्ठस्य पुरीं विजेतुम् ।
इत्येष भूपालमहीसुरान्वितः समन्त्रिवर्गः स हि राजसत्तमः ।।४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—आश्चर्यचकित राम ने पापी सहस्रकण्ठ की पुरी को जीतने की इच्छा सभामण्डप में रखी और कहा कि यह अयोध्या नगरी देवताओं के द्वारा भी वन्दित है और सभी मन्त्रीवर्ग राजसभा का सम्मान करने वाले हैं; इसलिए राजधर्म भी यही कहता है ।।४।।

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि रामस्य चरितं शुभम् ।
रामेण यत्कृतं कर्म सहस्रग्रीवनाशनम् ।।५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शंकर फिर पार्वती से बोले कि हे देवी ! अब मैं भगवान राम का सुन्दर चरित (कहूँगा) या गुणगान करूँगा और

यह भी बताऊँगा कि सहस्त्रगीव के विनाश के लिए राम ने क्या-क्या कर्म किये ॥५॥

सिंहासनगतो रामो (मः) आनयामास तान् ऋषीन् ।
वसिष्ठो वामेदवश्च वाल्मीकिर्नारदो भृगुः ॥६॥
अगस्त्यो रैव्यकः कण्वः कण्डुः शौनकपर्वतौ ।
सुतीक्ष्णः शङ्खलिखितौ मार्कण्डेयोऽत्रिगौतमौ ॥७॥
जाबालिर्जमदग्निश्च शतानन्दोऽप्यथापरे ।
रामस्य मन्दिरं प्रापुः विश्वामित्रादयोऽपि च ॥८॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सिंहासन में बैठे हुए राम ने वशिष्ठ, वामदेव, वाल्मीकि, नारद, भृगु, अगस्त्य, रैव्यक, कण्व, कण्डु, शौनक, पर्वत, सुतीक्ष्ण, शङ्ख, लिखित, मार्कण्डेय, अत्रि, गौतम, जाबालि, जमदग्नि, शतानन्द आदि अन्य उन सभी ऋषियों केा बुलाया और विश्वामित्र सहित सभी ऋषि मुनि राम के राजमहल में पहुँचे ॥६-८॥

समागतान् मुनीन् वीक्ष्य सहसोत्थाय चासनात् ।
प्रणम्य दत्त्वासनानि पूजां कृत्वा पृथक् पृथक् ॥९॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सभी आये हुए ऋषि मुनियों को देखकर अचानक आसन से उठकर राम ने उनको प्रणाम करके, उनको आसन देकर, सभी का अलग-अलग पूजन (सम्मान) किया ॥९॥

स्थित्वासने चिरं ध्यात्वा प्रोवाच मुनिसत्तमान् ।
शृणुध्वं मुनयः सर्वे मदीयं वाक्यमुत्तमम् ॥१०॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सभी मुनियों को आसन में बैठाने के बाद, बहुत देर सोचने के बाद मुनियों को सत्कारित करने वाले भगवान राम ने कहा कि हे सभी ऋषि मुनिगण, मेरे उत्तम वाक्य सुनिये ॥१०॥

मया विसृष्टस्तुरगो गृहीतः केन रक्षसा ।
किंकर्तव्यं मया ह्यत्र भवद्भिस्तद्विधीयताम् ॥११॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—अश्वमेध यज्ञ करने के प्रसङ्ग में मैंने जो विशिष्ट अश्व भेजा था, उसे किसी राक्षस ने पकड़ लिया है, इस सन्दर्भ में मुझे अब क्या करना चाहिए, आप सभी लोग बताइये ॥११॥

रामस्य वचनं श्रुत्वा जाबालिर्वाक्यमब्रवीत् ।
रामचन्द्र महाबाहो शृणु मद्वचनं हितम् ।।१२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—राम के वचनों को सुनकर महर्षि जाबालि ने कहा कि हे महाबाहुराम ! मेरे हितकारी वचन सुनो ।।१२।।

कश्यपस्य सुतो दित्यां सहस्रवदनोऽभवत् ।
स एवोग्रं तपस्तप्त्वा सम्यग्दत्तवरः सुरैः ।।१३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—महर्षि कश्यप एवं उनकी पत्नी दिति से उत्पन्न सहस्त्रवदन (राक्षस) पैदा हुआ था। उसने उग्र तपस्या करके, देवताओं के द्वारा अनेक वरदान प्राप्त किये हैं ।।१३।।

जित्वा त्रिलोकान् दैत्येन्द्रो ह्यष्टौ दिक्पालकानपि ।
मुक्तिकामस्तपश्चक्रे वत्सराणां सहस्रकम् ।।
तदा तार्क्ष्यें समारुह्य आविरासीद्रमापतिः ।।१४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उस दैत्यराज ने तीनों लोकों को जीतकर, अष्ट दिग्पालों को भी पराभूत कर दिया है। (अपनी राक्षस योनि से) मुक्ति की कामनावश उसने हजारों वर्ष तपस्या की, तब गरुड़ में सवार होकर रमापति विष्णु उसके पास आये ।।१४।।

विष्णुरुवाच

किमर्थं तप्यसे दैत्य ब्रूहि सर्वमशेषतः ।
अभीष्टं तव दास्यामि तपसा तोषितोऽस्म्यहम् ।।१५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—विष्णु जी बोले—हे दैत्यराज ! तुम इतनी बड़ी तपस्या क्यों कर रहे हो? सम्पूर्ण तथ्यों को बताओ। तुम्हारा जो भी अभीष्ट होगा, वह मैं तुम्हें प्रदान करूँगा; क्योंकि मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ ।।१५।।

इत्युक्तो स हि दैत्येन्द्रस्तं प्राह रघुपुङ्गवः ।
मुक्तिकामो ह्यहं विष्णो दातव्यं त्वत्पदं मम ।।१६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे रघुनन्दन ! विष्णु के ऐसा कहने पर वह दैत्यराज भगवान विष्णु से बोला कि हे विष्णु जी ! मैं मोक्ष चाहता हूँ और आप मुझे अपना पद (विष्णुगामी) विष्णुधाम दे दीजिये ।।१६।।

इति तद्वचनं श्रुत्वा विष्णुः प्राहासुरं पुनः ।
भो दैत्य मानुषो भूत्वा दास्येऽहं तव काङ्क्षितम् ।।१७।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—दैत्यराज के ऐसे वचन सुनकर भगवान विष्णु ने फिर उस राक्षस से कहा कि हे दैत्य ! मनुष्य बनकर ही मैं तुम्हें तुम्हारी इप्सित वस्तु दे पाऊँगा ॥१७॥

कुले दशरथस्याशुर्मम जन्म भविष्यति ।
तस्मिन् जन्मनि ते हत्वा रणेऽहं दैत्यवल्लभ ।।१८।।
शेषत्वं ते प्रदास्यामि शयन मे भविष्यसि ।
मदीयं शयनं भूत्वा मदीयं स्थानमेष्यसि ।।१९।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—मेरा जन्म जब दशरथ के उत्तम कुल में होगा, उसी जन्म में हे दैत्यवल्लभ! युद्ध में मैं तुम्हें मारकर, तुम्हारा शेषत्व मैं तुम्हें प्रदान करूँगा, तब तुम मेरे शयन हेतु शय्या बनोगे। मेरे शयन का स्थान बनकर तुम मेरे स्थान को प्राप्त करोगे ॥१८-१९॥

इतीरितस्त्वया राम दैत्येन्द्रः स्वपुरं ययौ ।
त्वदागमनमाकांक्षन्नास्ते चित्रवतीपुरे ।।२०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे विष्णु रूपधारी राम! आपके ऐसा कहने पर वह दैत्यराज अपनी पुरी (नगरी) चला गया और इस समय उसी चित्रवतीपुरी में आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है ॥२०॥

तस्मिन् स पुष्पकरद्वीपे शुद्धपाथोधिवेष्टिते ।
मरणार्थिनोऽस्य दूतो रक्ताक्ष इति विश्रुतः ।।२१।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—शुद्ध एवं साफ सुथरे मार्गों से युक्त उसी पुष्कर द्वीप में मरने वाले इस दैत्यराज सहस्त्रकण्ठ का दूत रहता है, जो रक्ताक्ष नाम से प्रसिद्ध है ॥२१॥

चोदितो दैत्यराजेन गृहीत्वा तुरगं ययौ ।
भवान् हि पुष्पकारूढः सुग्रीवादिगणान्वितः ।।२२।।
गत्वा तं पुष्पकरं द्वीपं जित्वा शत्रुं रणेऽधुना ।
देवतानां सुखं कृत्वा गृहीत्वा तुरगं पुनः ।।२३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—दैत्यराज (सहस्त्रग्रीव) के कहने पर ही उनका दूत रक्ताक्ष अश्वमेध के घोड़े को पकड़ कर ले गया है। इस समय आपको पुष्पकविमान पर आरूढ़ होकर सुग्रीव आदि सुभट योद्धाओं के साथ, उस पुष्कर द्वीप जाकर, शत्रु को युद्ध में हराकर देवताओं को सुख देने वाले उस अश्वमेधीय अश्व को पुनः ग्रहण करना चाहिए ॥२२-२३॥

अयोध्यापुरमागत्य कुरु भूयो महाक्रतुम् ।
सहस्रास्यस्त्व (या) सोऽपि निर्जितः शेषतां गतः ।।२४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे प्रभु ! अयोध्यापुरी में आकर के फिर से आप बहुत बड़ा यज्ञ करें । सहस्रों अश्वमेध यज्ञ करके, आप शेष पृथ्वी को भी जीतें ।।२४।।

सहस्रफणवान् भूत्वा तव शय्या भविष्यति ।
मयोक्तं सर्वमेतद्धि कुरु यत्नमतन्द्रितः ।
इत्युक्त्वा विररामाथ जाबालिर्भगवानृषिः ।।२५।।

शैवरामायणे पार्वतीशङ्करसंवादे सहस्रकण्ठचरिते तृतीयोऽध्यायः ।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(वह दैत्यराज सहस्रकण्ठ) हजारों फनवाला होकर (शेषनाग) आपकी शय्या बनेगा । मेरे द्वारा जो कहा गया है, हे आलस्य-विलीन राम ! आप सभी प्रकार का प्रयत्न कीजिये । भगवान राम से ऐसा कहकर जाबालि ऋषि चुप हो गये ।।२५।।

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का सहस्रकण्ठचरित नामक तीसरा अध्याय समाप्त हुआ ।

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीशङ्कर उवाच

जाबालेस्तु वचः श्रुत्वा राघवः परवीरहा।
जाबालिनञ्च सम्पूज्य सर्वान् ऋषिगणान् तथा।।१।।
निर्वर्त्य सर्वान् राजर्षीन् सोदरैः सहितोऽनघः।
सस्मार पुष्पकं रामः स्मरणेनाययौ च तम्।।२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शिव बोले कि हे पार्वती! महर्षि जाबालि के वचनों को सुनकर श्रेष्ठ वीर राम ने महर्षि जाबालि सहित सम्पूर्ण ऋषियों को पूजित कर सम्पूर्ण राजर्षियों को ससम्मान लौटाकर (अनघः) विष्णु के अंश भगवान राम ने पुष्पकविमान का स्मरण किया और उनके स्मरण करते ही वह राम के पास पहुँच गया।।१-२।।

दृष्ट्वा तत्पुष्पकं राम आरुरोह स सानुजः।
सुग्रीवो वानरैः सार्द्धमाञ्जनेयाङ्गदादिभिः।।३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उस पुष्पक विमान को देखकर राम अपने अनुजों सहित चढ़ गये। उनके साथ वानरों सहित सुग्रीव, हनुमान एवं अंगद भी चढ़े।।३।।

बिभीषणोऽपि रक्षोभिः सायुधैः शतकोटिभिः।
नानादेशस्थिताः ये च नानाद्वीपनिवासिनः।।४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—विभीषण भी सैकड़ों कोटियों वाले आयुधों से युक्त सेना के साथ पुष्पक विमान में आरूढ़ हुए, जिसमें अनेक देशों एवं अनेक द्वीपों के रहने वाले लोग शामिल थे।।४।।

हस्त्यश्वरथपादान्ता आरुहन् पुष्पकं तदा।
अथ रामो महातेजा ययौ चित्रवतीं पुरीम्।।५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हाथी, घोड़े, रथ, पैदल सैनिक सभी उस समय पुष्पक विमान पर चढ़ गये। इसके बाद महान यशस्वी राम ने चित्रवतीपुरी की ओर प्रस्थान किया।।५।।

तत प्राकारशोभाभिरग्निज्वालामिवस्थिताम्।
द्वात्रिंशद्वारसंयुक्तां वातायनशतैर्युताम्।।६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इस चित्रवती पुरी के प्राकार (महल) इस प्रकार शोभाराशि से युक्त होकर चमक रहे थे, जैसे कि वह अग्नि ज्वाला के बीच अवस्थित हों। उस चित्रवतीपुरी में आने जाने के बत्तीस द्वार थे, साथ ही सभी महल सैकड़ों झरोखों से युक्त थे ॥६॥

वीक्ष्य विस्मयमापन्नः पुरद्वारमुपागमत्।
चित्रवर्णशुकाङ्गः सन् प्राकारान् तानलङ्घयत् ॥७॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—चित्रवती पुरी को देखकर सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये एवं उसके द्वार के पास पहुँचे। उनमें चित्रवर्ण (हनुमान) शुक का रूप धारण कर चित्रवती पुरी के प्राकार को लाँघ गया अर्थात् वहाँ पहुँच गया ॥७॥

गत्वा तत्पुरतः स्थित्वा सौधोपरि समीरजः।
शुकश्चचार तं दैत्यं लोभयन् देहकान्तिभिः ॥८॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—वह वायु पुत्र हनुमान (शुक) उस पुरी में जाकर, उसके सौधों[1] (महलों) में स्थित हो गया। वह शुक इन महलों में जब घूम रहा था, तो अपनी देहकान्ति से तभी राक्षसों को लुभा रहा था, अर्थात् राक्षसगण उसकी देहकान्ति को देखकर मोहित हो गये ॥८॥

सहस्रकण्ठो दैत्येन्द्रो मन्त्रिभिः परिवेष्टितः।
स्थित्वा सभायां पक्षीन्द्रं ददर्श शुकरूपिणम् ॥९॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—मन्त्रियों से घिरे हुए दैत्यराज सहस्रकण्ठ, उस समय अपनी राजसभा में बैठे हुए थे, उन्होंने भी शुकरूपधारी (हनुमान) को देखा ॥९॥

चित्रवर्णशुकं वीक्ष्य लोहिताक्षमथाब्रवीत्।
कोऽयं शुकश्चित्रवर्णः क्वागतस्तु किमागतः ॥१०॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इसके बाद चित्रवर्ण शुक (तोते) को देखकर लोहिताक्ष ने कहा कि यह चित्रवर्ण शुक कौन है? यह कहाँ से आया है और किसलिए आया है? ॥१०॥

प्रेषितः केन प्रष्टव्यो गृहीतव्योऽधुना त्वया।
इति तेन समादिष्टो लोहिताक्षोऽब्रवीच्छुकम् ॥११॥

---

१. सौधवासमुटजेन विस्मृतः संचिकाय फलनिःस्पृहस्तपः—रघुवंश, कालिदास, १९/२, ७/५, १३/४०।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इसके बाद उसने शुक से पूछा कि तुम्हें किसने भेजा है? इसको पकड़कर इस समय पूछना चाहिए। इस प्रकार उस दैत्यराज के आदेश पर लोहिताक्ष ने शुक से पूछा ॥११॥

कस्माद्देशादागतोऽसि प्रेषितः केन साम्प्रतम्।
इन्द्रेण हव्यवाहेन यमेन वरुणेन वा ॥१२॥
वायुना नैर्ऋतेनाथ शूलिना धनदेन वा।
कोऽसि त्वं ब्रूहि तत्त्वेन दूतधर्मेण भो शुक ॥१३॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे शुक! तुम किस देश से यहाँ आये हो? इस समय तुम्हें यहाँ किसने भेजा है? इन्द्र ने, अग्नि ने, यम ने, वरुण ने, वायु ने, नैर्ऋत्यनाथ (राक्षस), शिव ने अथवा कुबेर ने। तुम कौन हो? दौत्यधर्म निभाने के लिए तुम सभी बातें सही-सही सार रूप में बताओ ॥१२-१३॥

इत्युक्तो मारुतिस्तत्र लोहिताक्षेण पार्वति।
हनूमान् प्रत्युवाचाथ सहस्रग्रीवराक्षसम् ॥१४॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—शिव जी ने कहा कि हे पार्वती! लोहिताक्ष के ऐसा कहने पर शुकरूपधारी वायुपुत्र हनुमान ने सहस्रग्रीव राक्षस को उत्तर दिया ॥१४॥

सहस्रकण्ठदैत्येन्द्र मदीयागमनं शृणु।
रामो दाशरथिः श्रीमान् रावणासुरमर्दनः ॥१५॥
अकरोद् हयमेधं यो तस्याश्वं भरतो विभुः।
सञ्चचार पृथिव्यां हि यज्ञीयाश्वस्तदागमत् ॥१६॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे दैत्यराज सहस्रकण्ठ! अब मेरे यहाँ आने का कारण सुनो। रावण नाम के राक्षस का मानमर्दन करने वाले महाराज दशरथ के यशस्वी पुत्र भगवान राम, अश्वमेध यज्ञ कर रहे थे। उस अश्व (की रखवाली) के स्वामी राजुकमार भरत थे। वह यज्ञीय अश्व पृथ्वी पर घूम रहा था (जो इस समय तुम्हारे पास है) ॥१५-१६॥

त्वत्पुरे तवदूतेन हृतः किल तवाज्ञया।
तस्मादहं प्रेषितो वै नेतुं चाश्वं त्वदन्तिके ॥१७॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—निश्चित ही तुम्हारी आज्ञा से तुम्हारे दूत ने उसका हरण करके, तुम्हारी पुरी में छिपा रखा है; इसलिए मैं तुम्हारे पास से उस अश्वमेधीय अश्व को लेने के लिए भगवान राम के द्वारा भेजा गया हूँ ॥१७॥

आञ्जनेयोऽस्मि रामस्य दूतोऽहं राक्षसेश्वर ।
स रामः सोदरैः सार्द्धं सुग्रीवो वानरैः सह ।।१८।।
विभीषणो राक्षसैश्च भूपाः द्वीपनिवासिनः !
युष्मत्पुरसमीपे ते आगतः समरैषिणः ।।१९।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे राक्षसराज ! मैं अञ्जनी का पुत्र और भगवान राम का दूत हूँ। वहीं राम अपने भाइयों के साथ-साथ सुग्रीव इत्यादि वानरों सहित तथा राक्षसों सहित विभीषण एवं अन्य द्वीपों के निवासी राजाओं के साथ, तुम्हारे साथ युद्ध की इच्छा रखते हुए तुम्हारी पुरी (नगरी) के समीप आ गये हैं ।।१८-१९।।

रामचन्द्रो महाबाहुः दयां कृत्वा तवोपरि ।
प्रेषयामास सामार्थं मामवेहि निशाचर ।।२०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इसलिए हे निशाचर (राक्षस) ! उस यज्ञीय अश्व को लेने के लिए उन्होंने मुझे भेजा है, यदि तुम ऐसा करते हो, तो महाबाहु (महाबलशाली) राम तुम्हारे ऊपर कृपा करेंगे (तुम्हें छोड़ देंगे) ।।२०।।

एकापराधे सर्वेषां निधनं भविताद्ध्रुवम् ।
अहं तुभ्यं हितं वच्मि शृणु मद्वाक्यमुत्तमम् ।।२१।।
सहस्रकण्ठदैत्येन्द्र (ह)यं तस्मै प्रदापय ।
नो चेत् तव हरिष्यन्ति रामबाणाः शिरांसि ते।।२२।।

इति श्रीशैवरामायणे पार्वतीशङ्करसंवादे सहस्रकण्ठचरिते चतुर्थोऽध्यायः ।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तुम्हारे इस एक अपराध से तुम सभी राक्षसों की मृत्यु निश्चित है । मैं तुम्हें हितकारी बात कहता हूँ; इसलिए मेरे श्रेष्ठ वाक्यों को सुनो (और वैसा ही करो), हे दैत्यराज ! सहस्रकण्ठ ! उस अश्व को राम को लौटा दो, नहीं तो राम के धनुष से निकले हुए बाण तुम्हारे शिरों को काट देंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है ।।२१-२२।।

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का सहस्रकण्ठचरित नामक चौथा अध्याय समाप्त हुआ ।

पञ्चमोऽध्यायः

श्रीशङ्कर उवाच

अथोवाच सहस्रास्यो हनूमन्तमिदं वचः ।
रामः कः को भवानद्य कुत आयासि वानरः ।।१।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान् शङ्कर ने कहा—इसके बाद सहस्रकण्ठ ने हनुमान से कहना प्रारम्भ किया कि राम कौन हैं? आप कौन हैं? हे वानर कहाँ से आये हो ।।१।।

अत्र किं तिष्ठसे मूढ न मोक्ष्ये तुरगं क्वचित् ।
निवेदय त्वं गच्छाद्य तस्मै रामाय मद्वचः ।।२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे मूर्ख ! तुम यहाँ क्यों ठहरे हो ? तुम किसी भी प्रकार घोड़े को नहीं छुड़ा सकते ? यहाँ से जाकर उस राम से तुम मेरे वचनों को निवेदित करो ।।२।।

इत्युक्त्वा राक्षसानाह गृह्यतामेष दुर्मतिः ।
इत्युक्तं तद्वचः श्रुत्वा शुकरूपं विसृज्य सः ।।३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—ऐसा कहकर उसने राक्षसों से कहा कि इस दुष्ट बुद्धिवाले वानर को पकड़ लो। उसके ऐसे वचनों को सुन करके उस शुक ने अपना शुक रूप छोड़कर वानर रूप में (हनुमान) आ गये ।।३।।

खेचरः कपिरूपेण न्यपतत् तस्य मूर्द्धसु ।
पातयित्वा किरीटानि भूषणानि विकीर्य सः ।।४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—बाद में वही शुक रूप से वानर रूप में आकर उन-उन राक्षसों के शिर पर (गिरे) प्रहार किया, उनके मुकुटों को गिरा दिया और अन्य आभूषणों को (तोड़-तोड़कर) फैला दिया ।।४।।

उत्पाट्य स्तम्भमेकं तं ताडयामास मारुतिः ।
एतस्मिन्नन्तरे दैत्या लोहिताक्षादयः कपिम् ।।५।।
मुद्गरैः परिघैस्तीक्ष्णै शूलैः कुन्तैः परश्वधैः ।
बाणैः सन्ताडयामासुः सहस्रग्रीवचोदिताः ।।६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तदनन्तर उस मारुतिनन्दन ने महल का एक स्तम्भ (खम्भा) उखाड़ लिया और उस सहस्रकण्ठ को मारा। इसी बीच

सहस्त्रगीव (सहस्त्रकण्ठ) के द्वारा निर्दिष्ट लोहिताक्ष आदि सभी राक्षस कपि (हनुमान) पर मुद्गर, परिध, तीक्ष्ण शूल, कुन्त, फरसा, बाण आदि से वध हेतु प्रहार किया ॥५-६॥

हनूमानपि बालेन ताडयामास राक्षसान् ।
ततो हनूमान् उधृ (द्ध) त्य रामसन्निधिमाययौ ॥७॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हनुमान ने भी बलपूर्वक उन सभी राक्षसों को मारा। उसके बाद वहाँ से निकलकर वह राम के समीप आये ॥७॥

नमस्कृत्वाथ रामाय सहस्त्रग्रीवभाषितम् ।
न्यवेदयत् स तत्सर्वं श्रुत्वा रामो महाबलः ॥८॥
सुग्रीवपुरमाहूय बलं वानरराक्षसौ ।
विभीषणमथामन्त्र्य ह्युवाच रघुसत्तमः ॥९॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—राम को अभिवादन करके हनुमान ने सहस्त्रकण्ठ के द्वारा कही गयी सम्पूर्ण बातों को राम से निवेदित किया, वह सब सुनकर महाबलशाली राम ने सुग्रीवपुर में वानर, राक्षस एवं सम्पूर्ण सेना को बुलाकर विभीषण के साथ मन्त्रणा करके, भगवान राम बोले ॥८-९॥

गच्छन्तु वानराः सर्वे युद्धाय सह राक्षसैः ।
इत्युक्तास्ते कपिश्रेष्ठाः प्राप्नुयुस्तत्पुरीं ततः ॥१०॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—राक्षसों के साथ युद्ध करने के लिए सभी वानर जायें, राम के ऐसा कहने पर सभी श्रेष्ठ (योद्धा) वानर चित्रवती पुरी पहुँच गये ॥१०॥

शृङ्गारण्यारूह्य कपयः प्राकारानवतीर्य च ।
सिंहनादं ततश्चक्रुः सुग्रीवप्रमुखास्तदा ॥११॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सभी वानर उस नगरी के महलों की चोटियों पर चढ़ गये, महलों पर विखर गये तथा सुग्रीव आदि प्रमुख योद्धाओं ने सिंहनाद किया ॥११॥

सहस्त्रकण्ठानुचरा निर्ययुर्नगरात् ततः ।
गजवाजिरथारूढाः सहस्त्रग्रीवचोदिताः ॥१२॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इसके बाद सहस्त्रकण्ठ के द्वारा निर्दिष्ट उसके सेनानी हाथी, घोड़े एवं रथों पर आरूढ़ (सवार) होकर चित्रवतीपुरी के बाहर निकले ॥१२॥

सिंहनादं प्रकुर्वाणास्तस्थुर्युद्धाभिकांक्षिणः ।
दृष्ट्वाङ्गदः समायातान् सुग्रीवः पवनात्मजः।।१३।।
गजो गवाक्षो गवयः शरभो नीलरम्भकौ ।
सुषेणजीववत्तारमैंदद्विविदधूम्रकाः ।।१४।।
एते चान्ये कपिश्रेष्ठाः पर्वतानपि पादपान् ।
गृहीत्वा संययुस्तत्र तदा रामप्रचोदिताः ।।१५।।
आहवे वानराः सर्वे युद्धं चक्रुः परस्परम् ।
ज्वालामुखेन सुग्रीवो लोहितास्येन चाङ्गदः ।।१६।।
नीलोऽपि तीक्ष्णदंष्ट्रेण रक्ताक्षेणाञ्जनीसुतः ।
पादपै पर्वताग्रैश्च जघ्नुस्ते राक्षसान् बहून् ।।१७।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तदनन्तर युद्ध करने के आकांक्षी योद्धाओं ने सिंहनाद किया। अंगद ने सुग्रीव और हनुमान को साथ-साथ आते हुए देखा। तब राम के कहने पर गज, गवाक्ष, गवय, शलभ, नील, रम्भक, सुषेण, जीव, वत्तार, मैंद, द्विविद, धूम्रक, आदि अन्य वानरश्रेष्ठों ने पर्वतों और वृक्षों को लेकर (उखाड़कर), सम्पूर्ण वानरों को युद्ध करने कं आह्वान किया एवं राम की सेना तथा सहस्रकण्ठ की सेना का आपस में युद्ध प्रारम्भ हुआ। ज्वालामुख के साथ सुग्रीव तथा लोहिताश्व के साथ अंगद, नील के साथ तीक्ष्णदंष्ट्र, रक्ताक्ष के साथ अञ्जनीपुत्र हनुमान का युद्ध शुरू हुआ एवं उन्होंने वृक्षों एवं पर्वतों के अग्रभाग से बहुत से राक्षसों का वध कर दिया ।।१३-१७।।

राक्षसास्ते शरैस्तीक्ष्णैर्निर्जघ्नुः कपिकुञ्जरान् ।
ज्वालामुखो ववर्षाजौ सुग्रीवे शरसन्ततिः ।।१८।।
तानन्तरिक्षे सुग्रीवः पादपैरच्छिनत् तदा ।
ज्वालामुखं च सुग्रीवश्चरणाभ्यामताडयत् ।।१९।।
तस्य पादप्रहारेण ममार स हि राक्षसः ।
रक्ताक्षो मारुतिं तत्र लोहितास्योऽङ्गदं तदा ।।२०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—राक्षसों ने भी तीक्ष्ण बाणों से बहुत से वानरों को मार डाला। ज्वालामुख ने जहाँ अग्निवर्षा की, तो सुग्रीव ने बाणों की वर्षा की। उसके बाद सुग्रीव ने पैरों से मार-मार कर छिन्न-भिन्न कर दिया तथा ज्वालामुख को भी सुग्रीव ने अपने पैरों से मारा। उसके पाद प्रहार से वह राक्षस

(ज्वालामुख) मर गया। तभी रक्ताक्ष एवं हनुमान तथा लोहितास्य और अंगद भी आपस में युद्ध करते देखे गये ॥१८-२०॥

तीक्ष्णदंष्ट्रोऽपि नीलश्च ववर्ष शरसन्ततिम्।
लोहितास्यं बालिपुत्रो मुष्टिना प्रहरद् युधि ॥२१॥
तन्मुष्टिनैव निहतः सोऽपि देहममूमुचत्।
हनूमानपि रक्ताक्षं वालेनावेष्ट्य खेचरः ॥२२॥
भ्रामइ (यि) त्वा पातिते स चूर्णतां समुपागमत्।
नीलोऽपि (व) ज्र (दं) ष्ट्रस्य गृहीत्वा चरणौ तदा ॥२३॥
द्वेधा विभज्य तं वीरं पातयामास भूतले।
एवं विनिहताः सर्वे राक्षसाः कपिभिः (स्त) दा ॥२४॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तीक्ष्णदंष्ट्र ने नील के ऊपर बाणों की वर्षा की एवं युद्ध में लोहितास्य के ऊपर बालिपुत्र अंगद ने मुष्टियों का प्रहार किया। अंगद की मुष्टि प्रहार से वह तीक्ष्णदंष्ट्र मर गया। अर्थात् उसका शरीर पात हो गया। हनुमान ने भी रक्ताक्ष को अपनी पूँछ से लपेटकर आकाश में फेंक दिया। आकाश से घूमते हुए वह पृथ्वी पर गिरा और चूर्ण-चूर्ण हो गया। तभी नील ने भी वजदंष्ट्र के पैरों को पकड़कर, उसे दो भागों में चीर डाला और पृथ्वी पर फेंक दिया। इस प्रकार वानरों के द्वारा सभी राक्षस मार डाले गये ॥२१-२४॥

हतशेषाः समाजग्मुः सहस्रग्रीवसन्निधिम्।
चतुर्णां राक्षसानां वै मरणं ते न्यवेदयन् ॥२५॥
ततः परं राक्षसपुङ्गवानां निशम्य नाशं कपिसैन्यमुख्यैः।
सहस्रकण्ठः प्रलयानलो यथा जाज्वल्यमानः स रणाय निर्ययौ ॥२६॥

इति श्रीशैवरामायणे पार्वतीशङ्करसंवादे सहस्रकण्ठचरिते पञ्चमोऽध्यायः।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—शेष बचे हुए राक्षस सहस्रकण्ठ के पास पहुँचे और चारों तरफ से राक्षसों की मृत्यु होने का समाचार उन्होंने निवेदित किया। इसके बाद वानर सेना के प्रमुखों के द्वारा राक्षसों के विनाश का सुनकर, राक्षसों में श्रेष्ठ सहस्रकण्ठ क्रोधित होकर प्रलयानल की भाँति युद्ध करने लिए निकला ॥२५-२६॥

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का सहस्रकण्ठचरित नामक पाचवाँ अध्याय समाप्त हुआ।

षष्ठोऽध्यायः

शिव उवाच

शृणु प्रिये कथामेतां सहस्रग्रीवराक्षसः ।
श्रोतृणां परमाश्चर्यकारिणीं शुभदायिनीम् ।।१।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शङ्कर ने पार्वती से कहा कि हे प्रिये ! सहस्रग्रीव (सहस्रकण्ठ) राक्षस की यह कथा सुनने वाले के लिए परम आश्चर्य दायिनी होने के साथ-साथ सुख देने वाली भी है ।।१।।

सहस्रकण्ठो दैत्येन्द्रः कोटीनां कोटिभिर्वृतः ।
राक्षसानां च मुख्यानां युद्धे विजयकाङ्क्षिणाम् ।।२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तब दैत्यराज सहस्रकण्ठ करोड़ों राक्षसों एवं प्रमुख राक्षस योद्धाओं के साथ विजय की आकाङ्क्षा से युद्ध में आया ।।२।।

पताकाध्वजमुख्यैश्च मौक्तिकछत्रचामरैः ।
बन्दिमागधसूतैश्च तूर्यघोषैरलङ्कृतः ।।३।।
भेरीमृदङ्गनादैश्च चतुर्वाद्यविघोषितैः ।
नागाश्वरथपादातैः निर्ययौ नगरात्ततः ।।४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उस समय उसके आगे-आगे राक्षसी पताकाएँ एवं ध्वजवाहक, चल रहे थे । उसके ऊपर मोती के छत्र तने थे, चामर हिल रहे थे, बन्दीजन, मागध एवं सूतों के द्वारा उसकी प्रशंसा की जा रही थी, युद्ध में बजने वाले तूर्य का घोष सब जगह परिव्याप्त हो रहा था । भेरी एवं मृदङ्ग के नाद के साथ-साथ चारों प्रकार के विशिष्ट वाद्य बज रहे थे, ऐसा वह राक्षसराज हाथी, घोड़े, रथ, एवं पैदल सैनिकों (से घिरा हुआ) के साथ नगर (चित्रवतीपुरी) से बाहर निकला ।।३-४।।

उल्लङ्घ्य सप्तप्राकारान् योजनानां शतोन्नतान् ।
हस्तान् प्रसार्य संगृह्य सुग्रीवादीनभक्षयत् ।।५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसके बाद वह सहस्रकण्ठ सप्त प्राकारों को पार कर, सैकड़ों योजन अपना विस्तार करके, अपने हाथों को फैला करके सुग्रीव आदि वानरों को पकड़-पकड़ कर खाने लगे ।।५।।

वदनेषु प्रविश्यैते कर्णेभ्यः कपिकुञ्जराः ।
नासिकाभ्यश्च निर्गत्य रामसन्निधिमाययुः ।।६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—वानरों का समूह उसके मुख एवं कानों से प्रवेश करके नासिका (नाक) से निकल-निकल कर राम के समीप पहुँचे ।।६।।

एतस्मिन्नन्तरे देवाः यक्षविद्याधरोरगाः ।
किन्नराः गुह्यकाः सिद्धाः साध्याः किम्पुरुषास्तदा ।।७।।
ब्रह्मर्षयो महर्ष्याद्याः पिशाचाः दैत्यराक्षसाः ।
द्रष्टुं समागताः युद्धं रामसाहस्रकण्ठयोः ।।८।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इसी बीच सभी देवतागण, यक्ष, विद्याधर, नाग, किन्नर, गुह्यक, सिद्ध एवं साध्यगण किम्पुरुष (नुपंसक, हिजड़े), ब्रह्मर्षि, महर्षियों आदि के साथ-साथ पिशाच, दैत्य एवं राक्षस भी राम एवं सहस्रकण्ठ के बीच होने वाले युद्ध को देखने के लिए आ पहुँचे ।।७-८।।

दृष्ट्वा तस्याहवं घोरं बबु (भू) वुर्भयविह्वलाः ।
न शक्नुस्तत्र ते स्थातुं रणभूमिं विहाय वै ।।९।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उस वीर राक्षस के भयंकर युद्ध को देखकर, रामपक्षीय सेना अत्यधिक व्याकुल हो गयी थी, लेकिन फिर भी रणभूमि को छोड़कर वे लोग (दर्शकगण) वहाँ से जाने में समर्थ नहीं हो पा रहे थे, अर्थात् वे वहाँ से जाना नहीं चाहते थे ।।९।।

विमानेष्वपि चारुह्य ह्याकाशे दूरतः स्थिताः ।
सहस्रकण्ठदैत्येन्द्रो गगने ददृशे च तान् ।।१०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—वह दैत्यराज सहस्रकण्ठ विमान में चढ़कर भी, कभी दूर आकाश में खड़ा दिखायी पड़ता था, तो कभी गगन (आकाश) में उन लोगों को नजदीक दिखायी पड़ता था ।।१०।।

एतेऽपि शत्रवो मे वै प्रहरामि समागतान् ।
एवं विचार्य मनसि दुष्टो राक्षससत्तमः ।।११।।
रणभूमिं विहायाशु गतोड्डीय क्षणात्ततः ।
उड्डीयोड्डीय संगृह्य विमानानि तदासुरः ।।१२।।
चिक्षेप भूतले दैत्यो क्रुधा तानहनत्प्रिये ।
ऋषीन् दृष्ट्वा मुमोचान् ब्रह्मर्षीननलप्रभान् ।।१३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सहस्रकण्ठ बोला ! ये सभी मेरे शत्रु हैं और आये हुए मैं सभी लोगों को मार डालूँगा । ऐसा मन में सोचकर वह राक्षसवीर,

तुरन्त रणभूमि को छोड़कर ऊपर उड़ जाता, कभी तुरन्त नीचे आ जाता। ऊपर ही ऊपर उड़ करके वह राक्षस विमानों को इकट्ठा कर लेता। हे प्रिये ! (भगवान शंकर पार्वती से कहते हैं) इसके बाद क्रोधित होकर उन्हें पृथ्वी में फेंक देता, जिससे बहुत से वानर मर जाते। ऋषियों और ब्रह्मर्षियों को देखकर उसने अग्नि-बाण छोड़ा ॥११-१३॥

तदा ह्यनर्थमूलं च राक्षसं भीमविक्रमम्।
अवोचन् ऋषयस्तत्र निर्भयाः गतसाध्वसाः ।।१४।।
शृणु राक्षस दैत्येन्द्र वदामस्ते प्रियं हितम्।
रामो राक्षसनाशार्थं ह्यवतीर्णोऽस्ति भूतले ।।१५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इसके बाद उस भयंकर राक्षस को अनर्थ का मूल समझकर ऋषियों ने कहा कि अब साधु (सज्जन) लोग निर्भय हो जाँये। हे दैत्येन्द्र सहस्रकण्ठ ! सुनो, हम तुम्हें प्रिय एवं हितकर बातें कह रहे हैं कि राम ने राक्षसों का विनाश करने के लिए पृथ्वी में अवतार लिया है ॥१४-१५॥

दशग्रीवस्य हननं सपुत्रं सहबान्धवम्।
कृतं रामेण च पुरा श्रुतं वाल्मीकिनोदितम् ।।१६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—दशग्रीव (रावण) का वध, उसके पुत्र (मेघनाद) एवं भाई (कुम्भकर्ण) सहित राम के द्वारा पहले किया गया है, ऐसा सुना जाता है और महर्षि वाल्मीकि ने इस प्रसंग को रामायण में कहा (बताया) भी है ॥१६॥

शतग्रीवस्य मरणं यस्यानुचरहस्ततः।
पाताललङ्के यज्जातं वसिष्ठस्य मुखाच्छ्रुतम् ।।१७।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसके बाद शतग्रीव का उसके अनुचरों सहित मरण एवं पाताल लङ्का में जो (अहिरावण का वध) कुछ हुआ, उसे वशिष्ठ के मुख से सुना भी गया है ॥१७॥

शाकद्वीपनिवासी च रावणो शतकन्धरः।
नाशितः सीतया पत्न्या अगस्त्येनोदितं पुरा ।।१८।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—शाकद्वीप का निवासी शतकन्धर रावण, राम की पत्नी सीता के द्वारा विनाश को प्राप्त हुआ, ऐसा प्राचीनकाल में अगस्त्य ऋषि ने बतलाया है ॥१८॥

रामायणेऽद्भुते जातो रावणस्य वधोद्यमः।
एवं विधाश्च बहवो राक्षसाः पिशिताशनाः ।।१९।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—रामायण में रावण को मारने के लिए बहुत से उद्यमों का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार बहुत से राक्षस एवं पापी लोग मारे जा चुके हैं ॥१९॥

नाशित (तः) (ते) न रामेण तस्मात् त्वं सङ्गरं त्यज।
यज्ञीयाश्वं तस्य देहि यदि जीवितुमिच्छसि ॥२०॥
इति ते ह्यब्रुवन् सर्वे ऋषयश्च तपोधनाः।
ऋ (षी) णां वचनं श्रुत्वा प्रोवाच वचनं तदा ॥२१॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे सहस्रकण्ठ ! तुम भगवान राम के द्वारा न मारे जाओ, इसलिए तुम युद्ध करना छोड़ दो और यदि तुम जीना चाहते हो, तो वह अश्वमेधीय यज्ञ उस (राम) को दे दो। ऐसा सभी तपस्वियों एवं ऋषियों ने कहा, तब ऋषियों के वचन सुनकर सहस्रकण्ठ ने कहा ॥२०-२१॥

शृणुध्वम् ऋषयः सर्वे यद्यसौ निहनिष्यति।
न मेऽस्ति भीश्च मरणे यदि हन्ता ममास्तु वै ॥२२॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे सभी ऋषियों सुनो ! यदि आज वह (राम) मुझे मार डालेगा, तो मुझे मरने का कोई भय नहीं है, भले ही आज वह मेरा हन्ता बन जाये ॥२२॥

विनाशी (शो) विग्रहोऽस्तीह तस्यार्थे किं विलापनम्।
वीराणां च स्वभावो हि न पश्चात् परिवर्तनम् ॥२३॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—यह शरीर तो विनाशी एवं विग्रहशील (मरणशील) है ही, उसके लिए विलाप ही क्यों किया जाये? वीरों का तो यह स्वभाव ही है कि वह अपने कार्य से परिवर्तित नहीं होते अर्थात् यदि युद्ध में आ गये, तो फिर पीछे नहीं मुड़ते या मुड़कर नहीं देखते ॥२३॥

इति सहस्रकण्ठवचो निशम्य मुनयो विमला विचार्य मानसे।
न समर्था भवितव्यनिवारणे कथनं विफलं च चास्मदीयानाम् ॥२४॥

इति श्रीशैवरामायणे शिवपार्वतीसंवादे सहस्रकण्ठ-ऋषिप्रस्तावे षष्ठोऽध्यायः।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सहस्रकण्ठ के ऐसे वचनों को सुन करके स्वच्छ मन वाले मुनियों ने अपने मन में विचार किया कि हम लोग भवितव्यता रोकने में समर्थ नहीं हैं, तब अब हमारा कथन विफल नहीं होगा ॥२४॥

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का सहस्रकण्ठ ऋषि प्रस्ताव नामक छठा अध्याय समाप्त हुआ।

सप्तमोऽध्यायः

शिव उवाच

सहस्रकण्ठदैत्योऽपि परसैन्यमुवाच ह ।
पराक्रमं प्रकुर्वन्तु यत्साहाय्येन चागताः ।।१।।
इति दैत्यवचः श्रुत्वा भरताद्याः महाबलाः ।
युद्धं चक्रुस्तदा ते वै सहसैन्यैः पुरस्कृताः ।।२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शिव पार्वती से बोले ! इसके बाद सहस्रकण्ठ ने दूसरी सेनाओं से कहा कि जो-जो राम की सहायता के लिए आये हैं आप लोग पराक्रम दिखाइये। इस प्रकार दैत्यराज सहस्रकण्ठ के वचनों को सुनकर भरतादि महाबलशाली लोगों ने, अपने-अपने सैनिकों के साथ उत्साह-पूर्वक युद्ध प्रारम्भ किया ।।१-२।।

क्षणेन सर्वसैन्यं तद् भक्षित तेन रक्षसा ।
भरतेनोदितं सर्वं रामायामिततेजसे ।।३।।
स्वसैन्यं भक्षितं श्रुत्वा राघवः परवीरहा ।
आहूय वानरेन्द्रञ्च हनूमन्तमथाङ्गदम् ।।४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—एक क्षण में ही वह राक्षस (सहस्रकण्ठ) सम्पूर्ण सेना को खा गया। तब भरत ने तेजस्वी राम से सभी बातें बतायीं। अपनी सेना को सहस्रकण्ठ के द्वारा खा लिये जाने को सुनकर, परमवीर राम ने तब वानरेन्द्र (सुग्रीव), हनुमान एवं अंगद को बुलाया ।।३-४।।

पुष्पके तान् समारोप्य स्वयमप्यारुरोहतम् ।
सर्वेऽपि पुष्पके स्थित्वा युद्धं कर्तुं प्रचक्रमुः ।।५।।
अन्तरिक्षगते तस्मिन् पुष्पके कामगे शुभे ।
रामो विभीषणं प्राह वचनं मधुराक्षरम् ।।६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उन सभी को पुष्पक विमान में चढ़ाकर और स्वयं उस पर चढ़ गये। सभी लोग पुष्पक विमान में सवार होकर युद्ध करने लगे। उसके अन्तरिक्ष में जाने पर राम की इच्छा से चलने वाला पुष्पक विमान भी उसके पीछे हो लेता। तब राम ने विभीषण से मधुर अक्षरों (वाणी) में कहा ।।५-६।।

विभीषणासुरश्रेष्ठ पश्य साहस्रकन्धरम् ।
कुम्भकर्णोऽतिकायश्च दशास्यः शतकन्धरः ।।७।।
एतेऽपि राक्षसाः सर्वे युद्धाय कृतनिश्चयाः ।
दृश्यन्तेऽत्र न सन्देहो कुरु युद्धं ममाज्ञया ।।८।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे राक्षसों में श्रेष्ठ विभीषण ! सहस्रकण्ठ को देखो ! विशालकाय, कुम्भकर्ण, दशासन (रावण), शतकन्धर ये सभी राक्षस की निश्चयपूर्वक युद्ध करने आये थे, लेकिन आज वह दिखायी नहीं पड़ रहे हैं। इसलिए, सन्देह मत करो, मेरी आज्ञा से युद्ध करो ।।७-८।।

अनुज्ञातः स रामेण ह्यन्तरिक्षगतोऽब्रवीत् ।
विभीषणोऽहं दैत्येन्द्र युद्धं कुरु मया सह ।।९।।
इत्युदीर्य शरान् तीक्ष्णान् स ववर्ष बहनपि ।
विभीषणविमुक्तान्स्तान्छ (ञ्छ) रान् श्चिच्छेद सायकैः ।।१०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(वह) विभीषण राम से आज्ञा पाने के बाद अन्तरिक्ष में जाकर बोला कि हे दैत्येन्द्र सहस्रकण्ठ ! मैं विभीषण हूँ, मेरे साथ युद्ध करो। ऐसा कह करके उसने राक्षस के ऊपर बहुत से तीक्ष्ण बाणों की वर्षा की। सहस्रकण्ठ ने विभीषण द्वारा छोड़े गये बाणों को अपने धनुष से निकले बाणों से टुकड़े-टुकड़े कर दिया ।।९-१०।।

ततः परं तु शत्रुघ्नो भरतो लक्ष्मणो धनुः ।
सज्जं कृत्वा प्रमुमुचुः शरवर्षाणि संयुगे ।।११।।
सहस्रकण्ठस्तान् छित्वा नाराचान् स्वायुधैश्च ह ।
विभीषणं समालिङ्ग्य वध्वो (बद्ध्वो) त्क्षिप्य करैर्भुवि।।१२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसके बाद शत्रुघ्न, भरत एवं लक्ष्मण ने धनुष बाण तैयार करके एक साथ उस राक्षस के ऊपर बाणों की वर्षा की। सहस्रकण्ठ ने उन सभी बाणों को अपने आयुधों से तोड़ डाला और विभीषण को आलिंगित कर जमीन पर पटक दिया ।।११-१२।।

पादाभ्यां घट्टितो तेन मूर्च्छितोऽभूद् विभीषणः ।
धृत्वा धनूंषि हस्तानां सहस्रेण तदासुरः ।।१३।।
शरान् हस्तसहस्रेण ववर्ष कपिकुञ्जरान् ।
सुग्रीवमङ्गदं धूम्रं नलं नीलं समीरजम् ।।१४।।

तारं दधिमुखं रम्भं सर्वान् वानरपुङ्गवान्।
पातयामास विशिखैरनेकैः सः पृथक् पृथक् ।।१५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—जमीन पर गिरे हुए विभीषण को सहस्रकण्ठ ने अपने पैरों से घिसा (मारा) जिससे विभीषण मूर्च्छित हो गया। तब उस असुर (राक्षस) ने हजारों हाथों से धनुष को पकड़ा। हजार हाथों से तब उस असुर ने बानरों की सेना पर बाणों की वर्षा की। सुग्रीव, अंगद, धूम्र, नल, नील, हनुमान, तार दधिमुख, रम्भ आदि सभी वानरवीरों को उसने अपने तीखे विषाक्त बाणों से अलग-अलग युद्ध में गिरा दिया ।।१३-१५।।

संधाय विविधास्त्राणि शत्रुघ्नं भरतं तदा।
लक्ष्मणञ्च महावीरो ववर्षाम्बुदसन्निभः ।।१६।।
एकं दश शतं तेषु सहस्रमयुतं तदा।
नियुतं प्रयुतं कोटिप्रकोटीः शतकोटिकाः ।।१७।।
अर्बुदन्यर्बुदन्येव सन्धाय विशिखान्धनौ।
शिरोऽङ्घ्रिपादपर्यन्तं भेदयामास वानरान् ।।१८।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तब भरत और शत्रुघ्न ने विविध अस्त्रों का संधान करके तथा महावीर लक्ष्मण ने वर्षा के समान उस पर बाणों की वर्षा कर दी। लेकिन उस राक्षस ने एक के ऊपर दश, दश के ऊपर सौ, सौ के ऊपर हजार, हजार के ऊपर लाख, लाख के ऊपर करोड़, करोड़ के ऊपर दस करोड़, दस करोड़ के ऊपर अरब, अरब के ऊपर दस अरब बाणों का सन्धान करके वानरों को शिर से पैर पर्यन्त भेद डाला ।।१६-१८।।

भरतस्य च सौमित्रेः शत्रुघ्नस्य व्यदारयत्।
आभान्ति शरनिर्भिन्नाः पुष्पिता इव किंशुकाः ।।१९।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसने भरत, लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न को भी घायल किया। उन सभी के ऊपर बाण ऐसे दिख रहे थे जैसे वर्षा ऋतु में गिरे हुए किंशुक के फूल हों ।।१९।।

तदा लक्ष्मणशत्रुघ्नभरताः समितिञ्जयाः।
प्रमाणातीते सर्वाङ्गे सहस्रशतयोजने ।।२०।।
मेरुर्नियुतविस्तारयोजनो दैत्यवल्लभः।
राक्षसेन्द्रोऽद्रिसङ्घातवेष्टितः स इवाबभौ ।।२१।।

तस्य गात्रसमाश्लिष्टा वानरा सम्प्रकाशिरे।
सुरालयसमाश्लिष्टां लोका इव रणाङ्गणे।।२२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तभी लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भरत एवं हनुमान ने उसके हजार सौ योजन लम्बे प्रमाणातीत सम्पूर्ण शरीर में प्रहार किया, लेकिन सुमेरु पर्वत के समान उस राक्षस ने अपने शरीर को विस्तारित कर लिया। वह राक्षसराज उस समय पर्वतों को अपने चारों ओर लपेटे हुए प्रतीत हो रहा था, उसके शरीर के लिपटे हुए वानर चारों तरफ गिर-पड़ रहे थे। उस समय युद्ध में सम्पूर्ण लोक उसके मुख में समाविष्ट हो रहे थे ॥२०-२२॥

सहस्रकण्ठः संगृह्य पाणिभिस्तानभक्षयत्।
अर्दयत् पादसङ्घातैर्दिव्यास्त्रैरप्यपातयत्।।२३।।
सहस्रबाणैर्विव्याध सुग्रीवं सविभीषणम्।
भरतं लक्ष्मणं तत्र शत्रुघ्नं युगपत् पृथक्।।२४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सहस्रकण्ठ उस सम्पूर्ण वानरी सेना को हाथों से पकड़-पकड़ कर खा रहा था। बचे हुए वानरों को वह पैरों के संघात से कुचल रहा था एवं दिव्य अस्त्रों से मार कर गिरा रहा था। उसने सुग्रीव एवं विभीषण को हजारों बाण मार कर घायल कर दिया तथा भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न से एक साथ लड़ रहा था ॥२३-२४॥

तस्य तीक्ष्णशराघातैः सर्वे निपतिता भुवि।
पातइ (यि) त्वा चमूं सर्वां ससुग्रीवां सराघवाम्।।२५।।
सराक्षसां तदा कृत्वा सहस्रग्रीवः आबभौ।
दृष्ट्वा रामो महातेजाश्चमूं विस्मयमागतः।।२६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसके तीक्ष्ण बाणों के आघात से सभी जमीन में गिर गये। उसने सुग्रीव सहित राम की सम्पूर्ण सेना को जमीन पर गिरा दिया। तभी राक्षसों के साथ सहस्रग्रीव भी वहाँ आ पहुँचा। वह महातेजस्वी राम को देखकर एवं सेना को देखकर आश्चर्यचकित हो गया ॥२५-२६॥

ससज्जं धनुरादाय सशरोऽभिमुखो ययौ।
एवं समुद्यतं वीरं राघवं रणकोविदम्।।२७।।
समालक्ष्य तदा धीरः प्रलयाम्बुधरो यथा।
आजगाम तदा गर्जन् ज्वलज्वा (ज्ज्वा) लानलोपमः।।२८।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—धनुष की प्रत्यञ्चा चढ़ाकर, राम की तरफ बाण का मुख करके वह दौड़ा। तभी युद्ध विजेता वीर राम भी युद्ध करने के लिए समुद्यत हुए। तभी उस धीर योद्धा (सहस्रगीव) ने प्रलय के समान बादलों की गर्जना करते हुए, ज्वालामुखी के समान राम के समीप पहुँचा ॥२७-२८॥

कृताट्टहासवदनः कुर्वन् रामस्य विस्मयम्।
दिव्यास्त्रशस्त्रसंयुक्तः प्रपेदे तं रघूत्तमम् ॥२९॥
त्रैलोक्यवीरेण रघूत्तमेन वै मृगाधिपेनैव सहस्रकन्धरः।
अयोधने मत्तगजेन्द्रवत्तदा समाययावात्तधनुः शरासनः ॥३०॥

इति श्रीशैवरामायणे पार्वतीश्वरसंवादे सप्तमोऽध्यायः।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसके अट्टहास को देखकर, राम को बड़ा आश्चर्य हुआ। तभी वह दिव्य-अस्त्रों से सुसज्जित होकर रघुकुलभूषण राम के पास पहुँचा। त्रैलोक्य वीर राम के सामने सहस्रकन्धर वैसे ही पहुँचा जैसे शिकारी के सामने हिरण। तब राम ने मतवाले हाथी के समान धैर्यशाली बनकर धनुष को अपने हाथ में संभाला ॥२९-३०॥

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का
पार्वती ईश्वर संवाद नामक सातवाँ अध्याय समाप्त हुआ।

अष्टमोऽध्यायः

ईश्वर उवाच

सहस्रकन्धरो हस्तैर्धृतबाणशरासनः ।
रामस्याभिमुखे स्थित्वा जगाद परुषाक्षरम् ।।१।।
त्यक्त्वा राज्यं भवान् राम दण्डकारण्यमाश्रितः ।
विराधञ्च कबन्धञ्च हत्वा प्राप्य समीरजम् ।।२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(अनन्तर में पुनः) ईश्वर (शिव) ने पार्वती से कहा—तदनन्तर सहस्रकण्ठ हाथ में धनुष बाण लेकर राम के सम्मुख आकर खड़ा हुआ एवं कठोर शब्दों में बोला कि हे राम ! आपने राज्य को छोड़कर दण्डकारण्य का आश्रय लिया और हनुमान को प्राप्त करके आपने विराध एवं कबन्ध को मार डाला ।।१-२।।

सुग्रीवसहितः संख्ये बालिनं बलशालिनम् ।
हत्वा तं वानरैर्युक्तः सीतायाः कुशलं तदा ।।३।।
ज्ञात्वा जलनिधिं तीत्वां रुन्धन् लङ्कापुरीं ततः ।
जित्वा दशास्यं सङ्ग्रामे पौलस्त्यं लोककण्टकम् ।।४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सुग्रीव के साथ मिलकर आपने बलशाली बालि का वध किया एवं कुशलता पूर्वक वानरों के साथ सीता का भी कुशल किया अर्थात् उसे भी रावण के चंगुल से छुड़ा लिया। समुद्र के विषय में जानकर, उसे तैरकर, उसके बाद लङ्कापुरी को भी घेर लिया और संसार के लिए कांटा स्वरूप चुभने वाले पौलस्त्य रावण को भी युद्ध में जीत लिया ।।३-४।।

अयोध्यां सीतया सार्द्धं प्राप्तवानसि राघव ।
दशास्यं प्राकृतं जित्वा बलवानिति गर्वितः ।।५।।
द्वीपान् तीर्त्वोदधीन् सर्वान् किमायासि ममान्तिकम् ।
इन्द्रादिलोकपालांश्च जित्वाहं रणकर्मणि ।।६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उसके बाद हे राघव ! आप सीता के साथ अयोध्या पहुँचे। दशानन रावण को जीतकर, आप बहुत बलवान हैं, ऐसा गर्व कर रहे हैं। विभिन्न द्वीपों एवं समुद्र को लाँघकर इन सभी को लेकर मेरे पास क्यों आये हो? युद्ध विजेता मैंने तो इन्द्रादि लोकपालों को भी जीत लिया है ।।५-६।।

प्राकृतानि हता ये ये राक्षसाः रावणादयः ।
मन्यसेऽमुं तथा राम प्रख्यातबलपौरुषम् ।।७।।
अवेहि त्वं रणे शूरं सहस्रग्रीवमुत्तमम् ।
त्वदीयाश्वं च मोक्ष्येऽहमनुजानामि त्वाधुना ।।८।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—रावण आदि जो-जो राक्षस मारे गये, वे तो स्वाभाविक रूप से मृत्यु को प्राप्त हुए। हे राम ! क्या तुम मुझे उसी प्रकार का समझ रहे हो, मेरा बल और पराक्रम तो सर्वत्र विख्यात है। तुम अब उत्तम शूरवीर, सहस्रग्रीव को युद्ध में देखो। तुम्हारे अश्वमेधीय अश्व को मैं नहीं छोड़ूँगा। अब मैं देखता हूँ तुममें कितना बल है ? ॥७-८॥

गच्छेदानीं बलैर्युक्तः त्वदीयं पत्तनं पुनः ।
पश्यतस्ते न चेत्सर्वं बलमत्र वनौकसाम् ।।९।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—मैं इस समय सेना सहित तुम्हारी नगरी अयोध्यापुरी तक जाऊँगा अर्थात् उसे भी अपने अधीन कर लूँगा। हे वनवासी राम ! अभी तक तुमने मेरी सम्पूर्ण ताकत नहीं देखी है ॥९॥

भक्षयिष्याम्यहं त्वाद्य रणे सभ्रातृकं नृप ।
निशम्य राघवो धीरः सहस्रग्रीवभाषितम् ।।१०।।
अब्रवीद् राक्षसं वाक्यं सहस्रग्रीवमुद्धतम् ।
त्वं मुधा कत्थ (त्थ्य) से दैत्य दर्शयस्व पराक्रमम् ।।११।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे राजन्! (राम) आज मैं युद्ध में तुम्हारे भाई सहित तुम्हें खा जाऊँगा। सहस्रग्रीव (सहस्रकण्ठ) के ऐसे वचन सुनकर धीर एवं बलशाली राम ने कहा कि हे राक्षस सहस्रग्रीव तुम उद्धत होकर झूठ क्यों बोल रहे हो? हे दैत्य ! अपना पराक्रम दिखाओ ॥१०-११॥

मदीयं तुरगं वाद्य यज्ञीयं मे ददस्वतम् ।
नो चेन्मद्विशिखैस्तीक्ष्णैः पातयिष्ये शिरांसि ते।।१२।।
इत्युक्तः स च दैत्येन्द्रो ववर्ष शरसन्ततिम् ।
रामोऽपि विशिखैस्तीक्ष्णैराच्छिनद् विशिखावलिम् ।।१३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तुम मेरा अश्वमेधीय यज्ञ और वाद्य मुझे दे दो, नहीं तो मेरे धनुष से निकले हुए तीक्ष्ण बाण तुम्हारे शिरों को गिरा देंगे। राम के ऐसा कहने पर उस दैत्यराज ने राम पर बाणों की बौछार कर दी। राम ने भी

अपने तीक्ष्ण बाणों से उसको मुकुटरहित कर दिया। अर्थात् बाणों से उसका मुकुट गिरा दिया ॥१२-१३॥

शक्तितोमरकुन्तासिभिन्द्रि (न्दि) पालैरभेदयत्।
ऐन्द्रं पाशुपतं याम्यं वायव्यं वारुणं तदा ॥१४॥
सौरं ब्राह्मं कौबेरमाग्नेयं वैष्णवं परम्।
दैत्येन्द्रस्य विनाशाय मुमोचास्त्राणि राघवः ॥१५॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—शक्ति, तोमर, कुन्त, तलवार से युद्ध प्रारम्भ हुआ, तदनन्तर ऐन्द्र, पाशुपत, याम्य, वायव्य एवं वारुणेय अस्त्रों का प्रयोग हुआ। फिर सौर, ब्राह्म, कौबेर, आग्नेय आदि श्रेष्ठ दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया था। दैत्येन्द्र सहस्रकण्ठ के विनाश के लिए राघव (भगवान राम) ने भी दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया ॥१४-१५॥

जहार समरे दैत्यस्तदास्त्राणि शरोत्तमैः।
इत्थं राघवदैत्येन्द्रौ भ्रामयन्तौ परस्परम् ॥१६॥
वलयागामिनौ धीरौ नानागतिविशारदौ।
कण्ठीरवनिभौ तूभावन्योन्यजयकाङ्क्षिणौ ॥१७॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तब युद्ध में राम ने उत्तम बाणों एवं दिव्य अस्त्रों को उस राक्षस को मारने के लिए छोड़ा। इस प्रकार राम और सहस्रकण्ठ दोनों एक-दूसरे को युद्ध में भ्रमित करते देखे गये। दोनों शूरवीर वलयगामिनी (घूम-घूमकर युद्ध करना) एवं नानागतियों में निपुण थे। दोनों अपने-अपने कण्ठों से एक-दूसरे पर विजयाभिलाषा से हुंकार कर रहे थे ॥१६-१७॥

युद्ध्यमानौ तदा शूरौ पर्वतेन्द्राविव स्थितौ।
अशोभतामुभौ युद्धे प्रख्यातबलपौरुषौ ॥१८॥
अन्तरिक्षान्तरस्थौच्चौ मल्लयुद्धविशारदौ।
परस्परोपमौ ख्यातौ समुद्राविव दुर्धरौ ॥१९॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—युद्ध में संलग्न दोनों वीर पर्वतेन्द्र (हिमालय) की तरह दिख रहे थे। युद्ध में उन दोनों का प्रख्यात बल एवं पराक्रम सुशोभित हो रहा था। मल्लयुद्ध में निपुण वे दोनों कभी अन्तरिक्ष में, कभी नीचे पृथ्वी पर लड़ते देखे गये। दोनों समुद्र की तरह गम्भीर पराक्रम तथा बल में ख्यातिप्राप्त तो थे ही ॥१८-१९॥

सर्वे देवाः सदैतेयाः यक्षाः साध्याश्च खेचराः ।
विस्मयं परमं जग्मुः समुद्वीक्ष्य रणं तयोः ।।२०।।
सुग्रीवो ह्यङ्गदो नीलो हनूमांश्च विभीषणः ।
पादपैः पर्वतैर्दन्तैर्नखरैर्बालघट्टनैः ।।२१।।
निजघ्नुः राक्षसान् सर्वान् ज्वलज्वा (ज्ज्वा) लानलोपमान् ।
यामार्द्धेन हताः सर्वे राक्षसाः शङ्खकोटयः ।।२२।।

इति श्रीशैवरामायणे पार्वतीश्वरसंवादे अष्टमोऽध्यायः।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उन दोनों का युद्ध देखकर सभी देवता, राक्षस, यक्ष, साध्य एवं खेचर (आकाशचारी) आश्चर्य को प्राप्त हुए। सुग्रीव, अंगद, नील, हनुमान, विभीषण ने उस दैत्यराज को वृक्षों, पर्वतों से मारने के साथ-साथ दाँतों एवं नखों से काटा तथा नकोटा एवं बाल खींच-खींचकर मारा। भगवान राम ने शंख कोटि में गणित सम्पूर्ण राक्षसों को आधे दिन में ही मार डाला ।।२०-२२।।

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का
पार्वती ईश्वर संवाद नामक आठवाँ अध्याय समाप्त हुआ।

नवमोऽध्यायः

ईश्वर उवाच

अथ रामो महातेजाः भल्लैराशीविषोपमैः ।
छेदयामास हस्तांश्च शिरांस्यस्य बहूनि च ।।१।।
समुद्वीक्ष्य तदा रामं स्वशिरः करघातकम् ।
गृहीत्वा भ्रामइ (यि) त्वालं वेगेनाक्षिपत् त्क्षि (क्षि) तौ ।।२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शङ्कर पार्वती से बोले—इसके बाद महातेजस्वी राम ने विष बुझे बाणों की वर्षा से उस सहस्रकण्ठ राक्षस के बहुत से हाथों और शिरों को काट डाला। तब अपने कटे हुए हाथों और शिर वाले सहस्रकण्ठ ने राम को देखा और उन्हें पकड़कर चारों ओर घुमाकर पृथ्वी पर फेंक दिया ।।१-२।।

अर्धचन्द्रेणान्तरिक्षे छित्वा तस्य करौ भुवि ।
पातयामास रामोऽपि लाघवं दर्शयन् रिपोः ।।३।।
सहस्रकण्ठः दैत्येन्द्रो विस्मयाकुलमानसः ।
राममालक्ष्य समरे प्रवृद्धं रणपण्डितम् ।।४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—राम ने भी उसे अर्धचन्द्र अन्तरिक्ष में अर्थात् आधे गोलाकार फेंककर, उसके हाथों को पृथ्वी पर फेंककर, उस शत्रु को नीचा दिखाते हुए जमीन पर गिरा दिया। तब दैत्यराज सहस्रकण्ठ अत्यधिक व्याकुल मन वाला होकर के, राम को प्रबुद्ध रणपण्डित (रणबांकुरे) की तरह देखा ।।३-४।।

एकावशेषितशिरा उवाच रुषयान्वितः ।
कुतो गच्छसि राम त्वं रणे त्वां न त्यजाम्यहम् ।।५।।
यज्ञीयाश्वं न दास्यामि भवान् यदि पुमान् भवेत् ।
जित्वा मां समरे राम गृहाण तुरगं तव ।।६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तब बचे हुए एक शिर वाले सहस्रकण्ठ ने क्रोध में आकर कहा ! हे राम ! तुम कहाँ जा रहे हो? आज मैं युद्ध में तुम्हें नहीं छोड़ूँगा। तुम्हें अश्वमेधीय यज्ञ भी नहीं दूँगा। तुम यदि पुरुष हो, तो मुझे युद्ध में जीतकर हे राम ! अपना अश्वमेधीय अश्व ग्रहण करो ।।५-६।।

नो चेत् प्राणान् हरिष्यामि सर्वेषां च वनौकसाम् ।
ससोदरस्य सैन्यस्य वृथायासेन किं प्रभो ।।७।।
विदार्यमाणो यास्येऽहं त्वदस्त्रैर्मुक्तिवल्लभाम् ।
इत्युक्तवन्तं दैत्येन्द्रं सहस्रास्यं रघूत्तमः ।।८।।
नारायणास्त्रं सन्धाय कार्मुके मुमुचे तदा ।
तदस्त्रं मन्त्रजुष्टं सत् ज्वलज्वा (ज्ज्वा) लानलोपमम् ।।९।।
प्रविश्य हृदयं तस्य प्राणान् हृत्वाययौ पुनः ।
सहस्रकण्ठनालेभ्यस्तद्रामान्तिकमाययौ ।।१०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सहस्रकण्ठ ने कहा कि इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मैं सभी वनवासियों के प्राणों को हर लूँगा। हे प्रभु ! आप अपने भाइयों और सेना के साथ यहाँ बेकार आये हो। मैंने तुम्हारे अस्त्रों की शोभा को छिन्न-भिन्न कर दिया है। दैत्येन्द्र सहस्रकण्ठ के ऐसा कहने पर राम ने नारायणास्त्र को धनुष में सन्धान करके छोड़ दिया। मन्त्र से चलायमान वह अस्त्र अद्वितीय ज्वाला (अग्नि) की तरह सहस्रकण्ठ के हृदय में प्रवेश करके, प्राणों को हरण करके पुनः वापस आ गया, तब सहस्रकण्ठ के नाभि से एक अद्वितीय (कान्ति) किरण निकली ।।७-१०।।

रामबाणविनिर्भिन्नं शरीरं सन्त्यन् (सन्त्यजन्) रणे ।
सहस्रफणवान् शेषः आसीद् विष्णुपदं गतः ।
रामेण निहते दैत्यश्रेष्ठे शेषाः प्रदुद्रुवुः ।।११।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—राम के बाण से छिन्न-भिन्न शरीर वाले सहस्रकण्ठ ने युद्ध में ही प्राण छोड़ दिये और हजार फनों वाला शेषनाग बन करके विष्णुपद को प्राप्त हुआ। राम के द्वारा मारे गये अनेक श्रेष्ठ दैत्य शेषनाग के सहचर (सर्प) बन गये ।।११।।

ततो हृष्टाः सगन्धर्वाः देवाः ह्यर्षिगणास्तदा ।
बभूवुस्ते तत्र देवि रामचन्द्रप्रसादतः ।।१२।।
परस्परमवोचन्स्ते देवाः सेन्द्राः मुदान्विताः ।
अहो भाग्यमहोधन्याः कृता रामेण वै वयम् ।।१३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(सहस्रकण्ठ की मृत्यु के बाद) तब सभी गन्धर्व, देव, ऋषिगण अत्यधिक प्रसन्न हुए। भगवान शिव ने पार्वती से कहा कि

हे देवि ! यह सब राम की कृपा से संभव हो पाया। इन्द्रादि सहित सभी देवता आपस में बातचीत करते हुए बोले, अरे ! राम के इस कृत्य से हम सभी लोग भाग्यशाली होने के साथ-साथ धन्य हो गये ॥१२-१३॥

यदा प्रभृति रामोऽसौ ह्यवतीर्णोऽस्ति भूतले।
तदा प्रभृतिः लोकानां क्षेममासीन्निरन्तरम् ॥१४॥
शुभं भवतु भो राम! त्वं हि अवनिपालकः[1]।
इत्युक्त्वा च तदा रामं प्रणम्य च पुनः पुनः[2] ॥१५॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—जब-जब राम (विष्णु) ने इस भूतल पर अवतार लिया है, तब तब निरन्तर उन्होंने सभी लोकों का कुशल (क्षेम) या कल्याण किया है। हे राम तुम्हारा कल्याण हो, तुम पृथ्वी के पालक हो। ऐसा कहकर सभी देवतागण राम को बार-बार प्रणाम करने लगे ॥१४-१५॥

रामचन्द्रोऽपि तान् वीक्ष्य मुमुदे हर्षनिर्भरः।
उवाच कृपयाविष्टो देवानां पुरतस्तदा ॥१६॥
भवतां कृपया मेऽभूद् विजयो नात्रसंशयः।
इति वाक्यं समाकर्ण्य रामचन्द्रस्य धीमतः ॥१७॥
आशिषं ते प्रयुञ्जानास्तदा (स्वर्लोकम्) आययुः।
अथ दैत्येन्द्रनिहते राक्षसाश्च वशानुगाः ॥१८॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान रामचन्द्र भी उन देवताओं को हर्ष से प्रफुल्लित देखकर, उनसे कहा कि आप सबकी कृपा से ही यह कार्य संभव हो पाया है। आप सब लोगों की कृपा से ही मेरी विजय हुई है, इसमें कोई संशय नहीं है। बुद्धिमान रामचन्द्र के ऐसे वाक्यों को सुनकर, सभी देवता लोग उन्हें आशीष देकर स्वर्ग लोक चले गये। सहस्रकण्ठ की मृत्यु के बाद सभी राक्षस राम के वशीभूत या उनके अनुयायी हो गये ॥१६-१८॥

कृता विभीषणेनैवं रणमूर्द्धनि चासुराः।
अगस्तिद (मना) द् भूमिं विशन्तमिव भूधरम् ॥१९॥
विन्ध्याख्यं रामचन्द्रस्य सायकं नि (? सायकेन) हतं रणे।
सहस्रकण्ठमुद्वीक्ष्य रामस्य निकटं ययौ ॥२०॥

---

१. अनुवादक द्वारा श्लोक की सम्पूर्ति।
२. अत्र लेखकप्रमादजन्य पाठत्रुटिरिव प्रतीयते।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—विभीषण के द्वारा भी युद्ध में अनेक असुर मारे गये। अगस्त्य ऋषि का शिष्य विन्ध्याचल पर्वत अपने फैलाव से (बैठने से) भूमि को अतिक्रान्त करता जा रहा था, उसे रामचन्द्र के विन्ध्याख्य नामक धनुष ने ही युद्ध में मार दिया; क्योंकि वह सहस्रकण्ठ को देखकर राम के पास आया था ॥१९-२०॥

ब्रह्मादिभिः सुरैः सार्द्धं पुष्पवृष्टिं मुदान्वितः।
ततो ह्यमृतवृष्टिञ्च ववर्ष मघवा तदा॥२१॥
तद् बभूवोत्थितं सर्वं रामसैन्यं सविस्मयम।
इति ते कथितं सुभ्रु रामस्य चरितं शुभम्॥२२॥

इति श्रीशैवरामायणे पार्वतीश्वरसंवादे सहस्रकण्ठवधो नाम नवमोऽध्यायः।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—ब्रह्मादि देवताओं के साथ अन्य देवतागण पुष्प वृष्टि करते हुए प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने धाम गये। तदनन्तर इन्द्र ने अमृतवर्षा भी की। उससे राम की सेना के सभी लोग आश्चर्यचकित हो उठे खड़े हुए। इस प्रकार (शिव ने कहा) हे पार्वती! मैंने तुमसे शुभ रामचरित की सुन्दर (स्वच्छ) कथा सुनायी ॥२१-२२॥

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का सहस्रकण्ठ वध नामक नवाँ अध्याय समाप्त हुआ।

दशमोऽध्यायः

ईश्वर उवाच

रामचन्द्रेण निहतो सर्वराक्षसभूपतिः ।
राक्षसा ह्यवशिष्टा ये तदा दीना बभूविरे ।।१।।
शोकेन महताविष्टा जाता समरमूर्द्धनि ।
पुष्कराक्षमुवोचन्स्ते (? मवोचन् ते) किंकर्तव्यमतो वद ।।२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शिव बोले—(जब) श्रीरामचन्द्र ने सम्पूर्ण राक्षस राजाओं का वध कर दिया, तब जो राक्षस पृथ्वी पर अवशिष्ट रह गये, वे सभी दीन हीन होकर रहने लगे। युद्ध में सहस्रकण्ठ के मारे जाने पर अत्यन्त शोकाकुल पुष्कराक्ष ने किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर उनसे बोला, बताओ मुझे क्या करना चाहिए? ॥१-२॥

ततः सहस्रतनयो पुष्कराक्षो महाद्युतिः ।
विभीषणस्य पुरतो ययौ शोकभयान्वितः ।।३।।
प्रणम्य पादयोस्तस्य रक्ष रक्षेति चाब्रवीत् ।
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य पुष्कराक्षस्य धीमतः ।।४।।
तदा विभीषणं प्रोचे च भूयात्ते भयं सुत ।
अहं ते रामचन्द्रस्य निकटे स्थापयामि वै ।।५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तब महापराक्रमी सहस्रकण्ठ के पुत्र पुष्कराक्ष ने शोक और भय से युक्त होकर विभीषण के सामने आया। मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो, ऐसा कहते हुए उसने विभीषण के चरणों को प्रणाम किया। बुद्धिमान पुष्कराक्ष के ऐसे वचनों को सुनकर, विभीषण ने कहा कि हे पुत्र ! अब तुम्हें भय नहीं होना चाहिए, मैं तुम्हें भगवान श्रीराम के पास ले चलता हूँ ॥३-५॥

रामचन्द्रस्य कृपापात्रं भव राक्षससत्तम ।
इत्युक्त्वा करुणाविष्टो रामचन्द्रकृपां स्मरन् ।।६।।
सहस्रग्रीवतनयं पुष्कराक्षं विभीषणः ।
आदाय रामपदयोः पातइ (यि) त्वा वचोऽब्रवीत् ।।७।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे राक्षसश्रेष्ठ ! तुम श्रीरामचन्द्र के कृपापात्र बनो, ऐसा कहकर करुणा से युक्त होकर (विभीषण ने) रामचन्द्र की कृपा का

स्मरण किया। तब विभीषण सहस्रकण्ठ के पुत्र पुष्कराक्ष को लेकर, राम के चरणों में झुकाकर यह वाक्य बोले—॥६-७॥

सहस्रग्रीवपुत्रोऽयं विधेयस्तव किङ्करः।
राम राघव राजेन्द्र शरणागतवत्सल॥८॥
अभयं देहि चास्मै त्वं दीनानां परिपालकः।
इति विभीषणवचो श्रुत्वा रामः प्रतापवान्॥९॥
पतन्तं चरणद्वन्द्वे पुष्कराक्षं महाभुजः।
समालक्ष्य ततो राम उत्तिष्ठेति वचोऽब्रवीत्॥१०॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे राम, राघव, राजेन्द्र एवं शरणागत पर वत्सल भाव रखने वाले! यह सहस्रग्रीव का पुत्र है और आपका दास बनना चाहता है; इसलिए इसे अभय प्रदान कीजिए और आप दीनों के पोषक तो हैं हीं। विभीषण के ऐसे वचनों को सुनकर, प्रतापी भगवान राम ने अपने दोनों चरणों में पुष्कराक्ष को गिरते हुए महावीर राम ने देखा और 'उठ जाओ' कहने के बाद बोले—॥८-१०॥

अस्यां पुर्यां चित्रवत्यां पुष्कराक्ष सुखं वस।
कुरु तातस्य संस्कारं भयं मत्तोऽस्ति नो तव॥११॥
इत्युक्त्वा भरतं प्राह शरणागतवत्सलः।
एनमादाय गच्छ त्वं पुरीं चित्रवतीं शुभाम्॥१२॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे पुष्कराक्ष! इस चित्रवतीपुरी में तुम सुखपूर्वक निवास करो। हे पुत्र, अब अपने पिता (सहस्रकण्ठ) का (अन्त्येष्टि) संस्कार करो, तुम्हें अब किसी का भय नहीं है। ऐसा कहकर शरणागतवत्सल राम भरत से बोले! इसको लेकर तुम सुन्दर चित्रवती पुरी जाओ॥११-१२॥

सहस्रग्रीवसंस्कारं कार (यि)त्वा यथाविधि।
पुष्कराक्षं चित्रवत्यामभिषिच्य तदात्मजम्॥१३॥
तं मन्त्रिवर्गसहितमानयस्व मदन्तिके।
इत्युक्तो भरतः श्रीमान् पुष्कराक्षेण संयुतः॥१४॥
प्रविश्य राजमार्गेण ददर्श भवनोत्तमम्।
सहस्रग्रीवसदनं सुमेरुशिखरोपमम्॥१५॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—और सहस्रकण्ठ का यथाविधि अन्त्येष्टि संस्कार कराकर, उसके पुत्र पुष्कराक्ष को चित्रवती में अभिषिक्त करके, उसे मन्त्रियों के साथ मेरे पास ले आओ। राम के ऐसा कहने पर यशस्वी भरत ने पुष्कराक्ष के साथ राजमार्ग में प्रवेश करके उत्तम भवनों को तथा सुमेरु पर्वत के समान सुन्दर सहस्रकण्ठ के महल को भी देखा ॥१३-१५॥

सारिकाकीरसंघुष्टं केकिमालाविराजितम्।
नानारत्नसमाकीर्णं कपाटद्वारशोभितम् ॥१६॥
शातकुम्भमयैर्दिव्यैः कलशैः सुमनोहरम्।
मेरुप्राकारसंयुक्तं वातायनशतान्वितम् ॥१७॥
पताकाध्वजसङ्कीर्णं वितानालङ्कृतं महत्।
मुक्तामणिस्वस्तिकैश्च सर्वतोभद्रसंयुतम् ॥१८॥
नानाकुसुमसञ्छन्नं प्रमदापुञ्जरञ्जितम्।
राजमण्डलसन्दीप्तसौधराजिविराजितम् ॥१९॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तोता और मैना के आपसी संलाप तथा मोरों की केकि से गुञ्जायमान, विविध प्रकार के रत्नों से उत्कीर्ण उसके द्वार सुशोभित हो रहे थे। सोने के बने हुए सुन्दर कलशों से शोभायमान, ऊँचे-ऊँचे प्राकारों (महलों) से युक्त, वातायनों से समन्वित, पताका ध्वज तथा वितानों से अलंकृत, मुक्तामणि से बने हुए स्वास्तिक तथा सर्वतोभद्र चिह्नों से सम्पृक्त, विविध प्रकार के फूलों से आच्छन्न तथा प्रमदाओं (स्त्रियों) के समूह से सुशोभित विशाल राजसभा को भरत ने देखा, जिसके सौध विविध प्रकार के दीपों से सुशोभित हो रहे थे ॥१६-१९॥

तस्मिन्नन्तःपुरे धीमान् प्रविशन् भरतस्तदा।
दुःखितं स्त्रीजनं सर्वमाश्वास्य कृपया पुनः ॥२०॥
सहस्रग्रीवसंस्कारं कारयामास सूनुना।
दशाहानन्तरं कार्यं यत्तत्कर्म समाप्य (च) ॥२१॥
रत्नसिंहासने दिव्ये कृतकौतुकमङ्गले।
संस्थापयन् पुष्कराक्षमभिषिच्य तदात्मजम् ॥२२॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तब बुद्धिमान भरत ने उसके अन्तःपुर में प्रवेश करते हुए, दुःखी स्त्रीजनों को सभी प्रकार का आश्वासन देकर, उन पर

कृपा करके, जल्दी ही सहस्रकण्ठ का अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न करवाया तथा दशाह में भी किये जाने वाले कार्य सम्पन्न करवाकर, रत्नों से बने हुए दिव्य सिंहासन में, विविध प्रकार मंगल कर्म करके, सहस्रकण्ठ के पुत्र पुष्कराक्ष का राज्याभिषेक कर राजा रूप में संस्थापित किया ॥२०-२२॥

सर्वतीर्थोदकैस्तत्र सौ (वर्ण) कलश स्थितैः ।
(म) न्त्रिवर्गसमायुक्तं छत्रचामरशोभितम् ।।२३।।
पुष्कराक्षं समादाय रामान्तिकमुपाययौ ।
अथ रामस्य चरणौ स्पृशन्स सार (?सरसिजे) क्षणः ।।२४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—उस समय वहाँ सम्पूर्ण तीर्थों का जल सोने के कलशों में भरा हुआ था। मन्त्रिगणों से युक्त, छत्र, चामर से सुशोभित पुष्कराक्ष को लेकर भरत राम के पास आये और राम के चरणकमलों का स्पर्श किया ॥२३-२४॥

आनीय तुरगं प्रीत्या भक्त्या रामाय संददौ ।
किङ्करोऽहं तव विभो तदाज्ञापय यन्मतम् ।।२५।।
एवं विनिर्जित्य सहस्रकन्धरं सुग्रीवरक्षोनृपसंघयुक्तः ।
ब्रह्मादिभिर्देवगणैः सुपूजितस्तदा बभौ तत्र सुखेन रामः ।।२६।।

इति श्रीशैवरामायणे पार्वतीश्वरसंवादे सहस्रगीवसुताभिषेको नाम दशमोऽध्यायः ।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(पुष्कराक्ष ने भी) प्रसन्नतापूर्वक अश्वमेधीय यज्ञ को लाकर, भक्तिपूर्वक राम को प्रदान किया और कहा कि हे स्वामी ! मैं आपका दास हूँ, आप अपनी मति के अनुसार मुझे आज्ञा दीजिये। इस प्रकार सहस्रकण्ठ को जीतकर, सुग्रीव, सेना और संघ राजाओं के साथ, ब्रह्मादि देवताओं से पूजित राम अयोध्या आकर सुखपूर्वक रहने लगे ॥२५-२६॥

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का सहस्रगीवसुताभिषेक नामक दसवाँ अध्याय समाप्त हुआ ।

एकादशोऽध्यायः

ईश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ब्रह्मा देवर्षिसंयुतः ।
उवाच वचनं तत्र रामं राजीवलोचनम् ।।१।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शंकर ने पार्वती से कहा—हे देवि ब्रह्मा आदि देवताओं ने संयुक्त होकर कमल के समान नेत्रों वाले राम से जो कहा, वह अब मैं बताऊँगा, उसे सुनो ।।१।।

ब्रह्मोवाच

त्वमेव परमं ब्रह्म त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम् ।
दृश्यसे सर्वभूतेषु ब्राह्मणेषु विशेषतः ।।२।।
दिक्षु सर्वासु गगने पर्वतेषु वनेषु च ।
अन्ते पृथिव्याः सलिले वायौ वह्नौ महोदधौ ।।३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—ब्रह्मा ने कहा—हे राम ! आप ही परब्रह्म हो, आप में ही सब कुछ प्रतिष्ठित है। आप सभी प्राणियों में दिखायी पड़ते हो, विशेषकर ब्राह्मणों में (तुम्हारी प्रतिष्ठा है)। सम्पूर्ण दिशाओं में, आकाश में, पर्वत में, वनों में, पृथ्वी के प्रत्येक छोर में, जल, वायु, अग्नि और समुद्र में (आप सभी जगह विद्यमान हैं।) ।।२-३।।

अहं ते हृदयं राम जिह्वा देवी सरस्वती ।
देवा गात्रेषु रोमाणि महोदेवोप्यऽहंकृतिः ।।४।।
सप्तर्षयो वसिष्ठाद्याः देवाः साग्निपुरोगमाः ।
पशुपक्षिमृगाः कीटाः समुद्राः कुलपर्वताः ।।५।।
स्थावराः जङ्गमाः ये ये भुवनानि चतुर्दश ।
वृक्षौषधिलताः देव गात्रेषु तव निर्मिताः ।।६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—हे राम ! मैं (ब्रह्मा) तुम्हारा हृदय हूँ, देवी सरस्वती जिह्वा, आपके शरीर की रोमावलियाँ ही सम्पूर्ण देव हैं और महादेव आपके अभिमान हैं। वशिष्ठ आदि सप्त ऋषि, आगे चलने वाले अग्नि सदृश देवता, पशु, पक्षी, हिरण, कीट, समुद्र, सम्पूर्ण पर्वत, स्थावर, जङ्गम और जो-

जो चौदह भुवनों में अवस्थित वृष, औषधिलता और देवता हैं, आपके शरीर से ही निर्मित हैं ॥४-६॥

कुक्षौ त्वदीये तिष्ठन्ति परमाणव एव ते।
सर्वेषां जन्मनिधनं प्रापकोऽसि न संशयः ॥७॥
मायाश्रयत्वाज्जीवानां पिता भवसि सुव्रत।
सर्वव्यापी सर्वसाक्षी चिन्मयस्तमसः परः ॥८॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तुम्हारी कॉख में परमाणुओं के समान जीव निवास करते हैं। आप ही सभी के जन्म एवं मृत्यु के कारण हैं, इसमें कोई संशय नहीं है। हे व्रतधारी ! माया के आश्रयीभूत उत्पन्न होने वाले आप सभी जीवों के पिता हैं। आप अन्धकार से परे, चिन्मयस्वरूप, सर्वसाक्षी और सर्वव्यापी हैं ॥७-८॥

निर्विकल्पो निराभासो निशं (निश्शं) को निरुपद्रवः।
निर्लेपः सकलाध्यक्षो महापुरुष ईश्वरः ॥९॥
अहं विष्णुश्च रुद्रश्च शङ्करश्च निरञ्जनः।
त्वत्तो नान्यः परो देवस्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥१०॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—(हे राम ! आप ही) निर्विकल्प, निराभास, निशंक, निरुपद्रव, निर्लेप, सकलाध्यक्ष, महापुरुष और ईश्वर हैं। मैं विष्णु हूँ, रुद्र हूँ, शंकर हूँ, निरञ्जन हूँ। आप से बड़ा कोई अन्य देवता तीनों लोकों में विराजमान नहीं हैं ॥९-१०॥

इति स्तुत्वा दैवगणैश्चतुक्त्रोऽब्रवीत्पुनः।
राम त्वं दुष्टनाशाय ह्यवतीर्णो रघोः कुले ॥११॥
अस्माभिः प्रार्थितः पूर्वं तत्सत्यं कृतवानसि।
याहि राम गृहीत्वाश्वं यज्ञशेषं समापय ॥१२॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—राम की ऐसी स्तुति करके देवगगणों से चतुर्मुख ब्रह्मा जी ने फिर कहा कि हे राम ! दुष्टों का विनाश करने के लिए ही आप राजा रघु के कुल में अवतीर्ण हुए। पूर्व में हम लोगों ने जो-जो प्रार्थना की, उसे सही रूप में आपने किया। हे राम ! अश्वमेधीय घोड़े को लेकर जाइये और अवशिष्ट यज्ञ को पूरा कीजिये ॥११-१२॥

कलास्तवसुरेन्द्रादीन् सन्तर्पय विधानतः ।
एकादशसहस्राणामब्दानां पालय क्षितिम् ।।१३।।
ततः परं निजं धाम यास्यामि त्वं परात्परम् ।
इति विज्ञाप्य देवेशो ययौ देवगणै (स) सहं (?सह)।।१४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तुम्हारी कलाओं के रूप में अवस्थित इन्द्र आदि सम्पूर्ण देवताओं को विधि-विधान से सन्तर्पित करो और एक हजार युगों तक पृथ्वी का पालन करो। इसके बाद हे परात्पर ! आप अपने धाम जायेंगे। ऐसा कहकर इन्द्र अन्य देवताओं के साथ चले गये ।।१३-१४।।

अथागमत्पुष्कराक्षो पूजामादाय सुप्रभाम् ।
रत्नसिंहासनं प्रादाद् रामायामिततेजसे ।।१५।।
रामस्य चरणद्वन्द्वं रत्नपुष्पैरपूजत् ।
पुपूज परया भक्त्या नमस्कृत्वा पुनः पुनः ।।१६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इसके बाद प्रातःकाल पुष्कराक्ष पूजन की साम्रगी लेकर आया और अखण्ड तेजस्वी राम के लिए रत्नसिंहासन प्रदान किया। राम के दोनों चरणों को उसने रत्न रूपी पुष्पों से पूजा की। भक्ति से पूजन करके बार-बार उन्हें प्रणाम किया ।।१५-१६।।

रामाज्ञां च गृहीत्वाऽसौ ययौ स्वपुरीं प्रति ।
ततो रामस्तदा तत्र प्रोवाच जनसंसदि ।।१७।।
किंकर्तव्यमितोऽस्माभिः यूयं वदत मामकाः ।
इत्युक्ते च तदा रामे सुग्रीवः प्राह भूमिपम् ।।१८।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—और राम की आज्ञा लेकर वह पुष्कराक्ष अपनी नगरी चित्रवती की ओर प्रस्थान किया। उसके बाद राम ने एक जनसभा को सम्बोधित किया और कहा कि अब इसके बाद हम लोगों को क्या करना चाहिए, आप लोग मुझे बताइये। राम के ऐसा कहने पर सुग्रीव ने राजा राम से कहा ।।१७-१८।।

अत्रेत्य कार्यं सर्वं वै जातं मे भा (वि) तत्वतः ।
गमनं दृश्यते राजन् मेरौ हि कमलेक्षण ।।१९।।
सुग्रीवस्य वचस्तथ्यं मत्वा रामः प्रतापवान् ।
सर्वानाज्ञाप्य गमने (रामः सैन्य-) समावृतः ।।२०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—यहाँ से जाने के बाद ही सभी कार्य अपने आप हो जायेंगे; क्योंकि ऐसी भावी सूचनाएँ मिल रही हैं; क्योंकि हे राजन्! सुमेरु पर्वत विष्णु की शरण में जा रहा है। सुग्रीव के वचनों और तथ्यों को मानकर प्रतापी राम ने सेना सहित सभी को जाने का आदेश दिया ॥१९-२०॥

पुष्पकं तत्समारुह्य देवतागणपूजितः।
आगत्य येन मार्गेण ययौ मार्गेण तेन सः ॥२१॥
सप्तद्वी (पा) नतिक्रम्य हेमाद्रिं सुमपागमत्।
तत्र देवगणान्नत्वा मेरौ स्थित्वा महाबलः ॥२२॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—देवता गणों को पूजित करके सभी लोग पुष्पकविमान पर आरूढ़ हुए। वह विमान जिस मार्ग से आया था, उसी मार्ग से वापस लौटा। सप्त द्वीपों को पार करके वह विमान हेमाद्रि पहुँचा वहाँ देवगणों को प्रणाम करके महाबली सुमेरु वहीं स्थित हो गया ॥२१-२२॥

मेरुणा दत्तमखिलं यत्नप्राप्तः प्रगृह्य सः।
भेरीरवैस्तूर्यघोषैर्विदारितदिगन्तरः ॥२३॥
सर्वैः साकं मुदा रामो भ्रातृभिः सहितः प्रभुः।
मङ्गलालङ्कृतं दिव्यमयोध्यानगरं ययौ ॥२४॥

इति श्रीशैवरामायणे पार्वतीश्वरसंवादे एकादशोऽध्यायः।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—समुेरु के द्वारा अपना सब कुछ (राम को) प्रदान कर दिया गया, जो उसने यत्नपूर्वक प्राप्त किया था, तभी भेरीरव एवं तूर्य निनाद से दिग-दिगन्तर-परिव्याप्त हो गये। सभी के साथ प्रसन्न राम, अपने भाईयों सहित, मंगलों से अलंकृत दिव्य अयोध्या नगरी गये ॥२३-२४॥

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का पार्वती-ईश्वर संवाद नामक ग्यारहवाँ अध्याय समाप्त हुआ।

द्वादशोऽध्यायः

ईश्वर उवाच

अथ रामो रघुपतिर्यजने कृतधीर्मुदा ।
सीतया सहितः श्रीमानश्वमेधे महाक्रतौ ।।१।।
कृत्वाथ ऋत्विग्वरणं वसिष्ठादीन्महामुनीन् ।
वसिष्ठो वामदेवश्च विश्वामित्रोऽथ गौतमः ।।२।।
जाबालिर्जमदग्निश्च मार्कण्डेयोऽपि मौद्गलः ।
कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजः सुतीक्ष्णोऽगस्त्यनारदौ ।।३।।
रामादयो मुनिश्रेष्ठा रामस्य परमात्मनः ।
यथाशास्त्रमनुक्रम्य ह्यश्वमेधे महाक्रतौ ।।४।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान् शङ्कर बोले—इसके बाद राम ने प्रसन्न होकर के प्रारम्भिक पूजन किया तदनन्तर सीता के साथ अश्वमेध यज्ञ करना प्रारम्भ किया। इसके लिए सर्वप्रथम उन्होंने वशिष्ठादि महामुनियों को ऋत्विक् रूप में वरण किया, जिसमें वशिष्ठ, वामदेव, विश्वामित्र, गौतम, जाबालि, जमदग्नि, मार्कण्डेय, मुद्गल, कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, सुतीक्ष्ण, अगस्त्य, नारद आदि महामुनियों ने परमात्मा स्वरूप राम के लिए शास्त्रीय विधि के अनुसार यज्ञ प्रारम्भ किया ।।१-४।।

शालाश्च सरयूतीरे तासु वेदीः प्रकल्प्य च ।
सीतया सहितं रामं सदीक्षामुपवेश्य च ।।५।।
आदौ तु प्रातःसवनं पश्चान्माध्यंदिनं तदा ।
तृतीयं सवनं चेति कर्म कुर्युर्यथाविधिः ।।६।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—अश्वमेध यज्ञ करने के प्रसङ्ग में सर्वप्रथम, सरयू नदी के किनारे यज्ञशालाओं का निर्माण हुआ एवं उनमें यज्ञवेदी निर्माण किया गया। तदनन्तर दीक्षा लेकर सीता सहित राम यज्ञभूमि पर बैठे। प्रारम्भ में प्रातःकालीन यज्ञ किया गया। तदनन्तर मध्याह्न में माध्यंदिन यज्ञ सम्पन्न हुआ, तदनन्तर तृतीय सवन (यज्ञ) दोनों ने यथाविधि किया ।।५-६।।

स्वाहाकारवषट्कारैः ऋग्यजुःसाममन्त्रजैः ।
अग्निष्टोमातिरात्रौ च पौण्डरीकमतः परम् ।।७।।

चयनं गारुडं होमं प्रकृतिविकृतीस्ततः ।
कोविदारैस्त्रिभिः षड्भिर्बिल्वौदुम्बरखादिरैः ।।८।।
वस्त्रालङ्करणोपेता यूपास्तत्रैकविंशतिः ।
रात्रावश्वस्य शुश्रूषां कुर्वती जानकी तदा ।।९।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद के मन्त्रों के द्वारा स्वाहा, वषट् इत्यादि ध्वनियों से सम्पृक्त, अत्यन्त पवित्र अग्निष्टोम यज्ञ रात्रि में तथा इसके बाद श्रेष्ठ पौण्डरीक यज्ञ सम्पन्न हुआ। गारुड़ होम का चयन करके प्रकृति एवं विकृति होम हुए। पहले तीन पण्डितों के द्वारा, फिर छः पण्डितों के द्वारा विल्व, उदुम्बर एवं खदिर की लकड़ी से हवन हुआ, फिर वस्त्र एवं अलङ्करणों से सुशोभित इक्कीस पण्डितों के द्वारा यूप की क्रिया सम्पन्न की गयी।[१] इसके बाद रात्रि में जानकी सीता ने उस अश्व की सेवा शुश्रूषा की ।।७-९।।

न्यवसत् सा ततो देवाः समाहूताः समाययुः ।
बबन्धुस्तत्रयूपेषु कुशाढ्ये त्रिशतं पशून् ।।१०।।
यूपाग्रे रज्जुभिर्बद्धं मन्त्रपूतं हयं ततः ।
छेदयित्वा वसिष्ठस्तद् वपामुधृ (?द्ध) त्य सर्त्विजः ।।११।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—रात्रि में जानकी वहीं उस अश्व के पास रहीं, उसके बाद देवतागढ़ आहूत हुए और वहाँ पहुँचे। इसके बाद वहाँ यूप में कुश के द्वारा तीन सौ पशु बाँधे गये। उसके बाद यूप के अग्रभाग में रस्सी में बँधा हुआ एवं मन्त्र से पवित्र किया हुआ अश्व स्थापित किया गया। उसके बाद मधु के छिड़काव से वशिष्ठ ने उस सर्त्विज का छेदन किया ।।१०-११।।

आश्रावयेति मन्त्रेण हव्यवाहे व्यनिक्षिपत् ।
देहं निकृन्तनं कृत्वा ह्यङ्गैर्होममथाकरोत् ।।१२।।
एवं शतत्रयस्यापि पशूनामङ्गहोमकम् ।
रामस्य ह्यमेधे ये द्रष्टुमभ्यागताः जनाः ।।१३।।
ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्रास्तत्र सविस्मयाः ।
अहोरात्रे ददावन्नमागतेभ्यः सुसत्कृतम् ।।१४।।

१. (यू-पक् पृषो. दीर्घः) यज्ञ की स्थूणा (यह प्रायः बाँस या खदिर वृक्ष की लकड़ी से बनायी जाती है) जिसके साथ बलि दिया जाने वाला पशु, अश्वमेध के समय बाँध दिया जाता है। कालिदास ने भी कुमारसम्भव (५/७३० में लिखा है—"**अपेक्ष्यतेसाधुजनेन वैदिकी श्मशानः-शूलस्य न यूपसत्क्रिया ।**"

मालिनी हिन्दी व्याख्या—इसके बाद मन्त्रोच्चारण के बीच हव्यवाहों ने हवन किया, इसके बाद उस पशु के देह के अंगों को काट-काट कर अङ्ग होम किया गया। इस प्रकार तीन सौ पशुओं के अंगों को काट-काट कर पशुओं के अंग का हवन किया गया। राम के अश्वमेध यज्ञ को देखने के लिए आये हुए सभी लोगों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी आश्चर्यचकित हो गये। तदनन्तर अहोरात्रि में आये हुए लोगों का सत्कार कर उन्हें भोजन परोसा गया ॥१२-१४॥

अन्नकूटैश्बहुभिः पर्वता इव संस्थितैः।
सूपैर्नानाविधैः शाकैर्हिङ्गूलवणमिश्रितैः ॥१५॥
मारीच्याम्राज्यसम्मिश्रैः रसालफलसंयुतम्।
तिलमाषादिचूर्णाक्तैः रसैर्बहुभिरन्वितम् ॥१६॥
द्राक्षेक्षुरम्भापनसनारिकेलफलैर्युतम् ।
सिद्धार्थरससंयुक्तैश्छूतखण्डैरलङ्कृतम् ॥१७॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—वहाँ अनेक प्रकार के भोजन पर्वत की तरह ऊँचे अर्थात् अत्यधिक मात्रा में रखे गये थे। नाना प्रकार की दालें एवं सब्जियाँ थीं, जो हींग एवं लवण से मिश्रित थीं। मिर्च से युक्त आम के अचार एवं बहुत मात्रा में आम के फल रखे थे। तिल, माष के चूर्ण से युक्त बहुत से पेय पदार्थ थे। अंगूर, गन्ना, रम्भा, पनस (कटहल) एवं नारियल के फल थे। सिद्धार्थरस से संयुक्त आम के छोटे-छोटे खण्ड (टुकड़े) वहाँ अलंकृत थे ॥१५-१७॥

सौवर्णे राजते रत्ने भाजने पर्णनिर्मिते।
शाल्योदनं विनिक्षिप्य प्राज्यमाज्यपुटेषु च[1] ॥१८॥
यथारुचि प्रभुञ्जध्वं भुञ्जध्वमिति चाब्रुवन्।
गृह्यतां गृह्यतामन्नं भूयो भूयो ह्यपेक्षितम् ॥१९॥

मालिनी हिन्दी व्याख्या—पत्ते से निर्मित खाने के पात्र ऐसे लग रहे थे, जैसे वह सुवर्ण से बने हों और उनमें रत्न जड़े हों। पहले उनमें शालि का भात डाला गया, फिर पुटक (दोनें) में प्रचुर मात्रा में (अश्वमेधीय यज्ञ का हव्य) मास दिया गया। सभी लोगों ने यथा रुचि भोजन किया एवं खाते समय यह बोलते हुए देखे गये कि अरे और लीजिए और अन्न ग्रहण कीजिये, जो-जो आपको अपेक्षित हो ॥१८-१९॥

---

१. अनुवादक द्वारा श्लोक की सम्पूर्ति।

इति सर्वेषु तृप्तेषु भक्ष्यैरुच्चावचैरपि ।
हयमेधे महायज्ञे राघवः सी (त) या सह ।।२०।।
दीक्षान्तेऽवभृतस्नातो शतकोटीः सुवर्णकाः (गाः)।
आनीय ब्राह्मणेभ्यश्च ऋत्विग्भ्यः प्रददौ नृ (पः)।।२१।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—राम और सीता द्वारा किये गये अश्वमेघ के महायज्ञ में खाने वाले सभी जोर-जोर से बोल रहे थे, कि सभी लोग आज तृप्त हो गये हैं। यज्ञपूर्ण करने के उपरान्त अवभृत स्नान कर दीक्षा देने के कार्यक्रम में सौ करोड़ सोने से अलंकृत की हुई गायों को ऋत्विकों और ब्राह्मणों को बुला-बुला कर राजा राम द्वारा दीक्षा रूप में प्रदान किया गया ।।२०-२१।।

अध्वर्यौदा (?द्गा) तृहोतृभ्यो दशकोटिसुवर्णकम् ।
बहुमान्य (न्) दा भूपान् नानाद्वीपेभ्य आगतान् ।।२२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—अध्वर्यु जनों होत्रियों एवं उस समय नाना द्वीपों से आये हुए बहु सम्मानित राजाओं को दस करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान की गयीं ।।२२।।

यथार्हमर्हणं[1] (कृ)त्वा··[2] पुरस्कृतिं च समन्वितान्[3] ।
सुग्रीवराक्षसेन्द्रं च प्रस्थाप्य परिवारकैः ।।२३।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—मैं आपका हूँ, ऐसी भ्रातृता दिखाते हुए राम ने विविध उपहारों के साथ सुग्रीव एवं राक्षसराज पुष्कराक्ष को परिवार के साथ विदा किया ।।२३।।

सी (त) या सह रामोऽपि (सोदरैः स) हितोऽनघः ।
(दश) वर्षसह (स्त्रा) णि ह्ययोध्यां पालयन् पुरीम् ।।२४।।
चक्रे रामोऽश्वमेधानामेकोन (शत) मेव सः ।
अ (न्तिमे) जानकीं हित्वा वाल्मीकेराश्रमं प्रति ।।२५।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सीता के सहित राम अपने भाईयों के साथ दस हजार वर्ष तक अयोध्या नगरी का पालन करते रहे। राम ने निन्यान्वे अश्वमेध यज्ञ किया लेकिन अन्तिम सौवें अश्वमेध यज्ञ के समय उन्होंने जानकी का परित्याग कर उन्हें वाल्मीकि आश्रम छोड़ दिया ।।२४-२५।।

---

१. पाठः कीटभक्षितोऽस्ति। 'यथार्हमर्हणं कृत्वा···' इति प्रतीयते।
२. पाठः कीटभक्षितः।
३. अनुवादक द्वारा श्लोक की सम्पूर्ति।

सीताप्रतिनिधिं कृत्वा सुवर्णप्रतिमां तदा।
अश्व (मेधञ्) चकारासौ भ्रातृभिः सहितः शुचिः ।।२६।।
पश्चाद् वर्षसहस्रञ्च पालयन् पृथिवीमिमाम्।
अयोध्यायां विनिक्षिप्य पुत्रौ कुशलवाविह ।।२७।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—सौंवे अश्वमेध यज्ञ के समय राम ने सीता की सुवर्ण प्रतिमा बनवाकर के सीता को प्रतिनिधि बना करके, भाईयों के साथ पवित्रतापूर्वक अश्वमेधयज्ञ सम्पन्न किया। तदनन्तर एक हजार वर्ष तक इस पृथ्वी का पालन करते हुए उन्होंने अयोध्या का राजसिंहासन अपने पुत्रों कुश एवं लव को दे दिया ।।२६-२७।।

सोदरैः सहितो रामः साकेते पुरवासिभिः।
तृणपाषाणवृक्षाद्यैः स्नात्वैव सरयूजले ।।२८।।
निजनामयशो भूमौ स्थापयित्वा दिवं ययौ।
रामस्य पुरतः सीता प्रविवेश धरातलम् ।।२९।।
पुनर्वैकुण्ठमासाद्य चिक्रीडे रमया सह।
वैदेहीरूपया रामो विष्णुरूपेण सर्वदा ।।३०।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—तृण, पाषाण एवं वृक्षादि के द्वारा (सहयोग से) सरयू नदी के जल में स्नान करके अपने भाइयों सहित राम पुरवासियों के साथ बहुत दिन साकेत में रहे एवं अनन्तर में राम के सामने ही सीता ने धरातल में प्रवेश कर लिया तथा राम भी अपने नाम एवं यश को पृथ्वी में स्थापित कर स्वर्ग चले गये। इस प्रकार पुनः वह स्वर्ग पहुँचकर लक्ष्मी के साथ आनन्दपूर्वक रहने लगे। लक्ष्मी वैदेही रूप में एवं राम विष्णु रूप में सर्वदा तो थे ही ।।२८-३०।।

ईश्वर उवाच

श्रीरामविजयं नाम पवित्रं पापनाशनम्।
रामस्य चरितं पुण्यं सहस्रग्रीवमर्दनम् ।।३१।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—शिव जी पार्वती जी से बोले कि श्रीरामविजय नाम की यह कथा अत्यन्त पवित्र और पापों का विनाश करने वाली है, जिसमें सहस्रग्रीव (सहस्रकण्ठ) का मर्दन एवं श्रीराम के पुण्य चरित्र का वर्णन मिलता है ।।३१।।

ये शृण्वन्ति सदा भक्त्या ये लिखन्ति मनीषिणः ।
ये वाचयन्ति सततं मुच्यन्ते सर्वपातकात् ।।३२।।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—जो इस रामकथा को भक्तिपूर्वक सुनते हैं और जो मनीषी लिखते हैं तथा जो निरन्तर इसका वाचन करते हैं, वह सम्पूर्ण पापों से छूट जाते हैं ।।३२।।

एतन्मया निगदितं तुभ्यं पर्वतनन्दिनि ।
शैवमेनं वदिष्यन्ति अद्य प्रभृतिः मानवाः मा (गधाः) ।।३३।।

इति श्रीशैवरामायणे पार्वतीश्वरसंवादे सहस्रग्रीवरामचरिते द्वादशोऽध्यायः ।
पुष्पिका-१२ संवत् १९५६ फाल्गून शुद्ध चतुर्दश्यां लिखितम् ।

मालिनी हिन्दी व्याख्या—भगवान शिव ने हिमालय की पुत्री पार्वती से कहा कि यह सम्पूर्ण कथा मैंने तुम्हें सुनायी है। शैव उपासक एवं अन्य मनुष्यगण आज से लेकर इस रामकथा को कहेंगे, मूर्ख लोग तो विल्कुल भी नहीं ।।३३।।

इस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवरामायण का
सहस्रग्रीवचरित नामक बारहवाँ अध्याय समाप्त हुआ ।
इति शुभम् ।

परिशिष्ट-विवरण

(क) शैवरामायण पर वाल्मीकि रामायण का प्रभाव विवेचन

(ख) शैवरामायण एवं अद्‌भुत रामायण में साम्य-वैषम्य विवरण

(ग) शैवरामायण का वैशिष्ट्य निरूपण

(घ) शैवरामायण की प्राचीनता का निर्धारण

(ङ) शैवरामायण में प्राप्त रसों एवं रीतियों का विवरण

(च) शैवरामायण में अन्वित छन्दों का अनुशीलन

(छ) शैवरामायण में उपलब्ध अलङ्कारों का विवरण

(ज) शैवरामायण के प्रमुख पात्रों का ऐतिहासिक विवरण

(झ) शैवरामायण श्लोकानुक्रमणिका

(क) शैव रामायण पर वाल्मीकि रामायण का प्रभाव विवेचन

वैसे तो शैव रामायण पर अद्भुत रामायण, विलङ्कारामायण एवं मन्त्र-रामायण का असीम प्रभाव भी दिखायी पड़ता है, लेकिन शैव रामायण के कुछ प्रसङ्गों में वाल्मीकि रामायण का प्रभाव दिखाई पड़ता है। जैसे—सुरसाप्रसङ्ग, रावणीया सभा, सुखसारनप्रसंग, रावण की मृत्यु के अनन्तर शत्रुता समाप्ति एवं उनकी सन्तानों के प्रति वात्सल्य का परिपालन करना। वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड में देवताओं द्वारा भेजी गयी नागमाला तथा सुरसा का प्रसंग वर्णित मिलता है, जहाँ हनुमान के विवेक की परीक्षा करने में उसने उनका भक्षण करने का उपक्रम किया, लेकिन हनुमान ने उनका आदर करते हुए छोटा रूप धारण कर उसके मुख में प्रवेश कर एवं उसी क्षण वापस निकलकर उन्हें प्रणाम किया था।[१] वाल्मीकि रामायण के इस प्रसंग का विवरण शैवरामायण में उस समय

१. ततो देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः। अब्रुवन् सूर्यसंकाशां सुरसां नागनातरम्॥
अयं वातात्मजः श्रीमान पल्वते सागरोपरि। हनूमान् नाम तस्य त्वं मुहूर्तं विघ्नमाचर॥
राक्षसं रूपमास्थाय सुघोरं पर्वतोपमम्। दंष्ट्राकरालं पिङ्गाक्षं वक्त्रं कृत्वा नभः स्पृशम्॥
बलमिच्छामहे ज्ञातु भूयश्चास्य पराक्रमम्। त्वां विजेष्यत्युपायेन विषादं वा गमिष्यति॥
एवमुक्ता तु सा देवी दैवतैरभिसत्कृता। समुद्रमध्ये सुरसा बिभ्रती राक्षसं वपुः॥
विकृतं च विरूपं च सर्वस्य च भयावहम्। पल्वमनिं हनूमन्तमावृत्येदमुवाच ह॥
मम भक्ष्यः प्रदिष्टस्त्वमीश्वरैर्वानरर्षभ। अहं त्वां भक्षयिष्यामि प्रविशेदं ममाननम्॥
वर एष पुरा दत्तो मम धात्रेति सत्वरा। व्यादाय वक्त्रं विपुलं स्थिता सा मारुतेः पुरः॥
एवमुक्तः सुरसया प्रहृष्टवदनोऽब्रवीत्।
रामो दाशरथिर्नाम प्रविष्टो दण्डकावनम्। लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा वैदेह्या चापि भार्यया॥
अन्यकार्यविषक्तस्य बद्धवैरस्यराक्षसैः। तस्य सीता हृता भार्या रावणेन यशस्विनी॥
तस्याः सकाशं दूतोऽहं गमिष्ये रामशासनात्। कर्तुमर्हसि रामस्य साह्यं विषयवासिनी॥
अथवा मैथिली दृष्टा रामं चाक्लिष्टकारिणम्। आगमिष्यामि ते वक्त्रं सत्यं प्रतिशृणोमि ते॥
एवमुक्ता हनुमता सुरसा कामरूपिणी। अब्रवीन्नातिवर्तेन्मां कश्चिदेष वरा मम॥
तं प्रयान्तं समुद्वीक्ष्य सुस्सा वाक्यमब्रवीत्। बलं जिज्ञासमाना सा नागमाता हनूमतः॥
निविश्य वदनं मेऽद्य गन्तव्यं वानरोत्तम। वर एष पुरादत्तो मम धात्रेति सत्वरा॥
व्यादाय विपुलं वक्त्रं स्थिता सा मारूतेः पुरः। एवमुक्तः सुरसया क्रुद्धो वानरपुंगवः॥
अब्रवीत् कुरू वै वक्त्रं येन मां विषहिष्यसि। इत्युक्त्वा सुरसां क्रुद्धो दशयोजनमायताम्॥
दशयोजनाविस्तारो हनूमानभवत यदा।
तं दृष्ट्वा मेघसंकाशं दशयोजनमायतम्। चकार सुरसाप्यास्यं विंशद् योजनमायतम्॥

क्रमशः.....

माना जा सकता है, जब युद्ध में आये हुए सहस्रकण्ठ ने राम के वानरों को खाया था एवं वे वानर उसकी नासिका एवं कान के छेदों (रन्ध्रों) से बाहर निकलकर पुनः राम की सेना में शामिल हो जाते थे।[१]

वाल्मीकि रामायण में रामदूत हनुमान रावण के पुत्र के द्वारा रावण की सभा में प्रस्तुत किये गये थे। रावण ने अपने मन्त्रियों को हनुमान से उनका परिचय एवं आगमन का प्रयोजन जानने की आज्ञा दी थी।[२] तब हनुमान ने भी अपना परिचय देते हुए अपने लंका आगमन का प्रयोजन[३] सीता प्रत्यावर्तन कराना बताया था एवं उसे इसके लिए परामर्श भी दिया था। उसके परामर्श को सुनकर रावण ने अपने सेवकों को हनुमान को मारने का आदेश भी दिया था।[४] परन्तु विभीषण ने अपनी बुद्धिकौशल से रावण को ऐसा करने से रोका था, फिर भी हनुमान की पूँछ जला ही दी गयी थी। हनुमान ने अपनी जलती हुई पूँछ से राक्षसों को मारा एवं लंका को भी जला डाला था।[५] शैव रामायण में यही

हनूमांस्तु ततुः क्रुद्धस्त्रिंशद् योजनमायतः। चकार सुरसा वक्त्रं चत्वारिंशत तथाच्छ्रितम्॥
वभूव हनुमान वीरः पञ्चाशद् योजनोच्छ्रितः। चकार सुरसा वक्त्रं षाष्टि योजनमुच्छ्रितम्॥

तदैव हनुमान वीरः सप्ततिं योजनोच्छ्रितः। चकार सुरसा वक्त्रमशीतिं योजनाच्छ्रितम्॥
हनूमाननलप्रख्यो नवतियोजनोच्छ्रितः। चकार सुरसावक्त्रंशतयोजनमायतम॥
तद् दृष्टा व्यादितं त्वास्यं वाधुपुत्रः स बुद्धिमान्। दीर्घ जिहसुरसया सुभीमं नरकोपमम्॥
स संक्षिप्यात्मनः काय जीमूत इव मारूतिः। तस्मिन मुहूर्ते हनुमान् बभूवाङ्गुष्ठमात्रकः॥
सोऽपिपद्याथ तद्वक्त्र निष्पत्य च महाबलः। अन्तरिक्षे स्थितः श्रीमानिदं वचनमब्रवीत॥
प्रविष्टोऽस्मि हि ते वक्त्रं दाक्षायाणि नमोऽस्तुते। गमिष्ये यत्र वैदेही सत्यश्चासीद् वरस्तव॥
—वा. रा., सुन्दरकाण्ड-१४४/१६९।

१. शै. रा., ६/५-६।

२. स शेषसवर्तिततामप्रदृष्टिर्दशाननस्तं कपिमन्ववेक्ष्य।
अथोपविष्टान् कुलशीलवृद्धान् समादिशत् तं प्रति मुख्यमन्त्रीन्॥
यथाक्रमं तैः स कपिश्च पृष्टः कार्यार्थस्य च मूलमादौ।
निवेदयामास हरीश्वरस्य दूतः सकाशादहमागतोऽस्मि॥
—वा. रा. सुन्दरकाण्ड, ४८/६०-६१

३. विमुक्तोऽप्यहमस्त्रेण राक्षसैस्त्वभिवेदितः। केनचिद् रामकार्येण आगतोऽस्मि तवान्तिकम्॥
दूतोऽहमिति विज्ञाय राघवस्यामितौजसः। श्रूयतामेव वचनं मम पथ्यमिदं प्रभो॥
—वा. रा., सुन्दरकाण्ड, ५०/१८-१९

४. स तस्य वचनं श्रुत्वा वानरस्य महात्मनः। आज्ञापयद् वधं तस्य रावणः क्रोधमूर्च्छितः॥
—वा. रा., सुन्दरकाण्ड, ५२/१

५. तैलेन परिषिच्याथ तेऽग्निं तत्रोपपादयन्। लाङ्गूलेन प्रदीप्तेन राक्षसांस्तानताऽयत्॥
—वा. रा., सुन्दरकाण्ड, ५३/८

हनुमान शुक रूप में राम के दौत्यकर्म हेतु सहस्रकण्ठ की सभा में उपस्थित हुए। सहस्रकण्ठ के मंत्री रक्ताक्ष ने हनुमान को देखा एवं उसके चित्रवती पुरी आने का कारण एवं परिचय भी पूछा। सहस्रकण्ठ ने अपने अनुचरों को उन्हें पकड़ने का आदेश दिया, किन्तु हनुमान ने सहस्रकण्ठ के ऊपर छलांग लगा करके उसके मुकुटों को नीचे गिरा दिया एवं उसके अनुचरों को अपनी पूँछ से मारा भी।[१]

वाल्मीकि रामायण में रावण ने युद्धावसर पर राम का बल एवं सेना के पौरुष या संख्या को जानने के लिए अपने दो गुप्तचरों शुक एवं सारण को पक्षी रूप में राम की सेना के मध्य में भेजा था।[२] ये दोनों वानर राम की सेना में प्रवेश भी कर गये थे[३] किन्तु विभीषण ने उन्हें पहचान लिया। वाल्मीकि रामायण का यही प्रसंग शैव रामायण में भी वर्णित मिलता है। हनुमान भी शुक बनकर सहस्रकण्ठ की सभा में प्रवेश किये थे।[४] संभवत: यह प्रसंग कवि ने वाल्मीकि रामायण से प्रभावित होकर रखा होगा। वाल्मीकि रामायण में शुक एवं सारण पक्षी रूप को छोड़कर वानर रूप में शत्रुओं के मध्य गये थे, जबकि शैव रामायण में हनुमान वानर रूप को छोड़कर पक्षी रूप धारण कर शत्रु की सभा में गये थे।

शत्रुओं की मृत्यु के अनन्तर उनके परिवार से सहिष्णुता स्थापन का विवरण जिस रूप में वाल्मीकि रामायण में वर्णित मिलता है, उसी प्रकार शैव रामायण में भी महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के दो स्थलों पर अर्थात् बालिवध एवं रावण वध करने के अनन्तर, श्रीराम की अपनी शत्रुओं के प्रति शत्रुभाव छोड़ने का विवरण उपलब्ध करवाया है। राम ने मृत बालि की पत्नी एवं पुत्र को ढाँढ़स बँधाया एवं मृतक का सुरुचिपूर्ण ढंग से संस्कार करने का आदेश भी

---

१. शै. रा., ५/१-१४, एवं ५/२४।

२. क्रोधं भीममहं मोक्ष्ये ससैन्ये त्वयि रावण। श्व: काल्ये वज्रवान् वज्रं दानवेषिवव वासव: ॥
इति प्रतिसमादिष्टौ राक्षसौ शुकसारणौ। ज्येति प्रतिनन्द्यैनं राघवं धर्मवत्सलम् ॥
आगम्य नगरीं लंकामब्रूतां राक्षसधिपम्। विभीषणगृहीतौ तु वधार्थं राक्षसेश्वर ॥
दृष्ट्वा धर्मात्मना मुक्तौ रामेणामिततेजसा। एकस्थानगता यत्र चत्वार: पुरुषषभा: ॥
—वा. रा., युद्धकाण्ड, २५/२५-२८

३. इति प्रतिसमादिष्टौ राक्षसौ शुकसारणौ। हरिरूपधरो वीरौ प्रविष्टौ वानरं बलम् ॥
—वा. रा., युद्धकाण्ड, २५/९

४. शै. रा., ४/७, ८, १०।

दिया।[१] इस तरह रावण के अन्त्येष्टि संस्कार को उन्होंने सम्पन्न करवाया।[२] वाल्मीकि रामायण के इन्हीं सन्दर्भों के अनुसरण पर शैव रामायण में भी सहस्रकण्ठ की मृत्यु के पश्चात् राम ने उनके पुत्र को आश्वस्त करके मृतक (सहस्रकण्ठ) का संस्कार करने का आदेश देते हैं[३] एवं यह भी यहाँ वर्णन मिलता है कि राम की आज्ञा से भरत ने सहस्रकण्ठ के दुःखी स्त्रीजनों को धीरज भी बँधाया था[४] एवं पुष्कराक्ष के द्वारा सहस्रकण्ठ का अन्त्येष्टि संस्कार भी करवाया था।

भगवान राम की कृपावत्सलता का विवरण रामकथा से सम्बन्धित सम्पूर्ण काव्य साहित्य में वर्णित मिलता है। वाल्मीकि रामायण में आसन्न मृत्यु वाले बालि ने अपने पुत्र अंगद को राम की शरण में डाला था[५] एवं राम ने शरणागत अंगद को सहर्ष स्वीकार भी किया था तथा उसे बहुमान भी दिया था। शैव रामायण में भी वर्णन मिलता है कि सहस्रकण्ठ की मृत्यु के अनन्तर भयभीत सहस्रकण्ठ का पुत्र पुष्कराक्ष विभीषण के परामर्श से राम की शरण में आया था एवं राम ने शरण में आये हुए पुष्कराक्ष को अभयदान भी दिया था।[६] उपर्युक्त सम्पूर्ण विवरणों को आधार पर कहा जा सकता है कि शैव रामायण में वाल्मीकि रामायण का महनीय प्रभाव पड़ा है।

---

१. कुरु त्वमस्य सुग्रीव प्रेतकार्यमनन्तरम्। ताराङ्गदाभ्यां सहितो वालिनो दहनं प्रति॥
—वा. रा., किष्किन्धाकाण्ड, २५/१३

२. एषोऽहिताग्निश्च महातपाश्च वेदान्तगः कर्मसु चाग्रयशूरः।
एतस्य यत् प्रेतगतस्य कृत्यंतत्कर्तुमिच्छामि तव प्रसादात्॥
स तस्य वाक्यैः करुणैर्महात्मा सम्बोधितः साधु विभीषणेन।
आज्ञापयामास नरेन्द्रसूनुः स्वर्गीयमाधानमदीनसत्त्वः॥
मरणान्तानि वैराणि निवृत्तं नः प्रयोजनम्। क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष तथा तव॥
स ददौ पावंक तस्य विधियुक्तं विभीषणः। स्नात्वा चैवार्द्रवस्त्रेण तिलान् दर्भविमिश्रितान्॥
उदकेन च सम्मिश्रान् प्रदाय विधि पूर्वकम्। तः स्त्रियोऽनुनयामास सान्त्वयित्वा पुनः पुनः॥
—वा. रा., युद्धकाण्ड, १०९/२३, २४, २५

३. अस्यां पुर्यां चित्रवत्यां पुष्कराक्ष सुखं वस। कुरु तातस्य संस्कारं भयं मत्तोऽस्ति नो तव॥
—शै. रा., १०/११

४. तस्मिन्नतः पुरे धीमान् प्रविशन् भरतसतदा। दुःखितं स्त्रीजनं सर्वमाश्वास्य कृपया पुनः॥
—शै. रा., १०/२०

५. राघवस्य च ते कार्यं कर्त्तव्यमविशंकया। स्यादधर्मो ह्यकरणे त्वां च हिंस्यादमानितः॥
—वा. रा., किष्किन्धाकाण्ड, २२/१५
एषा वै नियतिः श्रेष्ठा यां गतो हरियूथपः। तदलं परितापेन प्राप्तकालमुपायताम्॥
—वा. रा., किष्किन्धाकाण्ड, २५/११

६. पतन्तं चरणद्वन्द्वे पुष्कराक्षं महाभुजः। समालक्ष्य ततो राम उत्तिष्ठेति वचोऽब्रवीत्॥
—शै. रा., १०/१०

(ख) शैवरामायण एवं अद्भुतरामायण में साम्य वैषम्य विवरण

कवि द्वारा शैवरामायण की कथावस्तु शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त हिमालय के वर्णन से प्रारम्भ होकर अन्त में राम सीता के रमा एवं विष्णु रूप में वैकुण्ठ में मिलने जैसे वृत्तान्त से समाप्त हो जाती है। अद्भुतरामायण एवं शैवरामायण में किञ्चित् साम्य परिलक्षित होता है। दोनों रामायणों में कथा का आरम्भ दशानन के मृत होने के अनन्तर होता है साथ ही दोनों में पुष्कर द्वीप के शासक सहस्रकण्ठ ही थे। परन्तु दोनों के कथानकों में वैषम्य अधिक मिलते हैं। यथा—शैवरामायण में सहस्रकण्ठ दिति कश्यप का पुत्र था जबकि अद्भुत रामायण में सहस्रकण्ठ कैकसी एवं विश्रवण के पुत्र थे। अद्भुत रामायण में वह रावण रूप में जबकि शैव रामायण में सहस्रकण्ठ राक्षस रूप में प्रथित था। अद्भुत रामायण में राम को मारने वाले सहस्रकण्ठ हैं, जबकि शैव रामायण में सहस्रकण्ठ को मारने वाले राम हैं। अद्भुत रामायण में घोरकाली शक्तिरूपा सीता सहस्रकण्ठ को मारती हैं जबकि शैव रामायण में सीता राम की सहधर्मिणी पत्नी ही हैं। अद्भुत रामायण में युद्ध का प्रयोजन राम के द्वारा राक्षसों का विनाश करना है, जबकि शैव रामायण में राम रावण (सहस्रकण्ठ) में युद्ध का कारण अश्वमेघ यज्ञ के अश्व का सहस्रकण्ठ द्वारा अपहरण है। उक्त साम्य वैषम्य प्रतिपादन से यह प्रतीत होता है कि शैव रामायण के पात्रों के चयन में अद्भुत रामायण ही स्रोत रहा होगा भले ही उनकी कथाओं में भिन्नता देखने को मिलती है।

(ग) शैवरामायण का वैशिष्ट्य निरूपण

शिव पार्वती संवाद रूप में प्राप्त, १२ अध्यायों में विभक्त शैवरामायण का प्रतिपाद्य विषय सहस्रकंठ पर राम की विजय का वर्णन है। शैवरामायण की यह कथा सम्पूर्ण रामकथाओं में विशिष्ट है एवं विविधताओं से युक्त भी है। इसकी कथा अन्यत्र किसी भी साहित्य में दिखाई नहीं पड़ती। रामायण का प्रथम वैशिष्ट्य राम और सहस्रकंठ के मध्य युद्ध का प्रतिपादन है; क्योंकि इन दोनों के बीच अश्वमेघ यज्ञ के अश्व के अपहरण को लेकर ही युद्ध हुआ था जो कि किसी भी रामकथा परक साहित्य में वर्णित नहीं मिलता। सर्वत्र यही वर्णन मिलता है कि राम ने सर्वत्र अपने प्रभुत्व स्थापन के लिए सहस्रकंठ से युद्ध किया

था। शैव रामायण का दूसरा वैशिष्ट्य सहस्त्रकंठ को मारने के प्रसंग में वर्णित मिलता है। सब जगह सहस्त्रकंठ का वध सीता द्वारा वर्णित मिलता है जबकि शैव रामायण में राम द्वारा सहस्त्रकंठ का वध वर्णित मिलता है। इसी आख्यान को राम विजय के रूप में यहाँ वर्णित किया गया है, जबकि सर्वत्र सहस्त्रकंठ के विनाश के लिए सीता की विजयकथा मिलती है। संभवत: उन आख्यानों में स्त्री विग्रह रूप में सीता का निदर्शन वर्णित मिलता है। शैवरामायण की कथावस्तु से यह भी प्रतीत होता है कि सहस्त्रकंठ पर राम की विजय से राम की दिव्यता, पूजनीयता एवं प्रतिष्ठा स्थापन करना कवि का मन्तव्य रहा होगा। यहाँ राक्षस विनाश के लिये रामावतार का लक्ष्य भी पूर्णता को प्राप्त होता दिखाई पड़ रहा है। इस तरह राक्षसी शक्तियों पर दिव्य शक्तियों की विजय शैवरामायण का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय दिखाई पड़ता है।

शैवरामायण का तृतीय वैशिष्ट्य यह है कि यहाँ सहस्त्रकंठ अपनी मृत्यु के अनन्तर हजार फन वाले शेषनाग के रूप में परिणित हो जाते हैं एवं विष्णु की शय्या बन जाते हैं। यह कथा शैव रामायण की ही उद्भावना है, अन्यत्र कहीं वर्णित नहीं मिलती। पद्मपुराण[१] एवं रघुवंश[२] के अनुसार लक्ष्मण ही शेषावतार माने जाते हैं। शेषनाग का किसी भी राक्षस के साथ सम्बन्ध वर्णन नहीं मिलता। सृष्टि के पूर्व में भी शेष अनन्त नाम एवं विष्णुसेन के रूप में प्रसिद्ध थे। विष्णु का रामावतार त्रेता युग में हुआ। राम के वीरतापूर्ण कार्यों के कारण विष्णु शय्यायुक्त हो गये ऐसा विवरण उचित प्रतीत नहीं होता। सम्भवत: शेषनाग के उद्भव के प्रसंग में यह किसी स्थान विशेष की लोककथा रही होगी।[३] इस प्रसंग में सहस्त्रकंठ नामक राक्षस के एवं शेषनाग के हजार फन आश्चर्य के हैं; क्योंकि यहाँ मुख और ग्रीवा की संख्या लोगों का ध्यान अवश्यमेव आकर्षित करती है।

शैवरामायण में जिस प्रकार सहस्त्रकंठ की परिणति शेषनाग में वर्णित मिलती है, उसी प्रकार हनुमान की परिणति चित्रांगशुक के रूप में मिलती है अन्यत्र कहीं भी हनुमान शुक रूप में दौत्य कर्म करते नहीं देखे जाते हैं। पक्षियों

---

१. पद्मपुराण, उत्तरखंड, २०/१२-४२।

२. अथेप्सितं भर्तुरूपस्थितोदयं सखीजनोद्वीक्षणकोमुदीमुखम्।
निदानमिक्ष्वाकुकुलस्य संततेः सदक्षिणा दौर्हदलक्षणं दधौ॥ —रघुवंश, ३/३

३. तथेति कामं प्रतिशुश्रुवान्रघोर्यथागतं मातलिसारथिर्ययौ।
नृपस्य नातिप्रमनाः सदोगृहं सुदक्षिणासूनुरपि न्यवर्तत्॥ —रघुवंश, ३/६७

का दौत्य कर्म वर्णन परवर्ती साहित्य में यथा नैषधीयचरितम् में हंस के दूत बनने एवं हिन्दी भाषा में जायसी के पद्मावती में हीरामनशुक ही दौत्य कर्म करते देखे जाते हैं। शैव रामायण की यह कथा रामायण की परवर्ती ही दिखाई पड़ती है। इससे पहले महर्षि वाल्मीकि रामायण, वासिष्ठ रामायण, अगस्त्य रामायण, प्रसिद्ध हो चुकी थीं।[१] जबकि शैव रामायण में वर्णित रामकथा रामविजय के नाम से विश्रुत हुई ऐसा स्वयं शैव रामायण में वर्णित मिलता है।[२]

शैव रामायण का चतुर्थ वैशिष्ट्य यह है कि शैव रामायण का प्रारम्भ एवं समापन अश्वमेध यज्ञ से होता है वैसे तो राम के अश्वमेध यज्ञ के विवरण विभिन्न ग्रन्थों में वर्णित मिलते हैं[३], किन्तु शैव रामायण के कथानक सदृश इसके यज्ञ प्रकरण अन्य ग्रन्थों में भिन्न रूप में ही वर्णित मिलते हैं। शैव रामायण के अनुसार राम ने सैकड़ों अश्वमेध यज्ञ किये, उनमें निन्यानवें यज्ञों में सीता स्वयं उपस्थित रही जबकि सौवें अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर राम ने सीता को वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ दिया था एवं उनके स्थान पर सोने की उनकी प्रतिमा बनाकर यज्ञ सम्पन्न किया था।[४] प्राय: सम्पूर्ण रामकथा परक ग्रन्थों में सीता परित्याग की घटना अश्वमेध यज्ञ के पूर्व ही वर्णित मिलती है। शैव रामायण के अनुसार बनवास से सीता राम के अयोध्या लौटने के बहुत समय बाद सौवें अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर सीता का परित्याग तर्क संगत प्रतीत नहीं होता, लेकिन हो सकता है कि ग्रन्थकार ने परम्परा के निर्वाह के लिए ही सीता परित्याग का वर्णन किया हो।

भगवान राम के द्वारा किये गये सौ अश्वमेध यज्ञों की संख्या आनन्द रामायण के अनन्तर शैव रामायण में ही वर्णित मिलती है जबकि वाल्मीकि रामायण में राम के द्वारा किये गये दस अश्वमेधों का वर्णन ही प्राप्त मिलता है। इस प्रकार हजार वर्ष तक अयोध्या का पालन करने वाले राम ने लव-कुश का

---

१. दशग्रीवस्य हननं सपुत्रं सहबान्धवम्। कृतं रामेण च पुरा श्रुतं वाल्मीकिनोदितम्॥
रामयणेऽद्भुते जातो रावणस्य वधोधम्। एवं विधाश्च बहवो राक्षसा: पिशिताशना:॥
—शै. रा., ६/१६, १९

२. शै. रा., १/३-४, १२/३१-३३।

३. वाल्मीकि उत्तर ३७-४०, आनन्दरामायण, यागकाण्ड अध्यात्मरामायण उत्तर ६-७ सर्ग, अग्नि-पुराण १०/३३, पद्मपुराण, पातालखण्ड, रामाश्वमेधीयम्, जैमिनीयाश्वमेघ ३१ आदि।

४. शै रा., १२/२५-२६।

अभिषेक करके अपने भाईयों एवं पुरवासियों के साथ वैकुण्ठ को प्रस्थान किया। सीता उनके सामने ही धरातल में प्रवेश करके वैकुण्ठ पहुँची। वैकुण्ठ में उन दोनों के सम्मेलन के साथ शैव रामायण की सुखान्त परिणति कराना भी कवि की लेखनी एवं उनकी नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा का परिचायक है।

(घ) शैवरामायण की प्राचीनता का निर्धारण

शैव रामायण के अन्तिम अध्याय में ग्रन्थ की पुष्पिका में "१२ संमत् १९५६ फाल्गुन शुद्ध चतुर्दश्यां लिखितम्" से विदित होता है कि यह ग्रन्थ उन्नीसवीं शताब्दी में अवस्थित किसी विद्वान् की रचना है। जो वास्तव में परम्परा से प्राप्त राम कथा सदृश देव दानवों की संघर्ष गाथा है। यह संग्राम तो सृष्टिकाल के प्रारम्भ से ही प्रचलित दिखता है। देवताओं में प्राय: विष्णु के अवतार का परम प्रयोजन साधुओं (सज्जन) की रक्षा एवं पापियों का विनाश ही रहा है। सद्-असद् शक्तियों के विरोध की अविछिन्न परम्परा समय-समय पर देवों के अवतार से नियंत्रित होती रही है, किन्तु इसका समूल विनाश सम्भव नहीं था अतएव प्रत्येक युग में पृथिवी में देवताओं के अवतार की आवश्यकता हमेशा से रही है। देवासुर संग्राम का वर्णन वेदों एवं पुराणों में बहुलता से दिखाई पड़ता है। राक्षस मनुष्यों के प्रबल एवं निकटस्थ शत्रु रहे हैं। अकाल, मृत्यु, रोग, दु:ख एवं हानियाँ सभी राक्षसों के प्रभाव से प्राचीनकाल में होती थीं। मनुष्यों की रक्षा सदैव अपेक्षित रही है।[१] उस समय यातु-धान पद राक्षस का पर्याय माना जाता था।[२] जिसका अर्थ है यातना या पीड़ा देने वाले व्यक्ति।[३] स्वभाव से राक्षस क्रूर[४] एवं भयंकर प्रवृत्ति वाले, अतृप्त[५], अकल्याणकारी[६], देवविरोधी[७], पाप के प्रशंसक[८] एवं यज्ञ विरोधी होते थे।[९]

१. निरुक्त ४/१८, वाचस्पत्यम् पृ. ४७८७, शब्दकल्पद्रुम पृ. ७९ आदि।
२. ऋग्वेद १/३५/१०, वाजसनेयी ११/४९, ३४/३६, अमरकोश १/१/५९, हलायुधकोश / १/७३१।
३. ऋग्वेद ८/६०/२० सायणभाष्य।
४. ऋग्वेद ७/१०४/२।
५. अथर्ववेद २/२४/२।
६. ऋग्वेद ७/१०४/९।
७. ऋग्वेद, १/२७/३, ३७/३।
८. ७/१०४/२, ४, १४।
९. ऋग्वेद १०/८७/८ तैत्तिरीय संहिता ६/१/८/३, वाज. १/१९ आदि।

राक्षसों की आकृति एवं उनके प्रकृति का स्पष्ट वर्णन रामायण में वर्णित मिलता है। राम-कथाओं में राक्षस प्राय: रावण संज्ञक थे। इस रूप में बहुत से रावण उत्पन्न हुए जिनमें दशानन को छोड़कर अन्य राक्षसों का संहार सीता द्वारा वर्णित मिलता है। शैव रामायण में यही दशानन सहस्त्रकंठ के रूप में वर्णित मिलता है। सम्भवत: भक्ति के अतिशय के कारण रावणों का संहार सीता राम की आदि शक्ति द्वारा किया गया वर्णित मिलता है। बहुकण्ठत्त्व एवं बहुशीर्षत्व के कारण रावण आकृति वैशिष्ट्य में भी प्रमुख था। सर्वाधिक शीर्षों से युक्त रावण एक लाख शीर्षों वाला था जिसकी हन्ता काली रूपा सीता थीं।[१] गुणभद्र रचित उत्तरपुराण में रावण की परम्परा इस प्रकार वर्णित है। सर्वप्रथम सहस्त्रगीव, शतग्रीव, पंचाशतग्रीव, पुलस्त्य एवं दशग्रीव। संगदास ने इनका क्रम बलि, सहस्त्रगीव पंचाशतग्रीव, शतकग्रीव, पंचाशतग्रीव, विंशतग्रीव एवं दशग्रीव के रूप में किया है, जिसमें दशग्रीव विंशतग्रीव के पुत्र थे।[२]

शैव रामायण में बहुत से रावणों का वर्णन मिलता है जैसे दशग्रीव[३] पाताल लंका के शतकग्रीव[४], शाकद्वीप के शतकन्धर[५] एवं अद्भुत रामायण में वर्णित अन्य रावण भी वर्णित मिलते हैं।[६] पुष्कर द्वीप के शासक काश्यप के पुत्र संहस्त्रकंठ शैव रामायण के प्रतिनायक हैं। रावणों के बहुशीर्षत्व होने के कारण में उनके पराक्रम के साथ सृष्टि का विकास भी प्रच्छन्न दिखता है। सृष्टि के आरम्भ काल में पृथ्वी में पिशित (मांसभक्षी) एवं भयंकर जीवों का बाहुल्य था। अस्तित्व रक्षा के लिए मनुष्यों में और उनमें निरन्तर संघर्ष भी हुआ। आज भी मत्स्य न्याय लोक जीवन में अवस्थित दिखता है। वेदोक्त मांस भक्षी क्रव्याद[७] थे, जबकि रामायण के अनुसार यह राक्षस थे जो तपस्या करते हुए ऋषियों की हत्या कर उन्हें खा डालते थे। धीरे-धीरे मनुष्यों ने उन पर विजय प्राप्त कर ली एवं उनको कमजोर करके स्वयं ही शक्तिवान हो गये। रामावतार रूप में यह संघर्ष अपने चरम उत्कर्ष को प्राप्त हुआ दिखता है।[८] क्षीणबल होने के कारण

१. विलंकारामायण, उत्तरखण्ड, कामिलबुल्के पृ. ६२४।
२. कामिलबुल्के, रामकथा, पृ. २४९।
३. शै. रा. ६/१६।
४. शै. रा. ६/१७।
५. शै. रा. ६/१८।
६. शै. रा. ६/१९।
७. ऋग्वेद ७/१०४/२।
८. वाल्मीकि रामायण, अरण्यकाण्ड ६/१५-२०, २९/१२ आदि।

से रावणों की शीर्ष संख्या में कमी आई; क्योंकि पहले के राक्षस १ लाख सिर वाले थे। कालक्रम से वह हजार, पांच सौ, सौ, पचास, बीस एवं अन्ततोगत्वा १० सिर वाले हो गये जिसमें रावणों की परम्परा में दशानन अन्तिम थे। उसी के साथ राक्षसी शक्ति का विनाश हो गया एवं युद्ध में बचे हुए राक्षसों ने आर्यों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया।

सृष्टि के विकास में जीवों की शक्तिमत्ता एवं उनकी अनादिकालता अन्ततोगत्वा पुराणों में वर्णित दशावतार प्रसंग में देखी जा सकती है। सृष्टि के प्रथम चरण में जलचरावतार मत्स्यावतार हुआ। फिर जल एवं स्थल दोनों में समान गति वाले कूर्म का अवतार हुआ। अनन्तर प्रथम स्थल जीव रूप में विष्णु का वराह अवतार हुआ फिर मनुष्य एवं पशु मिश्रित नृसिंह अवतार अनन्तर में प्रथम मानव अवतार रूप में वामन अवतार हुआ। फिर पूर्ण विकसित बलवान मानव अवतारों में परशुराम, राम एवं बलराम का अवतार हुआ। अनन्तर करुणावतार रूप में बुद्ध का अवतार हुआ।[१] फिर देव विरोधी शक्तियों के क्रूर भावों का अभ्युदय हुआ। उनके दमन के लिए कलयुग में कल्कि का अवतार हुआ। सृष्टि विकास की यह प्रक्रिया दीर्घकाल में सम्पन्न हुई जिसमें सतयुग, द्वापर, त्रेता एवं कलयुग चार युगों का कालक्रम समाहित मिलता है, जिसमें आज हम कलियुग के प्रथम चरण में जीवन धारित किये हुए हैं।

(ङ) शैव रामायण में प्राप्त रसों एवं रीतियों का विवरण

किसी भी काव्य में रस एवं रीति तत्त्वों की उपस्थिति स्वाभाविक होती है। यदि शैव रामायण में प्राप्त रसों की बात की जाये तो इसका मुख्य एवं अंगी रस वीर रस है, लेकिन शैव रामायण की कथावस्तु में वीर रस के साथ-साथ करुण, रौद्र, भयानक, वीभत्स एवं भक्ति रस के विवरण देखने को मिलते हैं। शैव रामायण में प्राप्त रसों का विवरण अधोलिखित रूप में किया जा सकता है।

(अ) करुण रस—इष्टनाश एवं अनिष्ट की प्राप्ति से उत्पन्न होने वाला रस करुण रस कहा जाता है। इसका स्थाय भाव शोक है।[२] करुण रस का वर्ण

१. बलदेव उपाध्याय, पुराणविमर्श, पृ. १७७-१७८।

२. इष्टनाशादनिष्टाप्तेः करुणाख्यो रसोभवेत्। धीरैः कपोतवर्णोऽयं कथितो यमदैवतः॥

—साहित्यदर्पण, ३/२२२

कपोत है तथा देवता यमराज हैं। इसकी उत्पत्ति शोक, क्लेश, इष्ट जन विप्रयोग, विभवनाश, बंधन, उपद्रव, उपघात आदि विभावों द्वारा होती है। करुण का आलंबन है—मृतव्यक्ति, कोई सम्बन्धी या दीन-हीन अवस्था प्राप्त कोई व्यक्ति। करुण रस का उद्दीपन है—मृतक व्यक्ति का दाहकर्म, उसका गुण-श्रवण एवं उसकी वस्तुओं को देखना, रोना, कल्पना आदि। शैव रामायण में करुण रस का प्रसंग दसवें अध्याय में उस समय देखने को मिलता है जब राम द्वारा सहस्त्रग्रीव का वध कर दिया जाता है एवं राम के आदेश से भरत चित्रपुरी में सहस्त्रग्रीव के पुत्र पुष्कर का राज्याभिषेक करने जाते हैं और वहाँ चित्रपुरी में प्रवेश करते ही वह देखते हैं कि सहस्त्रग्रीव की पटरानियाँ अत्यन्त दुःखी हैं अतएव भरत उन्हें धीरज बंधाते एवं आश्वासन भी देते हैं।[१]

(ब) रौद्र रस—शत्रुकृत अपकार, मानभंग, गुरुजनों की निन्दा, शत्रु की चेष्टा आदि के कारण रौद्ररस की उत्पत्ति होती है। क्रोध का पूर्णतः प्रस्फुटन होने पर रौद्र रस होता है।[२] इसका स्थायी भाव क्रोध है। रौद्ररस का वर्ण लाल है, देवता रुद्र है, शत्रु इसका आलम्बन है और उसकी चेष्टाएँ उद्दीपन हैं। आचार्य भरत ने रौद्र रस के निम्नलिखित अनुभव स्वीकार किये हैं। यथा—

अथरौद्रोनामक्रोधस्थायिभावात्मको ।
रक्षोदानवोद्धतमनुष्य प्रकृत्तिः संग्रामहेतुकः ।।[३]

शैव रामायण के पाँचवें और सातवें अध्याय में रौद्ररस के सन्दर्भ देखने को मिलते है। पाँचवें अध्याय में सहस्त्रकण्ठ के आदेश से जब हनुमान को पकड़ने राक्षसगण जाते हैं तो हनुमान क्रोध में आकर सहस्त्रकण्ठ पर आक्रमण कर देते हैं एवं उसके राजकुमुट एवं अन्य अलंकरणों को बिखेर देते हैं। साथ ही सभागार का स्तम्भ उखाड़कर उसे मारते हैं और सहस्त्रकण्ठ के सेनापति और लोहिताक्ष (रक्ताक्ष) के आने पर मुद्गर, परिघ, तीक्ष्ण, शूल, कुंत, तलवार आदि वाणों से हनुमान के ऊपर आक्रमण राक्षसगण कर बैठते हैं।[४] इसी प्रकार सप्तम

---

१. शै. रा., १०/१२-२०।

२. रौद्रःक्रोधस्थायिभावोरक्तरूद्राधिदैवतः। आलम्बनमरिस्तत्र तच्छेष्टोद्दीपनं मतम्॥
—साहित्यदर्पण, ३/२२७

३. नाट्यशास्त्र, ६/६४।

४. शै. रा., ५/४-७।

अध्याय में राम सहस्रकण्ठ के युद्ध अवसर पर लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न के सहस्रकण्ठ के युद्ध करने पर रौद्र रस की अन्विति देखने को मिलती है; क्योंकि युद्ध में कोई किसी को पैरों से मारता है तो कोई हजारों बाण छोड़कर अनेक योद्धाओं को घायल करता है जैसा कि शैव रामायण के वर्णन से विदित होता है कि सहस्रगीव द्वारा छोड़े गये बाणों से सुग्रीव, अंगद, नल एवं नील सभी घायल हो गये थे। यह सहस्रकण्ठ के रौद्र रूप का कार्य था।[१]

(स) वीर रस—प्रताप विनय, अध्यवसाय, धैर्य, हर्ष, विस्मय, विक्रम आदि विभावों से उत्साह स्थायी के परिपक्व होने पर वीर रस उत्पन्न होता है। यथा—

उत्तमप्रकृत्तिवीर उत्साहस्थायिभावकः।
महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः।।

वीर रस का स्थायी भाव उत्साह को माना जाता है। शैव रामायण का अंगी एवं प्रधान रस वीर रस है; क्योंकि इसकी कथावस्तु में सर्वत्र योद्धाओं द्वारा वीरता की बात ही प्रतिध्वनित दिखती है। वीर रस के उदाहरण शैव रामायण के प्रायः प्रत्येक सर्ग में विद्यमान हैं परन्तु प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ एवं पञ्चम अध्याय में इसके विवरण प्रभूत मात्रा में दिखाई पड़ते हैं। प्रथम सर्ग में राम जब अश्वमेघ यज्ञ के अश्व को छोड़ते हैं तो उसके ललाट पट्ट पर जो पत्र लिखा जाता है, उसमें वीरता की बातें ही वर्णित मिलती हैं।[२]

द्वितीय सर्ग में राम के अश्वमेघ यज्ञ के अश्व को जब सहस्रकण्ठ के सैनिक देखते हैं तो सहस्रकण्ठ के आदेश पर वह उसे रक्ताक्ष के सेनापतित्व में भरत से उसे अपहरण कर ले जाते हैं। उस प्रसंग में भी वीर रस की उत्पत्ति जान पड़ती है।[३] अनन्तर जब यह सूचना अयोध्या पहुँचती है तब राम को कहे गये बृहस्पति के कथनों में भी वीररस की प्राप्ति होती है।[४]

---

१. शै. रा., ७/११-१५।
२. विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य, शै. रा. १/१६-२०।
३. विस्तृत विवरण हेतु द्रष्टवय, शै. रा. २/५-७।
४. अहं कथं गमिष्यामि जित्वा नेष्यामि तं कथम्। तच्छुत्वा भरतेनोक्तं पुनः त्राह बृहस्पतिः।।
हे राजन् शृणु में वाक्यमसाध्यं नास्ति ते क्वचित्। गन्तुं तत्पुष्करं द्वीपं सयत्नो भव साम्प्रतम्।।
रामेण संयुतस्तत्र गत्वा चित्रवतीं पुरीम्। आगमिष्यसि तं जित्वा गृहीत्वा तुरगं पुनः।।
—शै. रा. २/२२-२४

चतुर्थ अध्याय में हनुमान के सहस्रकण्ठ को दी गई राम की चेतावनी के सन्दर्भ में भी वीररस की उपस्थिति दिखायी पड़ती है।[१] पाँचवें अध्याय में राम द्वारा अपनी सेना को सुसज्जित करने के प्रसंग में[२], एवं नौवें अध्याय में राम एवं सहस्रकण्ठ के युद्ध वर्णन में भी वीर रस के प्रभूत वर्णन शैव रामायण में उपलब्ध मिलते हैं।[३]

(द) भयानक रस—भयानक रस का स्थायी भाव भय है। देवता काल, वर्ण कृष्ण और इसके आश्रयपात्र स्त्री तथा नीच पुरुष आदि होते हैं। जिससे भय उत्पन्न हो वह (सिंहादि) इसमें 'आलम्बन' और उसकी चेष्टायें 'उद्दीपन' मानी जाती हैं। यथा—

भयानका भयस्थायिभावः कालाधिदैवतः।
स्त्रीनीचप्रकृतिः कृष्णे मतस्तत्त्वविशारदैः।।[४]

शैव रामायण में भयानक रस का सन्दर्भ इसमें वर्णित युद्ध विवरण प्रसंगों में विशेषकर पंचम एवं षष्ठ अध्याय में द्रष्टव्य हैं। पंचम अध्याय में जब राम अपनी सेना को सहस्रकण्ठ पर आक्रमण करने का आदेश देते हैं तो सभी योद्धा पर्वत, वृक्ष, तीक्ष्ण बाण, पादप, प्रहार, मुष्टि प्रहार, किसी योद्धा के चरणों को पकड़कर उसे घुमाकर फेंकना या उसे दो भागों में चीर डालने के विवरण में भयानक रस की प्राप्ति दिखती है।[५] ठीक यही अन्विति सहस्रकंठ के युद्ध वर्णन के प्रसंग में भी द्रष्टव्य है जहाँ राक्षस विभिन्न प्रकार की आकृतियों का निर्माण करके राम की सेना पर आक्रमण करते हैं।[६]

(य) वीभत्स रस—वीभत्स रस का स्थायीभाव जुगुप्सा, वर्ण नील और देवता महाकाल है।[७] दुर्गन्धयुक्त मांस, रुधिर, चर्बी, आदि इसके आलम्बन होते

१. शै. रा., ४/२०-२२।
२. गच्छन्तु वानराः सर्वे युद्धाय यह राक्षसैः। इत्युक्तास्ते कपिश्रेष्ठाः प्राप्नुयुस्तत्पुरीं ततः॥
—शै. रा., ५/१०
३. शै. रा., ९/५-८।
४. सा. द. ३/२३५।
५. विस्तृत विवरण हेत द्रष्टव्य—शै. रा. ५/१५-२४।
६. रणभूमिं विहायाशु गतोड्डीय क्षणात्ततः। उड्डीयोड्डीय संगृह्य विमानानि तदासुरः॥
नाशित (।:) (ते) न रामेण तस्मात् त्वं संगरंत्यज। यज्ञीयाश्व तस्य देहि यदि जीवितुमिच्छसि॥
—शै. रा. ६/२०
७. जुगुप्सास्थायिभावस्तु वीभत्सः कथ्यते रसः। नीलवर्णो महाकालदैवतोऽयमुदाहृतः॥
—सा. द. ३/२३९

हैं और उन्हीं में कीड़े पड़ जाना आदि उद्दीपन होता है। वीभत्स रस के प्रसंग शैव रामायण के छठे, सातवें एवं नवम अध्याय में युद्ध वर्णन प्रसंग में देखने को मिलते हैं। छठे अध्याय में उस समय वीभत्स रस की प्राप्ति देखने को मिलती है जब सहस्त्रग्रीव युद्ध में जाने पर अपने हाथ फैलाकर अनेक बदंरों को निगले जा रहा था एवं उसके द्वारा निगले गये वानर उसके नाक एवं कानों के छेद से पुनः बाहर निकल आ रहे थे।[१] सप्तम अध्याय में सहस्त्रकंठ द्वारा राम की सम्पूर्ण सेना के भक्षण करन के प्रसंग में[२] एवं भरत शत्रुघ्न एवं लक्ष्मण से सहस्त्रकंठ के युद्ध वर्णन के प्रसंग में भी वीभत्स रस की अवस्थिति देखी जा सकती है।[३] नवम अध्याय में राम एवं सहस्त्रकण्ठ के युद्ध वर्णन प्रसंग में राम द्वारा सहस्त्रकण्ठ की भुजाओं, एवं सिरों को काटने तथा उसे पकड़ करके पटकने जैसे विवरण में वीभत्स रस की उपस्थिति देखने को मिलती है।[४]

(र) भक्ति रस—सर्वप्रथम संस्कृत साहित्य में इस रस की उपस्थिति आचार्य रूपगोस्वामी ने अपने ग्रन्थ भक्तिरसामृत सिन्धु एवं उज्ज्वलनीलमणि में स्वीकार की। इस रस में भगवान के प्रति प्रेम स्थायित्व है, साधु संगति, पवित्र तीर्थ उद्दीपक, भगवान के सामने अपराध स्वीकार करना, क्षमा प्रार्थना-अनुभव मति, चिन्ता, वितर्क आदि संचारी भाव होते हैं। रूपगोस्वामी की मान्यतानुसार भगवदविषयक मधुर रतिभाव को भक्तजनों के हृदय से सतत वर्तमान होने से स्थायीभाव विभावादि से संकलित होकर भकित रस के रूप में सहृदयों के आस्वाद का विषय बन जाता है।[५] आचार्य जगन्नाथ अपने ग्रन्थ रसगंगाधर में तो यह मानते हैं कि रस नौ ही होते हैं। ऐसा कहना ठीक नहीं; क्योंकि भक्तों के द्वारा अनुभव होने वाला भक्तिरस भी स्पष्ट रूप से एक रस है, एवं भगवदनुरागरूपा

---

१. उल्लंघ्य सप्तप्राकारान् योजनानां शतोन्नतान्।
हस्तान् प्रसार्य संगृह्य सुग्रीवादीनभक्षयत्॥
वदनेषु प्रविश्यैते कर्णेभ्यः कपिकुञ्जराः।
नासिकाभ्यश्च निर्गत्य रामसन्निधिमाययुः॥
—शै. रा. ६/५, ६

२. शै. रा. ७/१-३।

३. विस्तृत विवरण हेतु द्रष्टव्य—शै. रा., ७/१७-२६।

४. शै. रा., ९/१-३।

५. विस्तृत विवरण हेतु द्रष्टव्य—रस सि. नगेन्द्र, पृ. ३२३।

भक्ति इसमें स्थायिभाव है। अतः भक्तिरस भी एक स्वतन्त्र रस है, परन्तु वह यह भी मानते हैं कि भक्त की देवादिविषयक रति ही भक्ति है।[१]

शैव रामायण की कथावस्तु में भक्ति रस के सन्दर्भ भी देखने को मिलते हैं। यह तो सर्वमान्य तथ्य है कि विष्णु, राम, शंकर और कृष्ण में कोई अन्तर नहीं है; क्योंकि जहाँ राम भगवान शंकर की वन्दना करते हैं, वहीं शंकर राम की वन्दना करते हैं एवं विष्णु राम की वंदना करते हैं और राम विष्णु की। इस तरह की परम्परा का पल्लवन विविध पुराणों की कथावस्तु में प्राप्त मिलता है। शैव रामायण भगवान शिव एवं पार्वती के संवाद रूप में प्राप्त रामकथा है। भगवान शंकर पार्वती से कहते हैं कि सहस्त्रग्रीव का विनाश करने वाले श्रीराम की नामस्मरण सम्पूर्ण पापों का शमन भी करता है। सभी सौभाग्यों को देने वाला, पुत्र पौत्रों का प्रदाता एवं चतुवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाला है।[२] शैव रामायण के तृतीय सर्ग में भी वर्णन मिलता है कि राम अपने राजभवन में आये हुए विविध ऋषियों की अर्चना एवं वन्दना करते हैं जो उनकी ऋषियों के प्रति भक्ति का ही परिचायक है। अतः इस प्रसंग में भक्ति रस की मीमांसा स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।[३]

शैव रामायण में भगवान विष्णु के कथन में भी भक्ति रस की संसूचना मिलती है जहाँ वह अपने उपासक सहस्त्रग्रीव को मुक्तिपद एवं विष्णु पदगामी बनने का वरदान देते हैं।[४] सहस्त्रकण्ठ के वध के अनन्तर विभीषण एवं पुष्कराक्ष द्वारा राम की वन्दना प्रसंग में[५] एवं वहीं पुष्कराक्ष द्वारा राम की अर्चना प्रसंग में भक्ति रस द्रष्टव्य है।[६] ग्यारहवें अध्याय में ईश्वर (शिव) और ब्रह्मा के संवाद प्रसंग में भी भक्ति रस की मीमांसा वर्णित मिलती है।[७]

---

१. अथकथमेतत् एव रसा....उच्यते....
भक्तेर्देवादि विषयरतित्वेन भावान्तर्गतता रसत्वानुपपत्ते। —रस गं, पृ. ४५

२. शै. रा., १/३-६।

३. विशेष विवरण हेतु द्रष्टव्य—शैव रामायण ३/६-१०।

४. शै. रामा., ३/१५-१७।

५. अभयं देहि चास्मै त्वं दीनानां परिपालकः। इति विभीषणवचो श्रुत्वा रामः प्रतापवान्॥
पतन्तं चरणद्वन्द्वे पुष्कराक्षं महाभुजः। समालक्ष्य ततो राम उत्तिष्ठेति वचोऽब्रवीत्॥
—शै. रा., १०/९-१०

६. शै. रा., १०/२४-२६।

७. विस्तृत विवरण हेतु द्रष्टव्य—शै. रा., ११/१-१६।

शिव पार्वती संवाद रूप में शैव रामायण के १२वें सर्ग में जब राम अश्वमेध का यज्ञ का आयोजन करते हैं तो उसमें भी भक्तिरस का स्रोत प्रवहमान दिखता है।[१] इस प्रकार शैव रामायण की कथावस्तु में करुण रस, रौद्र रस, भयानक रस, वीभत्स रस, वीर एवं भक्ति रस की मीमांसा वर्णित मिलती है, जिसमें कथावस्तु में प्राप्त प्रसंगानुसार यह माना जा सकता है कि शैव रामायण में वीर रस एवं भक्ति रस को ही प्रधानता मिली है।

शैव रामायण की कथावस्तु प्रवाहमय है। भाषा सरल एवं प्रभावपूर्ण विधा में सृजित है। चाहे युद्ध वर्णन की बात हो या पुष्कराक्ष के भक्ति निदर्शन की या राम के अश्वमेध यज्ञ निरूपण की, सर्वत्र लघुपद ही दर्शनीय हैं। भाव सहज ही में सहृदयों के मन को आकर्षित करने वाले हैं। अतएव यह कहा जा सकता है कि ग्रन्थकार ने वैदर्भी रीति का आश्रय लेकर शैवरामायण की कथावस्तु का निर्माण किया है; क्योंकि गौड़ी समासबहुला होती है एवं पांचाली तथा लाटी शैव रामायण की कथावस्तु के लिए उपयुक्त नहीं दिखती। यदि वैदर्भी रीति का विश्लेषण किया जाये तो साहित्यदर्पणकार ने वैदर्भी रीति का लक्षण देते हुए कहा है कि—

माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णै रचना ललितात्मिका।
आवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते।।[२]

अर्थात् माधुर्यव्यञ्जक पूर्वोक्त वर्णों के द्वारा की गई समासरहित अथवा छोटे-छोटे समासों से युक्त मनोहर रचना को वैदर्भी रीति कहते हैं। वैसे तो आचार्य भामह ने वैदर्भी और गौड़ी को गौण महत्त्व दिया था। उन्होंने इस प्रचलित धारणा का खंडन किया कि वैदर्भी मार्ग श्रेष्ठ है। वह वक्रोक्ति या अलंकार से रहित अपुष्टार्थ वैदर्भी को कोमल, प्रसन्न, ऋजु, पदावली से युक्त होने पर भी केवल गेय और श्रुतिपेशल (कर्ण-सुखद) मानते थे—उसका महत्व संगीतात्मक ही अंगीकार करते थे, उसे काव्यात्मक नहीं मानते थे। यथा—

अपुष्टार्थमवक्रोक्ति प्रसन्नमृजु कोमलम्।
भिन्नं गेयमिवेदं (वैदर्भ) तु केवलं श्रुतिपेशलम्।।[३]

---

१. विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य—शैव रामायण का १२/१-१३।
२. सा. द., ९/२।
३. काव्यालङ्कार, १/३४।

अलंकारयुक्त, ग्राम्यदोष से रहित, अर्थपुष्ट, औचित्यपूर्ण गौडीय की भी रचना करनी चाहिये। अलंकार आदि के युक्त होने पर इन दोनों में कोई भेद नहीं, दोनों ही श्रेष्ठ होती हैं, अलंकार के बिना (अन्यथा) वैदर्भ भी व्यर्थ है[१], परन्तु आगे वह यह भी मानते हैं कि अधिक अर्थपुष्ट और सदर्थयुक्त अन्य पदावली भी वैदर्भी रीति से उत्कृष्ट होती है।[२] भामह के इन दोनों श्लोकों से स्पष्ट है कि (१) उन दिनों वैदर्भी को श्रेष्ठ समझा जाता था। (२) कोमलकांत माधुर्यगुणयुक्त समासरहित पदावली को इतना महत्त्व प्राप्त था कि कोई विद्वान् तो अपेक्षाकृत अधिक अर्थपुष्ट और सदर्थयुक्त अन्य पदावली को भी वैदर्भ से निकृष्ट मानते थे। आचार्य भामह ने इसमें तीन गुण माने ओज, प्रसाद एवं माधुर्य जबकि आचार्य दण्डी ने इसमें १० गुणों का संगुम्फन किया। श्लेष, प्रसाद, समता माधुर्य, सुकुमारता, अर्थव्यक्ति, उदारता, ओज, कांति एवं समाधि[३] परन्तु आचार्य वामन ने कहा कि वैदर्भी रीति में समग्र गुण होते हैं[४] अर्थात् समग्र गुणों की स्फुट रूप इसमें विद्यमानता रहती है। इस रीति में सानुनासिक वर्ण, कोमल वर्ण तथा असमस्त पद प्रयुक्त होते हैं एवं इसका व्यवहार शृंगार, करुण एवं शान्त रसों में होता है। यह रीति दोषों की मात्रा से रहित समग्र गुणों से युक्त तथा वीणा के स्वरों के समान मधुर होती है। जैसा कि काव्यालंकार सूत्र में वर्णन भी मिलता है।[५]

आचार्य दण्डी वैदर्भी रीति को कुलांगना की संज्ञा से विभूषित करते हुए कहते हैं कि—

---

१. अलंकारवदग्राम्यम् अर्थ्य न्याय्यमनाकुलम्।
गौडीचमपि साधीयो वैदर्भमपिच नान्यथा॥ —काव्यालङ्कार १/३५

२. वैदर्भमन्यदस्तीति मन्यन्ते सुधियोऽपरे।
तदेव च किल ज्यायः सदर्थेमपि नापरम्॥ काव्यालङ्कार १/३

३. श्लेषः प्रसादः समतामाधुर्य सुकुमारता।
अर्थव्यक्तिरुदारत्वमोजः कान्तिसमाधयः॥
ति वैदर्भ्यमार्गस्य प्राणाः दश गुणा स्मृताः।
एषां विपर्ययो प्रायो दृश्यते गौडवर्त्मनि॥ —का. द., १/४१-४२

४. विदर्भादिषु दुष्टत्वात् तत्समाख्या। समग्रगुणा वैदर्भी॥ —का. सू. वृत्ति १/२/१०

५. अस्पृष्टाः दोषमात्राभिः समग्रगुणगुम्फिता। विपञ्चीस्वर सौभाग्य वैदर्भीरीतिरिष्यते॥
सति वक्तरि सत्यर्थे सति शब्दानुशासने। अस्ति तत्र विना येन परिस्रवति वाङ्मधु॥
—का. सू. वृत्ति, १/२/११

गौडीया गणिका तुल्या वैदर्भी च कुलाङ्गना ।
अनेन पौरस्त्यदाक्षिणात्यरूपेण मार्गा ।।

आचार्य भोज इस रीति में श्लेषादि गुणों का संगुम्फन मानते हैं । यथा—

तत्रसमासा निष्शेषश्लेषादिगुणगुम्फिता ।
विपञ्चीस्वर सौभाग्य वैदर्भी रीतिरिष्यते ।।[१]

काव्यप्रकाशकार मम्मट वैदर्भी रीति को प्रमुख रीति मानते हुए[२] निम्न-लिखित उदाहरण है दिया जो शृंगार रसोपेत है—

अनंगरंगप्रतिमं तदगं भंगीभिरंगीकृतमानतांगया ।
कुर्वन्ति यूनां सहसा यथैताः स्वान्तानि शान्तापरचिन्तनानि ।।[३]

(च) शैव रामायण में अन्वित छन्दों का अनुशीलन

शैव रामायण में प्राप्त यदि छन्दों का आकलन किया जाये तो सम्पूर्ण शैव रामायण अनुष्टुप छन्द से ही ओत-प्रोत दिखती है केवल दो स्थलों पर वंशस्थ एवं उपजाति छन्द के विवरण प्राप्त मिलते हैं ।

(१) अनुष्टुप् छन्द—अनुष्टुप् छन्द को श्लोक भी कहते हैं । छन्दोमञ्जरी में अनुष्टुप छन्द का लक्षण—

"पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तम द्विचतुर्थयोः ।।"
"षष्ठं गुरु विजानीयादेतत्पद्यस्य लक्षणम् ।।"[४]

रूप में वर्णित मिलता है, जबकि श्रुतबोध के अनुसार अनुष्टुप छन्द का प्रत्येक चरण आठ अक्षरों वाला होता है । इसके चारों चरणों में षष्ठ वर्ण गुरु तथा पंचम वर्ण लघु होता है । दूसरे तथा चौथे चरण में सप्तम वर्ण लघु और प्रथम तथा तृतीय चरण में सप्तम अक्षर गुरु रखा जाता है ।[५] शैव रामायण में अनुष्टुप् छन्द के अधिकांश उदाहरण द्रष्टव्य हैं[६]—

---

१. स. क., २/५३ ।
२. केषाचिदेता वैदर्भी प्रमखो रीतियो मतः । —का. प्र., ९/८७
३. का. प्र. अष्टम उल्लास उदाहरण ३४७ ।
४. छन्दोमञ्जरी ४/७ ।
५. श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्चमम् । द्विचतुष्पादयोर्ह्स्वंसप्तमंदीर्धमन्ययो ।। —श्रुतबोध १०
६. विद्याधरैरप्सरोभिः प्रमथैश्च विराजिते । रत्नसन्नद्धपीठे तु समासीनं तु शङ्करम् ।
दृष्ट्वा सा पर्वाती प्राह वचनं धर्मसम्मितम् ।। —शै. रा. १/२
ईश्वर उवाच—
अथ रामो रघुपतिर्यजने कृतधीर्मुदा । सीतया सहितः श्रीमानश्वमेधे महाक्रतौ । —शै. रा., १२/१

(२) वंशस्थ छन्द—वंशस्थ छन्द का लक्षण **"जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ"**[१] रूप में जहाँ वृत्तरत्नाकर में वर्णित मिलता है, वहीं छन्दोमञ्जरी के अनुसार जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा रगण आयें उसे वंशस्थ कहते हैं।[२]

शैव रामायण में प्राप्त वंशस्थ छन्द का उदाहरण पंचम अध्याय में वर्णित मिलता है। यथा—

तत परं राक्षसपुगवानां निशम्य नाशं कपिसैन्यमुख्यैः।
सहस्रकंठः प्रलयानली या जाज्वल्यमानः स रणाय निर्ययौ।।[३]

(३) उपजाति छन्द—वृत्तरत्नाकर के अनुसार जिस छन्द के दो चरण एक दूसरे के बाद बताये गये (इन्द्र व्रजा तथा उपेन्द्रवज्रा के) लक्षणों से युक्त हों, उसे उपजाति छन्द कहते हैं। छन्दोमञ्जरी में भी यही लक्षण मिलता है। यथा—

अनन्तरोदिलितलक्ष्म भाजौ पादो यदीयावुपजैतियस्ताः।[४]

शैव रामायण में उपजाति छन्द का लक्षण ६वें अध्याय में वर्णित मिलता है। यथा—

इति सहस्रकण्ठवचो निशम्य मुनयो विमला विचार्य मानसे।
न समर्था भवितव्यनिवारो कथनं विफलं च चास्मदीयानाम्।।[५]

(छ) शैव रामायण में उपलब्ध अलंकारों का विवरण

शैव रामायण की कथावस्तु में शब्दालंकार एवं अर्थालंकार दोनों को स्थान मिला हुआ है। शब्दालंकार के अन्तर्गत जहाँ अनुप्रास एवं श्लेष को ही कवि ने शैव रामायण की कथावस्तु में स्थान दिया है वहीं अर्थालङ्कारों के अन्तर्गत उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा एवं अतिशयोक्ति अलंकार को जगह मिली है।

(१) अनुप्रास अलंकार—जहाँ स्वरों की समानता हो या न हो परन्तु एक सरीखे अनेक व्यञ्जन जहाँ मिल जायें वहां अनुप्रास अलंकार होता है। आचार्य मम्मट **'वर्णसाम्यमनुप्रासः'** रूप में[६] अनुप्रास की परिभाषा देते हैं वहीं चन्द्रालोक में अनुप्रास की परिभाषा जयदेव देते हुए लिखते हैं—

---

१. वृत्तरत्नाकर, ३/४६।
२. वदन्ति वंशस्थबिलंजतौ जरौ। —छन्दो. २/४।
३. स्पष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य—शै. रा., ५/२६।
४. छन्दोमञ्जरी, २/३।
५. विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य—शै. रा. ६/२४।
६. का. प्र. सू., ९/१०३।

श्लोकस्यार्धे तवर्धेवचा वर्णावृत्तिर्यदि ध्रुवा ।
तदा मता मतिमतां स्फुटानुप्रासतासताम् ।।[१]

शैव रामायण के पञ्चम एवं दशम अध्याय में अनुप्रास अलंकार के प्रभूत उदाहरण देखने को मिलते हैं।[२]

इन उदाहरणों में प्रथम श्लोक में जहाँ 'भ' वर्ण की आवृत्ति बार-बार देखने को मिलती है वहीं द्वितीय या तृतीय उदाहरण में 'र' वर्ण की पुनः आवृत्ति देखने को मिलती है अतएव उपर्युक्त प्रसंग में अनुप्रास अलंकार का संदर्भ माना जा सकता है।

(२) **श्लेष अलंकार**—आचार्य मम्मट ने श्लेष अलंकार का लक्षण देते हुए लिखा है कि—**"वाच्यभेदेन भिन्ना यद्युगपदभाषणस्पृशः । श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसौ ।।"**[३] जबकि आचार्य विश्वनाथ ने **"श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधानेश्लेषे इष्यते ।"**[४] रूप में श्लेष का लक्षण दिया है अर्थात् श्लिष्ट पदों में अनेक अर्थों का अभिधान होने पर श्लेषालंकार होता है। शैव रामायण के पंचम अध्याय में श्लेष अलंकार की छठा देखने को मिलती है।[५]

उक्त प्रसंग में ज्वालामुख के दो अर्थ हैं एक ज्वालामुख नाम का राक्षस एवं द्वितीय अग्नि की ज्वाला से युक्त मुख वाला एवं रक्ताक्ष के दो अर्थ हैं एक सहस्त्रग्रीव के सेनापति का नाम, द्वितीय क्रोध के कारण लाल आंखों वाला।

(३) **उपमा अलंकार**—उपमा अलंकार का लक्षण काव्य प्रकाश के अनुसार **"साधर्म्यमुपमा भेदे"**[६] है जबकि साहित्य दर्पण में इसकी परिभाषा

---

१. च. लो., पृ. २०४।

२. गजो गवाक्षे गवयः शरभो नीलरम्भकौ। सुषेणजीववत्तारमैंदाद्विविदधूम्रकाः ।। —शै. रा., ५/४
सहस्त्रग्रीवपुत्रोऽयं विधेयस्तव किङ्करः। राम राघव राजेन्द्र शरणागतवत्सल ।। —शै. रा., १०/८
नानाकुसुमसञ्छन्नं प्रमदापुञ्जरञ्जितम्। राजमण्डलसन्दीप्तसौधराजिविराजितम् ।।—शै. रा.,१०/१९

३. का. प्र. सू., ९/११८।

४. सा. दा., १०/११।

५. आहवे वानराः सर्वे युद्धं चक्रुः परस्परम्। ज्वालामुखेन सुग्रीवो लोहितास्येन चांगदः ।।
राक्षसास्ते शरैस्तीक्ष्णैर्निर्जुघ्नुः कपिकुञ्जरान्। ज्वालामुखो ववर्षाजौ सुग्रीवे शरसन्ततिः ।।
तानन्तरिक्षे सुग्रीवः पादपैरच्छिनत् तदा। ज्वालामुखं च सुग्रीवश्चरणाभ्यामताडयत् ।।
तस्य पादप्रहारेण ममार स हि राक्षसः। रक्ताक्षो मारुतिं तत्र लोहितास्योऽगदं तदा ।।
तन्मुष्टिनैव निहतः सोऽपि देहममूमुचत। हनूमानपि रक्ताक्षं वालेनावेष्ट्य खेचरः ।।
—शै. रा., ५/१६, १८, १९, २०, २२

६. का. प्र. सू., १२४

''साम्यं वाच्यं वैधर्म्यम् वाक्यैक्य उपमाद्वयोः''[१] रूप में परिगणित मिलती है अर्थात् एक वाक्य में दो पदार्थों के वैधर्म्य रहित वाच्य सादृश्य को उपमा कहते हैं।

शैव रामायण में उपमा अलंकार के लक्षण पंचम[२] अष्टम[३] एवं नवम अध्याय में देखने को मिलते हैं। यथा नवम अध्याय में जब राम ने सहस्रग्रीव को मारने के लिये नारायण अस्त्र का संधान किया उस समय उपमा अलंकार की छटा दिखाई देती है। यथा—

नाराणास्त्रं सन्धाय कार्मुके मुमुचे तदा।
तदस्त्रं मन्त्रजुष्टं सत् ज्वलज्वा (ज्जवा) लानलोपमम्।।[४]

उपर्युक्त श्लोक में नारायण अस्त्र की उपमा जलती हुई ज्वाला से दी गई है अतएव यहाँ उपमा अलंकार है।

(४) रूपक अलंकार—आचार्य विश्वनाथ के मतानुसार निरपह्नव अर्थात् निषेधरहित विषय (उपमेय) में रूपित (अपह्नवभेदउपमान) के आरोप को रूपक अलंकार कहते हैं।[५] आचार्य मम्मट भी रूपक अलंकार का लक्षण **''तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः''**[६] रूप में करते हैं अर्थात् उपमेय और उपमान में जहाँ अभेद प्रकल्पित किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है। शैव रामायण के १२वें अध्याय में रूपक अलंकार का निरूपण वर्णित मिलता है। जहाँ अश्वमेध यज्ञ की समाप्ति के बाद राम और सीता विष्णु और रमा के रूप में वैकुण्ठ में मिलनोपरान्त वर्णित मिलते हैं। यथा—

पुनर्वैकुण्ठमासाद्य चिक्रीडे रमया सह।
वैदेहीरूप्या रामो विष्णुरूपेण सर्वदा।।[७]

उपर्युक्त विवरण में वैदेही (सीता) रूप में रमा एवं राम रूप में विष्णु का अभेद सम्बन्ध दिखाया गया है। अतएव यहाँ रूपक अलंकार है।

---

१. सा. द., १०-१४।
२. विशिष्ट विवण हेतु द्रष्टव्य, शै. रा., ५/१६, १७, १८, २१।
३. शै. रा., ८/१७-२०।
४. शै. रा., ९/९।
५. "रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे।" —सा. द. १०/२८।
६. का. प्र. सू., १३८।
७. शै. रा., १२/३०।

(५) उत्प्रेक्षा अलङ्कार—आचार्य विश्वनाथ अपने ग्रन्थ साहित्य दर्पण में उत्प्रेक्षा अलंकार को निम्न रूप में परिभाषित करते हैं। यथा—

"सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेनयत्।"

"भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।।"[१]

जबकि चन्द्रालोक में उत्प्रेक्षा का लक्षण इस प्रकार मिलता है।

सम्भावनास्यादुत्प्रेक्षावस्तुहेतुफलात्मना ।
उक्तानुक्तास्पदाद्यन्नसिद्धाऽसिद्धास्पदे परे।।[२]

शैव रामायण में उत्प्रेक्षा के उदाहरण चौथे और सातवें अध्याय में वर्णित मिलता है। चौथे अध्याय में जब हनुमान चित्रवर्ण शुक के रूप में सहस्रगीव की राजधानी चित्रवतीपुरी में प्रवेश करते हैं तो उनसे सहस्रगीव के सेनापति रक्ताक्ष ने जो पूछा उस प्रसंग में उत्प्रेक्षा अलंकार की छटा द्रष्टव्य होती है।[३]

उपर्युक्त प्रसंग में हनुमान के ऊपर इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण, वायु आदि देवताओं की सम्भावना करने के कारण यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(६) अतिशयोक्ति अलङ्कार—आचार्य मम्मट ने अपनी काव्यप्रकाश में[४] एवं आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में अतिशयोक्ति अलंकार को परिभाषित किया है। आचार्य विश्वनाथ अतिशयोक्ति अलंकार की परिभाषा देते हुए लिखते हैं कि **"सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते।।"**[५] अर्थात् अध्यवसाय के सिद्ध होने पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

शैव रामायण की कथावस्तु के अध्ययनोपरान्त यह कहा जा सकता है कि उपमा अलंकार के बाद शैव रामायण में अतिशयोक्ति अलंकार के विवरण द्वितीय अध्याय में चित्रवती के वर्णन प्रसंग में[६], छठे अध्याय में सहस्रगीव के युद्ध प्रस्थान हेतु की गई तैयारियों एवं उसके युद्ध वर्णन प्रसंग में[७], सातवें अध्याय

---

१. सा. द. १०-१४।

२. च. लो., पृ. १०४।

३. कस्माद्देशादागतोऽसि प्रेषितः केन साम्प्रतम्। इन्द्रेण हव्यवाहेन यमेन वरूणेन वा॥
वायुना नैर्ऋतेनाथ शूलिना धनदेन वा। कोऽसि त्वं बूहि तत्त्वेन दूतधर्मेण भो शुक॥
—शै. रा., ४/१२-१३

४. का. प्र., १०/१००।

५. सा. द., १०/४६।

६. शै. रा., २/१७-२०।

७. विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य शै. रा. ६/१-१०।

में सहस्रकण्ठ के पराक्रम वर्णन प्रसंग में[१] एवं उसके साथ राम की सेनाओं के युद्ध वर्णन प्रसंग में सर्वत्र अतिशयोक्ति अलंकार की छटा दिखाई पड़ती है जैसा कि ७वें अध्याय में उसके द्वारा छोड़े गये बाणों के प्रसंग में कवि का मानना है—

अर्बुदन्यर्बुदन्येव सन्धाय विशिखान्धनौ।
शिरोऽंगपादपर्यन्तं भेदयामास वानरान्।।[२]

उपर्युक्त श्लोक में सहस्रकंठ द्वारा एक साथ ही अपने धनुष में करोड़ों बाणों का संघात करना एवं उसके द्वारा वानरों का भेदन करना अतिशयोक्ति ही दिखता है। अतएव यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

(ज) शैव रामायण के प्रमुख पात्रों का ऐतिहासिक विवरण

शैव रामायण के प्रमुख पात्रों में राम और सहस्रकण्ठ ही प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। वैसे महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण के प्रमुख पात्रों में राम, सीता, रावण, जनक, मेघनाद, दशरथ आदि प्रमुख हैं। यदि राम और रावण (सहस्रकण्ठ) की ऐतिहासिकता का विवेचन किया जाए तो विविध प्रकार के तथ्य प्रकाश में आते हैं। यथा—राम विष्णु अवतार के रूप में भी प्रसिद्ध हैं तो राजा दशरथ एवं कौशल्या के पुत्र के रूप में भी। साथ ही वह मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहलाते हैं; क्योंकि राम ने लोकजीवन में मर्यादा के संरक्षण के लिए अपनी प्रिय पत्नी सीता को भी गर्भिणी अवस्था में परित्याग कर दिया था जबकि मान्यता यह है कि किसी भी गर्भिणी का पालन एवं संरक्षण करना धर्म एवं पुण्य का कार्य है। शैव रामायण के प्रमुख पात्र राम का विवरण ऋग्वेदादि ग्रन्थों में भी मिलने से इनकी प्राचीनता स्वतः स्पष्ट हो जाती है। शैव रामायण के नायक दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र राम हैं जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं। शैव रामायण में राम अयोध्या के नरेश रूप में वर्णित हैं एवं उनके जीवन चरित का उत्तरार्द्ध भाग इसमें वर्णित मिलता है। कुछ विद्वानों के मत में विष्णु के अंश राम विष्णु की अपेक्षा अत्यधिक शक्तिशाली प्रतीत होते हैं। विष्णु से प्राप्त वर की सहस्रग्रीव की मोक्षरूपणीवर प्राप्ति राम से होती है न कि विष्णु से। साथ ही वह राम के

---

१. शै. रा., ७/१-३।
२. शै. रा., ७/१८।

पराक्रम से ही शय्या को प्राप्त होते हैं। परम्परा के अनुसार विष्णु सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक शेष शय्यागत हैं एवं उनके अंशभूत राम विष्णु की अपेक्षा अधिक सामर्थ्यवान शैव रामायण में दिखाई पड़ते हैं।

शैव रामायण के दूसरे प्रमुख पात्र एवं प्रतिनायक सहस्रकंठ पुष्करद्वीप के राजा हैं। वह दिति एवं कश्यप के पुत्र हैं साथ ही यज्ञ का विरोध करने वाले मायावी राक्षस भी। वह अभिमानी पराक्रमी युद्ध क्षेत्र में नारायण को भी प्राप्त करके युद्ध में परांगमुख नहीं होते हैं। रण पंडित सहस्रकण्ठ शस्त्र एवं मल्लयुद्ध दोनों में पारंगत हैं तथा पृथ्वी एवं आकाश दोनों में समभाव से युद्ध करने में समर्थ भी हैं।[१] मल्लयुद्ध में वह किसी को नहीं छोड़ता।[२] शैव रामायण में वर्णन मिलता है कि राम के साथ मल्लयुद्ध करने में वह मल्लयुद्ध के विभिन्न विधाओं में कुशल एवं दक्ष दिखाई पड़ता है।[३] राक्षस होने पर भी सहस्रकण्ठ मोक्ष का अभिलाषी एवं विष्णु भक्त रूप में शैव रामायण में चित्रित है। विष्णु ने स्वयं उसकी तपस्या से सन्तुष्ट होकर उसे मोक्ष रूप में विष्णु के चरणों में रहने का वरदान दिया था शायद इसीलिए मृत्यु के अनन्तर सहस्रकण्ठ शेषनाग की योनि में परिणत हो जाने रूप में शैव रामायण में वर्णित मिलता है[४] और भगवान विष्णु को शेषशायी तो कहते ही हैं।

---

१. अन्तरिक्षान्तरस्थौच्चौ मल्लयुद्धविशारदौ। परस्परोपमौ ख्यातौ समुद्राविव दुर्धरौ॥
—शै. रा. ८/१९

२. सहस्रकण्ठस्तान् छित्वा नाराचान् स्वायुधैश्च ह।
विभीषणं समालिंग्य वध्वो (बद्धवो) क्षिप्य करैर्भुवि॥
—शै रा., ७/१२

३. वलयागामिनौ धीरौ नानागतिविशारदौ। कण्ठीरवनिभौ तूभावन्योन्यजनकांक्षिणौ॥
—शै. रा. ८/१७

४. शै. रा., ३/१८-२०

श्लोकानुक्रमणिका

१. अकरोद् हयमेधं ४-१६
२. अगस्त्यो रैव्यक: ३-७
३. अत्र किं तिष्ठसे ५-२
४. अत्रेत्य कार्यं ११-१९
५. अथोवाच सहस्रास्यो ५-१
६. अथरामो महातेजा ९-१
६. अथरामो रघुपति १२-१
८. अथागम पुष्करा ११-१५
९. अदृश्यमानस्तुरगं २-११
१०. अध्वययौंदा (द्गा) १२-२२
११. अनुज्ञात: ७-९
१२. अन्तरिक्षगते ७-६
१३. अन्तरिक्षान्तर ८-१९
१४. अन्नकूटैश्बहुभि: पर्वता १२-१५
१५. अब्रवीद् राक्षसं ८-११
१६. अभयं देहि १०-१९
१७. अयोध्यां सीतया ८-५
१८. अयोध्यापुर ३-२४
१९. अयोध्याधिपति: व्यूरो १-१७
२०. अर्धचन्द्रेणा ९-३
२१. अर्बुदन्यर्बुद ७-१८
२२. अवेहि त्वं ८-८
२३. अहं कथं २-२२
२४. अहं ते हृदयं ११-४
२५. अहं विष्णुश्च ११-१०
२६. अस्माभि: प्रार्थित: ११-१२
२७. अस्यापुर्या
२८. आञ्जनेयोऽस्मि ४-१८
२९. आदौतु प्रात: १२-६
३०. आनीयं तुरगं १०-१५
३१. आशिषं ते प्रयु० ९-१८
३२. आश्रावयेति मन्त्रेण १२-१२
३३. आहवे वानरा: ५-१६
३४. इति तद्वचनं ३-१७
३५. इति ते ह्य० ६-२१
३६. इति दैत्यवच: ७-२
३७. इति रामवच: श्रुत्वा १-१२
३८. इति सर्वेषु १२-२०
३९. इति सहस्रकण्ठो ६-२४
४०. इति स्तुता देव ११-११
४१. इतीरितस्त्वया ३-२०
४२. इत्याभाष्य ययौ २-२५
४३. इत्युक्त: स च ८-१३
४४. इत्युक्त्वा राक्षसा ५-३
४५. इत्युक्त्वा च ९-१५
४६. इत्युक्त्वा भरत १०-१२
४७. इत्युक्तोमारुति ४-१४
४८. इत्युक्तो स हि ३-१६
४९. इत्युदीर्य शरान् ७-१०
५०. उत्पाट्य स्तम्भमेकं ५-५
५१. उल्लंघ्य सप्तप्राका० ६-५
५२. एकं दश शतं ७-१७
५३. एकापराधे ४-२१
५४. एकावशेषित शिरा ९-५
५५. एतन्मया १२-३३
५६. एते चान्ये ५-१५
५७. एतस्मिन्नन्तरे ६-७
५८. एतेऽपि राक्षसा: ७-८

५९. एतेऽपि शत्रवे ६-११
६०. एवं बहुतिथेऽतीते १-९
६१. एवं विनिर्जित्य १०-२६
६२. एवं शतत्रय १२-१३
६३. एषां सामर्थ्यम० १-१९
६४. कलास्तवसुरेन्द्रा०
६५. कलिङ्ग यवना: शूरा १-१४
६६. कश्यपस्य सुतो ३-१३
६७. कस्माद्देशा ४-१२
६८. किं कर्तव्यमितो० ११-१८
६९. किमर्थं तप्यसे ३-१५
७०. कुले दशरथस्या० ३-१८
७१. कुम्भकर्णमहाकाय १-७
७२. कुक्षौत्त्वदीये ११-७
७३. कृताट्टहासावदन: ७-२९
७४. कृता विभीषण ९-१९
७५. कृत्वाऽथ ऋत्विग १२-२
७६. कैलाशशिखरेरम्ये १-१
७७. कौशल्या: कुमारो १-१८
७८. खेचर: कपि ५-४
७९. गच्छन्तु वानरा; ५-१०
८०. गच्छेदानीं बलै० ८-९
८१. गजोगवाक्ष ५-१४
८२. गत्वा तं पुष्पकरं ३-२३
८३. गत्वा तत्पुरत: ४-८
८४. चक्रे रामोऽस्य १२-२५
८५. चयनं गारुडं १२-८
८६. चारयामासदेशान् १-१३
८७. चित्रवर्णशुकं ४-१०
८८. चिक्षेप भूतले ६-१३
८९. चोदितो दैत्यराजे ३-२२
९०. चोला: केकयदेशीया: १-१५
९१. जहारसमरे ८-१६
९२. जाबालिर्जमदग्नि ३-८, १२-३
९३. जाबालेस्तु वच: ४-१
९४. जित्वात्रिलोकान् ३-१४
९५. तं मन्त्रिवर्ग १०-१४
९६. तत प्राकार ४-६
९७. तत: परं तु ७-११
९८. तत: परं ५-२६
९९. तत: पर निज ११-१४
१००. तत: सहस्रतनयो १०-३
१०१. ततो हृष्टा ९-१२
१०२. तद् बभूवोत्थिं ९-२२
१०३. तदालक्ष्मण ७-२०
१०४. तदाविभीषणं १०-५
१०५. तदा ह्यनर्थ ६-१४
१०६. तन्मुष्टिनैव निहत: ५-२२
१०७. तस्मिन् स ३-२१
१०८. तस्मिन्नन्त:पुर १०-२०
१०९. तस्य गात्र ७-२२
११०. तस्य तीक्ष्ण ७-२५
१११. तस्य पाद ५-२०
११२. त्वपुरे तव ४-१७
११३. त्वमेव परमं ११-२
११४. तानन्तरिक्षे ५-१९
११५. तारं दधिमुखं ७-१५
११६. तीक्ष्णदंष्ट्रोऽपि ५-२१
११७. तुरङ्गमस्य २-१५
११८. तेषारामद्भयं १-२०
११९. त्यक्त्वा राज्यं ८-२
१२०. दशग्रीवस्य ६-१६

१२१. दिक्षुसर्वासुगगने ११-३
१२२. दीक्षान्ते १२-२१
१२३. दुर्गमां देवता २-२०
१२४. द्वात्रिंशब्दारं २-१९
१२५. द्वीपान् तीर्त्वो ८-६
१२६. द्वेधा विभज्य ५-२४
१२७. द्वे भार्येकश्यपस्य २-१६
१२८. द्राक्षेक्षुर १२-१७
१२९. दृष्ट्वातत् ४-३
१३०. दृष्ट्वातस्यां ६-९
१३१. न जानेऽहं रघु २-१४
१३२. नमस्कृत्वा ५-८
१३३. नाना कुसुम १०-१९
१३४. नारायणास्त्र ९-९
१३५. नाशितः न रामेण ६-२०
१३६. निजघ्नुः राक्षसान् ८-२२
१३७. निजनामयशो १२-२९
१३८. निधाय तिलकं भाले २-७
१३९. नियुज्यभरतं १-११
१४०. निर्वर्त्य सर्वान् ४-२
१४१. निर्विकल्पो ११-९
१४२. नीलोऽपि तीक्ष्ण० ५-१७
१४३. नो चेत् प्राणान् ९-७
१४४. न्यवसत् ता ततो १२-१०
१४५. पट्टाभिषिक्तोराजन् १-८
१४६. पतन्तं चरण १०-१०
१४७. पताका ध्वज ६०३, १०-१८
१४८. परस्परमवो ९-१३
१४९. पश्चाद वर्ष सहस्र १२-२७
१५०. पादाभ्यां पट्टितो ७-१३
१५१. पुनर्वैकुण्ठमासाद्य १२-३०
१५२. पुष्पकं तत् समा० ११-२१
१५३. पुष्कराक्षं १०-२४
१५४. पुष्पके तान् ७-५
१५५. प्रणम्यपादयोस्त १०-४
१५६. प्रविश्य राजमार्गेण १०-१५
१५७. प्रविश्य हृदयं ९-१०
१५८. प्राकृतानि हता ८-७
१५९. प्रेषितः केन ४-११
१६०. विभीषणासुर ७-७
१६१. विभीषणोराक्षसै० ४-१९
१६२. विभीषणोऽपि रक्षोभिः ४-४४
१६३. ब्रह्मर्षयो मह० ६-८
१६४. ब्रह्माणं तपसोग्रेण २-१७
१६५. ब्रह्मादिभिः सुरैः ९-११
१६६. ब्राह्मणा क्षत्रियाः १२-१४
१६७. भगवन् सर्वधर्मज्ञ १-३
१६८. भक्षयिष्याभ्यहं ८-१०
१६९. भरतं सिन्धुतीरस्थं २-१३
१७०. भरतस्य च ७-१९
१७१. भरतो भ्रातृसहितो २-९
१७२. भवतां कृपया ९-१७
१७३. भ्रामयित्वा ५-२३
१७४. भरतोऽपि ययौ ३-१
१७५. भेरीमृदङ्ग० ६-४
१७६. मधुमासेसिते १-१०
१७७. मदीयं तुरगं ८-१२
१७८. मन्त्रिवर्येणधीरेण २-४
१७९. मयाविसृष्ट ३-११
१८०. मायाश्रयात्वा ११-८
१८१. मारीच्या साम्राज्य १२-१६
१८२. मुद्गरैः परिघै० ५-६

१८३. मेरुणादत्त ११-२३
१८४. मेरुर्निर्युत ७-२१
१८५. यथासूचि १२-१९
१८६. यथा हि १२-२३
१८७. यदा प्रभृति ९-१४
१८८. यज्ञीयाश्वगृहीत्वासौ २-८
१८९. यज्ञीयाश्वं न ९-६
१९०. युद्ध्यमानौ ८-१८
१९१. यूपाग्रे रज्जु १२-११
१९२. ये शृण्वन्ति १२-३२
१९३. रणभूमिं विहा० ६-१२
१९४. रत्नसिंहासने दिव्ये १०-२२
१९५. राजीवोत्पल २-२
१९६. रामचन्द्रस्य कृपा १०-६
१९७. रामचन्द्रेणनिहतो १०-१
१९८. रामचन्द्रोऽपि तान् ९-१६
१९९. रामचन्द्रो महाबाहु ४-२०
२००. रामबाणविनि० ९-११
२०१. रामस्य चरण ११-१६
२०२. रामस्यवचनं श्रुत्वा ३-१२
२०३. रामादयो मुनि १२-४
२०४. रामायणेऽद्भूते ६-१९
२०५. रामाज्ञां च ११-१७
२०६. रामेण संयुत २-२४
२०७. रामोनिशम्य ३-२
२०८. रामोदाशरथिः १-६
२०९. राक्षसकश्चिदागत्य २-२१
२१०. राक्षसास्ते शरै० ५-१८
२११. ललाटपट्टलिखितं १-१६
२१२. लोहिताक्ष भवान् २-६
२१३. वदने सु ६-६
२१४. वलयागामिनौ ८-१७
२१५. वस्त्रालंकारणे १२-९
२१६. वायुना नैर्ऋ० ४-१३
२१७. विदार्यमाणौ ९-८
२१८. विनाशी विग्रहो ६-२३
२१९. विमानेष्वपि ६-१०
२२०. विन्ध्याख्यं ९-२०
२२१. विद्याधरैरप्सरोभिः १-२
२२२. वीक्ष्य विस्मय ४-७
२२३. शक्तितोमर ८-१४
२२४. शतग्रीवस्य ६-१७
२२५. शरान् हस्त ७-१४
२२६. शाकद्वीप निवासी ६-१८
२२७. शात कुम्भ १०-१७
२२८. शालाश्च सरयूतीरे १२-५
२२९. शेषत्वं ते ३-१९
२३०. शोकेनमहता १०-२
२३१. श्रीरामविजयं १२-३१
२३२. शृंगारण्या ५-११
२३३. शृणुदवि प्रवक्ष्यामि १-४, ३-५, ११-१
२३४. शृणुप्रिये कथं ६-१
२३५. शृणु प्रिये ततो २-१
२३६. शृणुध्वं ऋषयः ६-२२
२३७. शृणुराक्षसा ६-१५
२३८. सन्धायकार्मुके २-१२
२३९. सन्धाय विविध ७-१६
२४०. सप्तद्वीपानतिक्रम्य ११-२२
२४१. सप्तर्षयो वासिष्ठा० ११-५
२४२. सभामण्डप ३-३
२४३. समवापपुरीं रम्या २-१८

२४४. समागतान् ३-८९
२४५. समालक्ष्य ७-२८
२४६. समुद्वीक्ष्य तदा ९-२
२४७. सर्वतीर्थोदके १०-२३
२४८. सर्वपापप्रशमनं १-५
२४९. सर्वेसाकं मुदा ११-२४
२५०. सर्वेदेवाः ८-२०
२५१. सराक्षसा तदा ७-२६
२५२. सविस्मयो ३-४
२५३. स सज्जंधनु ७-२७
२५४. सहस्रकण्ठदैत्येन्द्र ४-१५
२५५. सहस्रकण दैत्येन्द्र यं ४-२२
२५६. सहस्रकण्ठदैत्योऽपि ७-१
२५७. सहस्रकण्ठस्तान् ७-१२
२५८. सहस्रकण्ठः ७-२३, ९-४
२५९. सहस्रकण्ठानु ५-१२
२६०. सहस्रकण्ठो ४-९, ६-२
२६१. सहस्रकन्धरो ८-१
२६२. सहस्रग्रीव तनयं १०-७
२६३. सहस्रग्रीव पुत्रो १०-८
२६४. सहस्रग्रीव संस्कारं १०-१३,२१
२६५. सहस्र फणवान् ३-२५
२६६. सहस्रवाणौर्वि ७-२४
२६७. सारिकाकीर १०-१६
२६८. सिन्धुतीरं समु० २-३
२६९. सिन्धुरतीरमुपा २-५
२७०. सिंहनादं ५-१३
२७१. सिंहासनगतो ३-६
२७२. सीतयासह १२-२४
२७३. सीताप्रतिनिधि १२-२६
२७४. सुग्रीवपुरमाहूय ५-९
२७५. सुग्रीवसहितः ८-३
२७६. सुग्रीवस्य वचस् ११-२०
२७७. सुग्रीवो ह्यङ्गदो ८-२१
२७८. सोदरैःसहितो १२-२८
२७९. सौरं ब्राह्मं ८-१५
२८०. सौवर्णे राजते १२-१८
२८१. स्थावराः जङ्गमाः ११-६
२८२. स्थित्वासने ३-१०
२८३. स्वसैन्यंभक्षितं ७-४
२८४. स्वाहाकारवषटकारै १२-७
२८५. हतशेषाः ५-२५
२८६. हनुमानऽपि ५-७
२८७. हस्त्यस्वर ४-५
२८८. हेमकूटं २-१०
२८९. हे राजन् २-२३
२९०. क्षणेनसर्व ७-३
२९१. त्रैलोक्यवीरेण ७-३०
२९२. ज्ञात्वाजलनिधि ८-४

डा. राम बहादुर (शुक्ल)

जन्मस्थान	: ग्राम - ब्यूर, चित्रकुट (उ०प्र०)
जन्मतिथि	: ०१-०२-१९६७
पिता	: श्री शिवनाथ प्रसाद शुक्ल
माता	: स्व० विद्यावती शुक्ला
शिक्षा	: एम.ए. (संस्कृत, दर्शनशास्त्र), इलाहाबाद, विश्वविद्यालय, यू.जी.सी. (नेट) डी. फिल्, ज्योतिषाचार्य (फलित)
कार्य क्षेत्र	: उपाचार्य - संस्कृत विभाग जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू जम्मूतवी - १८०००६
सम्मान	: १. अभिनवगुप्त, अलंकरण - २००६ २. ज्योतिषशिरोमणि - २००५
शोध अनुभव	: २२ वर्ष से अधिक
अध्यापन अनुभव	: १८ वर्ष से अधिक
शोध निर्देशन	: एम. फिल् - ३३, पी.एच.डी. - १७
आयोजन सचिव	: राष्ट्रिय सेमिनार - ३, राष्ट्रिय वैदिक कार्यशाला - ०१
सेमिनार सहभागिता	: अन्तर्राष्ट्रीय - २७, राष्ट्रिय - ७७
संस्कृत कवि सम्मेलन	: २१
प्रकाशित ग्रन्थ	: १. नैषधीय चरितम् की शास्त्रीय मीमांसा २. शृंगार तिलकम्, हिन्दी एवं अंग्रेजी व्याख्या ३. श्रीरामगीता हिन्दी एवं अंग्रेजी व्याख्या ४. History of all India oriental conference in pipes line
दूरभाष	: ०१९१-२४३८०९९ (आवास) ०९४१९२३३०३४ (सचलभाष) ०१९१-२४५२९१७ (कार्यालय)
Email	: rambshukla@yahoo.co.in

मूल्य ₹ 150/-

प्रकाशक : शिव संस्कृत संस्थान, वाराणसी, मो० : 9450540135